पल्लवी प्रकाशन

अप्पन साती

Collection of Maithili Stories

जगदीश प्रसाद मण्डल

अप्पन साती

अप्पन साती

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

APPAN SAATEE (अप्पन साती)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

दाम : 250/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-93135-09-4

कथा-क्रम

विचारक प्रबलता

गाम-घरमे जहिना कोनो जोगाड़ी बाल-बोध बच्चा अपन मनकेँ एकठाम करैत माने एकाग्र करैत बाध-बोनसँ ओहन नब जनमित वा नब कलशित गाछक पात देखि नब बुझि अपन बाग-बगियामे रोपि सजबैए तहिना कुलानन्द भाय अपन बाग-बगियामे नब-नब चीज सजबैत जीवानन्द भाइकेँ मनक बगियामे रोपलैन। अखन धरिक जे साहित्यिक प्रवाह मैथिलीक अछि ओ समाजक प्रवाहसँ थोड़-थाड़ हटलो अछि आ थोड़-थार सटलो अछिए। अही धाराक प्रवाहमे कुलानन्द भाइक सम्बन्ध जीबानन्द भायसँ भेलैन। ओना, उमेरक हिसाबसँ दुनूमे पचीस बर्खक अन्तर छैन। अखन तकक जीवनमे, माने सम्बन्ध बनैसँ पहिने धरिक जे जीवन दुनू गोरेक अपन-अपन छेलैन तइमे, बुनियादी अन्तर छैन। ओना, जीवन माने बेवहारिक जीवनक संग वैचारिक जीवन सेहो होइए मुदा तइमे बाधा बीचमे घेरतो अछि आ नहियोँ घेरैए। ओ निर्भर करैए जीवनक गति-विधिपर।

जीवनक दू अवस्था बीचक दू जीवनक सम्बन्ध अछि। एक जीवन ओहन अछि जे जीवनक नीचमुँह ढालपर अछि आ दोसर जीवनक ऊपर मुँह चढ़ाइपर। समय अपना गतिये चलबे करत तँए फौतियो एबे करत आ भदबारि सेहो एबे करत। अखन धरिक जीवन, जीवानन्द भाइक जे पचपन-साइठक बीचक छेलैन, ओ माटिपर सँ माने सहीट जीवनपर सँ उठल जीवन छेलैन, तँए पहाड़ जकाँ धरतीसँ जुड़ल छेलैन जइमे दुर्घटना

वा खसै-पड़ैक डर कम छेलैन। तँए कहब जे ओतबे ऊपरमे जँ हवाइ-जहाजपर रहब तखन तँ खसै-पड़ैक सम्भावना नै रहैए से नहि, ओइ अपेक्षा बेसी रहिते अछि।

समय अपना गतिये चलिये रहल अछि। परिवेशमे मोड़ एने किछु कारोबार, खेती-गिरहस्तीक संग आनो-आन, मारियो खेलक आ किछु बढ़बो तँ करबे कएल अछि। जहिना कबीर बाबा कहने छैथ जे 'दो पाटन के बीच में, बाँकी बचे ने कोई' तहिना परिवेश बनि रहल अछि। एक दिस हवाइ जहाजपर बिआहक मड़बा सजैए, भोज-भात होइए तँ दोसर दिस साबे जौड़क बान्हल खरही-बत्तीक बनौल मड़बापर सेहो बिआह रचल जाइते अछि। खेतमे काज करैबला वा करबैलाक ऐगला पीढ़ी, अपना ऐठाम मोटा-मोटी बीस बर्खमे पीढ़ी बदलैए, खेतसँ हटि कारखाना पहुँच रहल अछि, जइसँ जीवनमे मोड़ आबि ऐगला पीढ़ी पैछला पीढ़ीक वैचारिक पद्धतिकेँ मोड़ि रहल अछि। सोभाविक अछि, जीवनमे मोड़ एने एना हेबे करत, तेकर अनेको कारण अछि, आर्थिक आमदनीक बढ़ोत्तरीक संग ओहन नब जगह जे जीवनक मूल आवश्यकताकेँ पूर्ति करैबला बनि गेल अछि, तैठाम ग्रामीण जीवन आ शहरी जीवन पद्धतिक मोड़ वर्तमान जीवनकेँ मोड़बे करत।

अखन धरिक अपना ऐठामक जे जीवन पद्धति चलैत आबि रहल अछि, तइमे सामाजिक रूपक संग वैचारिक दुनियाँमे समरसपन अछि जइसँ समाजक धुरी गतिशील अछि। मुदा जे जीवन नब पद्धतिसँ उठिकऽ ठाढ़ हुअ चाहि रहल अछि वा भेल अछि, तैठाम तँ एहेन प्रश्न अछिए किने जे जीवन पद्धति मशीनक गतिये नहि चलि सकैए। सामाजिक जीवन जहिना समाजक संग जुड़ै-बनैमे समय लगबैए तहिना ने ओकरा छोड़बोमे समय लगबे करत। राता-राती मशीन दस गुणा आगू बढ़ि सकैए, मुदा मनुक्खक जीवनमे से थोड़े सम्भव अछि.! खाएर जेतए जे अछि से अछि तइसँ जीवानन्द भाय आ कुलानन्द भायकेँ तइसँ कोन

मतलब छैन, कोन मतलब छैन जे मिथिलाक पंचदेवोपासनाक बीचक रग्गड़मे अनेरे पड़ल रहता। जीवन जीवन छी जे सभ अपन कल्याण चाहैए। जीवन जीबैक ढंग जहिना धर्म छी तहिना धर्मक ढंग सेहो तँ जीवन छीहे।

संगी भेटने मनमे होइते अछि जे दुनियाँमे जीबैक एकटा थम्ह, ओना, केरा-गाछकेँ थम्ह कहल जाइए मुदा थम्हक दोसर माने ईहो अछिए जे कोनो वस्तु वा विचारकेँ थाम्हब, भेटल। जखने एकसँ आगू बढ़ि, माने अपनासँ आगू बढ़ि दोसरक थम्ह जीवनमे भेटैए तखने विचारक संग काजमे सेहो थम्हपन अबिते अछि। सभ जनिते छी जे मनुक्खकेँ अपन लेख-जोख अपन हाथ-पैरक संग काज दइते अछि।

जीवानन्द भाय आ कुलानन्द भाइक बीचक सम्बन्धमे, माने बेकतीगत वैचारिक जीवनक सम्बन्धमे, तेते प्रगाढ़ता आबि गेलैन जे जीवनक सम्बन्ध चतुर्मुखी पुष्पित-फलित भऽ गेलैन। एक संग घन्टो-घन्टो बैस दुनू बेकती अपन जीवन-मरणक विचार-विमर्शसँ लऽ कऽ गाम-समाजक बीचक जीवन-मरणक संग सुख-दुखकेँ निवाड़ैक रास्ताक खोज सेहो करए लगला। पारिवारिक जीवनक संग, पारिवारिक गति-विधिमे सेहो एक-दोसरक मददगार भेला। जखने दुनियाँमे संगी भेटैए तखने संगपनक प्रगाढ़ता बढ़िते अछि।

ओना, दू रंगक बेवहारक बीच दुनूक जीवनो रहलैन आ दू रास्तासँ ठाढ़ सेहो छैथ। एकक जीवन माने कुलानन्द भाइक जीवन ओहन रहलैन माने ओइ परिवेशक परिवार रहलैन जइमे सभ तरहक सुविधा रहैत अछि। माने ई जे पढ़ल-लिखल माता-पिताक संग विद्वज्जनक परिवार-समाज सेहो रहलैन, दोसर दिस जीवानन्द भाइक जीवन ओहन रहलैन जे स्वनिर्मित होइत अछि। तहू स्वनिर्मितमे सामाजिकता सेहो प्रमुख रहलैन। सामाजिकता ई जे समाजकेँ वास्तविक जीवनधारामे आनि विकासोन्मुखी केना बनाएल जाए। यएह धारा बेकतीगत जीवनमे सेहो

चलैए जे समाजसँ जुड़ल सेहो चलिते अछि, तहिना सामाजिक जीवन सेहो होइए जे समाजक धाराकेँ बेकतीगत धार धारामे प्रवाहित करैत गतिशील सेहो बनैबते अछि।

खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहउ। तइसँ जीवानन्दे भाय आकि कुलानन्दे भायकेँ कोन सरोकार छैन। सरोकार छैन अपन दुनू संगीक संग संगपन निमाहबसँ। बेवहारिक रूपमे जहिना अपनाकेँ दुनू गोरे इमानदारीक बीच सम्बन्ध ठाढ़ केलैन तइमे अखन तक दुनूक बीच कोनो मन-मनान्तर आकि इमानक संग हत्या नइ भेल अछि।

सामाजिक परिवेशमे सम्बन्धक भीतर किछु विद्रूपन एबे कएल, जइसँ सम्बन्धमे दूरी बनब शुरू भेल। मुदा दूरी बनलाक पछातियो विचारमे कमी नहि आएल अछि। हँ, ईहो नकारल नहियेँ जा सकैए जे थोड़-बहुत मनान्तर काजकेँ बाधित नहि केलक अछि। जइसँ दुनू संगीकेँ किछु-ने-किछु घाटा भेबे केलैन अछि।

सामाजिक परिवेश एते तँ दुनू गोरेकेँ, माने जीवानन्दो भाय आ कुलानन्दो भायकेँ, वैचारिक रूपमे प्रबलता आनिये देलकैन जे मनुक्ख असगरो धरतीपर हँसी-खुशीसँ, माने जइ दुनियाँमे बसै छी तहू दुनियाँमे जीवन बसर कइये सकैए। जखने मनुक्ख अपन जीवनकेँ थाहि लइए, तखने थाहे-थाह थाहैत, केहनो-केहनो धार पार कइये लइए। अनाड़ी-धुनारीक जीवनक संग आ जग-जगाएल जीवनक संग सम्बन्धमे अन्तर अछिए, एकमे जहिना खीचपन रहने टुटैक बेसी सम्भावना रहैए, तहिना विचारक प्रबलता रहने दोसरमे से नइ होइए।

अपन विचारक अनुकूल भविष्यमे जखन बाधा अबैए तखन विचारकर्ताक मनमे पुन: विचारैक खगता आबिये जाइए। ओना, जीवानन्द भाय निरविचारी लोक छैथ, तँए ई अपन विचारानुकूल जीवन यात्रा कइये रहल छैथ, जइमे बिघ्न-बाधाकेँ टबकब सोभाविक बुझिते

छैथ। जइसँ यात्राक बीचक गतिमे केतौ तेजी रहै छैन तँ केतौ मन्दक संग विलमाउ-ठहराव सेहो अबिते छैन, जेकरा ओ लेनिनक ओइ विचारक अनुकूल अंगीकार करैत मानिकऽ चलै छैथ जे एक कदम आगू, दू कदम पाछू, अपन जीवनानुकूल अनुभवक आधारपर कहने छैथ।

संयोग बनल, कुलानन्द भाइक विचारमे ठहराव एने, दृष्टिमे सेहो दृश्य एलैन जइसँ मन मानि गेलैन जे चलैक बाटमे, जीवन जीबैक रास्तामे केतौ-ने-केतौ कमी जरूर अछि। सहज जीवनकेँ लोक अपन सहजतासँ आगू बढ़ैबते अछि, मुदा असहज जीवन भेने दोसराक जरूरत सेहो पड़िते अछि। दुनियाँ तँ दुनियेँ छी जे सात अरब लोकसँ भरल अछि। तहूमे अपन मिथिला तँ सहजे मिथिला छीहे, पचासो बर्खसँ अबैत सरकार परिवार नियोजन अखन तक नियंत्रित नहियेँ केलक अछि, केतबो चोरा-नुका कऽ भ्रूण-हत्या किए ने होइए, मुदा तइ सभसँ लोकक बढ़वारि थोड़े कमल अछि आकि कमत।

कहब जे केना कमि सकैए?

कमैक असान ढंग अछि। ओ अछि मनुक्ख अपन बुनियादी जीवनकेँ पकैड़ जखने भविष्योन्मुख हेता तखने अपन जीवनानुकूल जीवन आ परिवार बना चलए लगता, से जखने चलए लगता कि अनेरे ने परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरि नियंत्रण हुअ लगत। खाएर जे से, तइसँ जीवानन्दे भाय आकि कुलानन्दे भायकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अपन जीवनक जहानसँ।

कुलानन्द भाइक मनमे अपन बीतल जीवन नचलैन। नचिते मन मन्तव्य देलकैन जे संगीक परीक्षा तँ संगपन जीवन दइए। संग-संग चललासँ नीक-सँ-नीक जीवन पेब सकै छी आ संग-संग नहि चललासँ केतबो केला-पछाइत कमी सेहो रहिते अछि। कुलानन्द भायकेँ विचारक प्रबलता जोर मारि कहलकैन जे जीवानन्द भाइक संगपन जीवन संजीवन

छी तँए...।

विरहाएल बटोही जकाँ कुलानन्द भाय जीवानन्द भाय ऐठाम पहुँचला। चेहराक बदलाव किछु भ्रमित दुनू गोरेकेँ केलकैन मुदा केतबो करियाएल भौम्हरा किए ने हुअ, चिन्हारए तँ दुनूक बीच अछिए। आगतक सुआगत करैत जीवानन्द भाय बजला- "भाय, केतबो मायाकेँ अपनासँ दूर राखए चाहै छी मुदा से भऽ नै पबैए। केना-ने-केना छाँह जकाँ अगुआ-पछुआ पकैड़िये लइए।"

कुलानन्द भाय बजला-

"से की?"

जीवानन्द भाय बजला-

"कहू जे परपोताक भार हमरा ऊपर किए रहत। आठम दिन ओकर मूड़न वैष्णव देवीमे हएत, तइमे परिवारक सभ एकमुहरी एकमत छैथ जे जीवानन्द बाबा बिना केना हएत।"

मने-मन कुलानन्द भाय विचारि लेलैन जे जहिना परिवारक वृहत काज, माने हटल काज एक-दोसरक बीच सम्बन्ध बनबैत अछि तहिना खगता सेहो, माने जीवनक खगता सेहो सम्बन्ध बनैबते अछि। सुअवसर अछिए तँए किए ने संग पूरि दिऐन।

❑

शब्द संख्या : 1268, तिथि : 01 अगस्त 2022

अपन रचित रचना

बच्चेसँ दीनबन्धु भायमे आनसँ भिन्न एकटा विशेष गुणक विशेषता रहलैन। ओना, ईहो नहि कहल जा सकैए जे एहेन विशेष गुण विशेषित रूपमे दीनबन्धुए भायटा मे छैन आ दोसरमे नहि अछि। किछु-ने-किछु सभमे अछि। मुदा सभमे जगजिआर नइ भऽ पबैत अछि। या तँ तरे-तर सड़ि जाइए वा अधकच्चू भऽ रहि जाइए। किछुए एहेन लोक होइ छैथ जिनकामे सौन मासक फुहार जकाँ सालो भरि फुहराइत रहै छैन।

बच्चेसँ दीनबन्धु भायमे, जखन पाँचे-छअ बर्खक रहैथ, आन बच्चासँ भिन्न एकटा गुण प्रस्फुटित भेलैन। ओ भेलैन जे जहिना कोनो बच्चा आकासक आवाज सुनि, आकासक आवाजक माने भेल दूरसँ सुनल आवाज, कविताक स्वर गुनगुनाए लगैए, तँ कियो कॉपीपर कलमसँ लिखए लगैए, कोनो बच्चा कुम्हारक चाकपर गढ़ल वर्तन जकाँ अपन बाटी-गिलासमे गरदा-माटिकेँ भरि गढ़न करए लगैए, माने गिलासेक अकारकेँ गढ़ए लगैए आदि-इत्यादि। मुदा तइ सभसँ हटि जखन दीनबन्धु भाय पाँचे-छअ बर्खक छला, तखने छोट-छोट गाछ सभकेँ चिन्हैक बाट पकड़लैन।

प्रकृति तँ गजब अछिए। जहिना हजारो-लाखो रंगक जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ गाछ-बिरीछ रहनौं एक-दोसरसँ भिन्न सेहो अछिए तहिना एक-एक रंगक जीवमे सेहो हजारो- रंगक रूपो आ गुणो अछिए। मनुक्खे छी, रंगे दिस देखब तँ कोन रंगक मनुक्ख नहि भेटत। तहिना ओकर शकल-सूरत दिस देखियौ तँ हजारो रंगक सेहो भेटत। केकरो साढ़े आठ फीटक

लम्बाइ देखबै तँ केकरो फीटोसँ कम, तहिना कुत्ता-बिलाइ, गाए-महींस इत्यादि दिस देखबै तँ सेहो तहिना अछि। एहने अजब दुनियाँकेँ देखि दीनबन्धु भायकेँ सेहो अपन शक्तिक धुन सवार भेलैन।

दीनबन्धु भाय बच्चेमे केकरो मुहेँ सुनने छला जे मनुक्ख तँ मनुक्ख छी, ओ अनका भरोसे थोड़े जन्म लइए। ओ तँ अपना बाँहि-बलक आशामे रहैए। अपना भरोसे जन्म लइए आ अपन शक्तिक अनुकूल दुनियाँ निरमबैत निर्माण कार्य पूर्ति करैत आगू बढ़ैए। कहब जे अप्पन भरोस आ अनकर भरोस की भेल? अप्पन भरोस भेल स्वनिर्मित जीवन बना चलब आ अनकर भरोस भेल, दोसरपर जीवन बिताएब। जेना, देखबो करै छी आ सुनबो करै छी, आश्रय आश्रित जीवन।

सोभाविक अछि, खेती-पथारी हुअ कि माल-जाल आकि गाछीए-कलम, जे हम अपनाबै छी, लगबै छी, से तँ अपने ने ओकर गुण-दोष देखि कऽ, माने चुनि-चुनिकऽ, बुझि-सुझिकऽ। प्रकृतिमे तँ सभ किछु पसरले अछि। दुनियेँ पसरल अछि, नीक-बेजाएसँ भरल अछि। तँए, चुनि-चुनिकऽ आनब सोभाविक अछि। बुझल बात तँ अछिए जे एक-दिस वेदक निर्माणकर्ता भेला आ दोसर दिस चार्वाक सन विरोधी सेहो भेला।

दीनबन्धु भाइक विषयमे बहुत तँ नइ बुझल अछि, मुदा जे बुझल अछि, माने जे देखै छी तइमे दीनबन्धु भाय समाज[1]मे असगरे देखि पड़ै छैथ। ओना, दीनबन्धु भाइक विषयमे बेसी ऐ दुआरे बेसी नइ बुझल अछि जे आइसँ पचास बरख पूर्वेसँ ओ समाजक संग जुड़ल रहला। अपने तँ तीन साल पहिने कौलेज छोड़ि निकलबे केलौं अछि, जैबीच खेत-पथारक आड़िकेँ मात्र छुलौं अछि। तँए कहब जे माटियो छुबि लेलौं, सेहो बात नहियेँ अछि। खेत-पथारक तरमे माटि अछि किने जे रंग-रंगक

[1] **गाममे**

गुणो आ रूपो बनौनहि अछि। ओकरा वएह ने छुबि सकैए जे खेतमे कूप खुनि, पानि निकालि मड़ुआ बीआ पटा, मड़ुआक खेती बटाइ करैए आ काँटू-पुत्ती लऽ कऽ घर अबैए। यएह तँ श्रमक दुर्गैत अछि। जेकर गिनतियो माने मड़ुआक गिनती, अन्नमे नहि अछि। पैछला साल मोटका अन्न मानल गेल अछि, भलें मड़ुआ सभ अन्नसँ मेहिये किए ने हुअए मुदा मोटका अन्न कहबैए..! यएह तँ दुनियाँक खेल छी, मोटका मेही अछि आ महीका मोट बनि गेल अछि।

ओना, दीनबन्धु भाइक चर्च, आन-आनक मुहेँ जे सुनैत एलौं हेन तइमे तेते हुनकर धाख मनमे पकैड़ नेने अछि जे जखन हुनका लग जाएब तखन की पुछबैन, आगूमे प्रश्न बनि ठाढ़ भऽ जाइए। मुदा आइ, जहिना कोनो जिज्ञासाक झलक मनमे झलकैए आ तखन जे मनक उत्सुकता जगैए तहिना अपनामे भेल। मने मनकेँ धिरकारए लगल जे मनुक्ख जँ मनुक्ख लग बैस दुनियाँ-जहानक विचार नहि करत तँ दोसर के करत। ऐठाम एहेन धोखा नइ हुअए जे सभसँ जे नमहर जीव अछि से करए, तखन शदूल पंछी आ हाथी जानवर छोड़ि दोसर कइये के सकैए। तइसँ थोड़े काज हएत। ..तरे-तर मनकेँ समगम करैत विचार करिकऽ दीनबन्धु भाय ऐठाम विदा भेलौं। एकाएक मनमे उठल जे अप्पन तइस बर्खक उमर अछि आ ओ माने दीनबन्धु भाय आइसँ तीस साल पहिने कौलेज छोड़ला पछाइत गाममे किसानीकेँ अंगीकार करैत अपन मानवीय मूल्यक निर्वहन करैत जीवन-यापन कऽ रहला अछि। कखनो कऽ मन पाछुओ ससैर जाए आ कखनो कऽ आगुओ ससरए लगए।

मन भलें आगू पाछू ससरल मुदा जहिना आगू मुहेँ विचार चलि रहल छल तहिना डेगो संगे-संग चलल। दीनबन्धु भाइक दरबज्जासँ जखन कनी पाछुए रही कि नजैर आगू बढ़ि दीनबन्धु भायपर पड़ि गेल। दीनबन्धु भाय अपन दरबज्जाक आगूमे सिंगहार-फुलक गाछकेँ देखि रहल छला। देखलयैन जे गाछकेँ भाय देखबो करै छैथ आ ठोर बिजका-

बिजका गुनगुनाकऽ बजबो करैथ, ‘हाय रे प्रकृति, केकरो भोरमे फुलबैए आ केकरो साँझमे। केकरो बारह बजे दिनक टहटहौआ रौदमे तँ केकरो बारह बजे गुप-गुप अन्हार रातिमे.! फूलक गाछपर सँ एकाएक दीनबन्धु भाइक नजैर हमरापर पड़लैन। ओ ठकमकेला। ठकमकाइक कारण छेलैन मनकेँ मानि जाएब जे भरिसक ई अपने गामक अछि, तँए गौंए भेल। मुदा नीक जकाँ चीह्न नहि रहलिऐ हेन। अपने मन ईहो कहैन जे तखन गौंआँ केना भेल? गौंआँ तँ ओ भेल जे संग मिलि चलए।

दरबज्जाक आगूमे दीनबन्धु भाय लग पहुँच बजलौं-

“भाय साहैब, गोड़ लगै छी।”

गोड़ लागबकेँ अपना विचारे अपने बुझि रहल छेलौं जे अपना सभक जे पारिवारिक-सामाजिक बेवहार अछि तइ अनुकूल बजलौं। मुदा दीनबन्धु भाय अपना मने बुझि रहल छला जे गोड़ लगैक माने भेल संग-संग चलब। मनमे भलैं जे दीनबन्धु भायकेँ उठैत होनु मुदा बेवहारिक पक्ष मजगूत छैन्हे। आसिरवाद दइसँ पहिने बजला-

“पहिने चौकीपर बैसह। पछाइत सभ किछु हेतइ।”

ओना, मनमे भेल जे कहिऐन, भाय, आब तँ कुरसीक चलैन भऽ गेल अछि, चौकीक प्रथा तँ पुरान पड़ि गेल। मुदा लगले अपने मन रोकलक जे एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे बेकती-बेकतीक दूरीपर, माने सामाजिक, साम्प्रदायिक, जातीय इत्यादि, लगमे बैस विचार-विमर्श करी। तँए चुप्पे रहब नीक बुझलौं। तैबीच मनमे एकटा विचार अपने उपैक गेल। उपकल ई जे जखन गप-सप्पक क्रम शुरू हएत तखन तेहेन प्रश्न भाइक आगूमे राखि देबैन, जेकरा पुरबै आ करैमे मासो दिनसँ बेसी समय लगतैन। अनेरे तँ कनियेँ कालक पछाइत, जखन बजैसँ मन अकछेतैन तँ बजबे करता जे ‘दोसर दिन ले रहए दहक’, अनेरे ने सम्बन्ध-सूत्र बनि जाएत। जइसँ आवाजाहीक दुआर खुजि जाएत।

बैसते दीनबन्धु भाय बजला- “बौआ, अनचिन्हार तँ नहि मुदा अधचिन्हार तँ जरूर छह, तँए पहिने अपन परिचय दऽ दाए।”

तैबीच आँगनसँ कुसुमांगिनी चाह नेने दरबज्जापर पहुँच चौकीपर चाह राखि आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन। पत्नीकेँ ठाढ़ भेल दीनबन्धु भाय देखलैन जरूर मुदा तैयो आगू बजला-

“बौआ, अपना सभक जे नैतिक पक्ष अछि, ओ ऐ रूपक अछि जे तोरा चाह पीआएब हमरा बरजित करक चाही, मुदा परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे ओ अपमानजनक मानल जाएत।”

दीनबन्धु भाइक विचार जेना ठाँहि-दे कपारमे लागल तहिना मन झनझना गेल। अपने किछु ऐ दुआरे नइ बाजी जे आगूमे एला पछाइत जँ बाजब जे चाह नइ पीबै छी, से तँ सरासर झूठ हएत। तँए, पहिने दीनबन्धु भायकेँ चाह हाथमे लिअ देलिऐन, पछाइत अपने लेलौं। दीनबन्धु भाय बजला-

“अप्पन परिचय पहिने दाए, बौआ।”

परिचय दिऐन, मुदा की परिचय दिऐन..! अग-दिगमे पड़ि गेलौं। अपने मनकेँ सक्कत करैत विचारलौं जे जहिना कौलेजमे शिक्षकक आगू कोनो प्रश्ने रखै छेलौं आकि उत्तरे दइ छेलिऐन तहिना पुछबो करबैन आ उत्तरो देबैन। बजलौं-

“भाय साहैब, तीन साल पहिने बी.ए. पास कए कौलेज छोड़लौं। कौलेज छोड़ैत-छोड़ैत मनमे उठि गेल जे नोकरी जीवन बान्हल जीवन होइए। जे जीवन शुरू करब वएह जीवन अन्त तक बनल रहत। मुदा मनक मालिक मनुक्ख तँ से नहि छी, करवनौं अपन रूप बदैल जीवन बदैल सकैए। तरवन तँ जीवनक संग मनक झगड़ा हएत। मनक झगड़ाक रगड़ाक भार देह[2] थोड़े उठा सकैए, ओ तँ तरे-तर गलि जाएत। तँए गामेमे

[2] **शरीर**

रहि स्वनिर्मित रचना अपने जकाँ करए चाहै छी।”

हमर बात सुनि दीनबन्धु भाइक मन ओहिना अलिसा गेलैन जेना कोनो सागेक पात आकि फूले-पत्ती, गाछसँ हटला पछाइत अलिसा जाइए। किछु पुछैसँ पहिने दीनबन्धु भाय हियासि-हियासि हमर चेहरा दिस देखए लगला। तैबीच अपने मन कहि देलक जे जखन अखन तकक जीवनमे दीनबन्धु भायसँ कोनो सम्बन्ध-सरोकार नइ रहल अछि, तखन तँ जहिना हमरा प्रति ओ निर्मल-निश्छल छैथ तहिना तँ हमहूँ छीहे। तइसँ जीवनक भूमि सहिट अछिए। अपन चेहराकेँ ओहिना बनौने रहलौं जेना कौलेजमे शिक्षकक आगू बनौने रहइ छेलौं।

मध्ययुगीन कवि जकाँ नख-सिख रूप सेहो देखलौं आ सिख-नख रूप सेहो देखबे केलौं, भलेँ जीवनक सिख-नख आकि नख-सिख परेख पेलौं वा नहि। मुदा दीनबन्धु भाय से नहि, ओ वर्तमानक बीर्तमान रूप देखलैन। दीनबन्धु भाय बजला-

“बौआ, अपने जकाँ की कहलहक?”

नीक जकाँ किछु बुझल रहैत तखन ने, से तँ नीक जकाँ किछु बुझल छल नहि, कन्हा झाँकैत बजलौं-

“भाय साहैब, अपनेसँ भेँट करैक यएह कारण अछि।”

सभ बात सुनि दीनबन्धु भाय बजला-

“बौआ, हरि अनन्त हरि कथा जकाँ दुनियाँ अनन्त अछि। दुनियाँमे सात अरब मनुक्खक शकले-टा नहि, सात अरब रंगक बुद्धि-विवेक सेहो छइ। एहेन अथाह दुनियाँमे के केते अपनाकेँ थाहि सकत, यएह भेल मनुक्खक बुइधिक बुद्धिमता।”

दीनबन्धु भाइक विचार सुनि जेना मनक भाव भूमि बदलए लगल। संक्रमित होइत भाव-भूमि देखि मन चहैक उठल-

“भाय साहैब, अपन रचना?”

दीनबन्धु भाय बजला-

“बेवहारमे की देखै छहक, मनमे कोनो कथा-पिहानीक चित्र छह, आ सोझामे ओइसँ विचित्र रूप देखै छहक, एहेन परिस्थितिमे अपने मन ने स्वनिर्मित रास्ता बनौत।”

नशा-पान केलाक पछाइत जेना मनक विचार उगडुम करैत घुमए लगैए तहिना अपनो मनमे भेल। दीनबन्धु भाइक विचारकेँ अंगीकार करैत बजलौं-

“मुदा?”

दीनबन्धु भाय बजला-

“मनुक्ख स्वतंत्र प्राणी छी। तँए स्वतंत्र जीवन बना दुनियाँमे किछु करब अछि। बस, एतबे।”

❑

शब्द संख्या : 1481, तिथि : 07 अगस्त 2022

थाहल संगी

सुजीत काका विचारक ओइ दुनियाँक पहुँचल लोक, जैठाम पहुँचला पछाइत नइ बुझि पड़ैत जे ओ दोस्त-दुश्मनक बीच छैथ कि दुश्मनेक बीच छैथ आकि दोस्तेक बीच छैथ। आनकेँ बुझैमे जे होनि मुदा सुजीत काकाकेँ अपनो तँ बुधि-विवेक छैन्हे। अपने बुधि-विवेक ने अपन दोस्तो छी आ दुश्मनो छीहे। नीकक बाट पकैड़ दोस्त बनैए आ अधला बाट पकैड़ चलने दुश्मन बनैए। ओना, सुजीत कक्काक अपन जीवनो छैन आ जहानो छैन्हे। जीवनो तँ जीवन छीहे, असगरोक होइए आ समूहोक होइए। भलेँ दुनू रंगक किए ने हुअए मुदा दुनूक बीच अपन-अपन सीमा सेहो अछिए।

आने दिन जकाँ सुजीत कक्काक दरबज्जा लोकसँ भरल रहैन। अपने पहुँच देखलौं तँ बुझि पड़ल जे आधासँ बेसी लोक ओहन छैथ जे भरि दिन, परोछमे अदखोइ-बदखोइ सुजीत कक्काक बजै छैथ आ ऐठाम ठहाका मारि हँसबो करै छैथ आ भरि मुँह गप्पो-सप्प करिते छैथ। मने-मन सुजीत काकापर तामसो उठि रहल छल जे जहिना कोनो बाल-बोधकेँ चेष्टगर सियान झूठ-फूस बाजि पोल्हेबो करै छैथ आ प्रबोधवो तँ करिते छैथ, सएह स्थिति छैन। मुदा बजलौं किछु ने। महादेव जकाँ मने-मन अपन बीख पीब लेलौं।

अखन तक ठाढ़े-ठाढ़ सभ तमासा देखि रहल छेलौं। बजैत-बजैत सुजीत काका मुड़ी उठा तकलैन तँ सोझामे ठाढ़ देखलैन। अप्पन विचारक कड़ीकेँ मुँहक शब्दसँ जोड़नहि रहला मुदा हाथक इशारासँ लगमे

आबि बैसैले कहलैन। आगू बढ़ि सुजीत कक्काक लगमे जा कऽ बैसलौं। मुदा मन चकोना होइते रहए। नजैरकेँ दौड़ा-दौड़ा सभपर दी, माने जेते गोरे सुजीत कक्काक दरबज्जापर बैसल रहैथ, रंग-बिरंगक चेहरा बुझि पड़ए। कियो घनिष्ठ संगी सुजीत कक्काक बुझि पड़ैत तँ कियो घोर-विरोधी। देखि-देखि मन कछमछाइते छल जे एहनाठाम किछु बाजब केना? देखिते छी जे गाममे नीको काज होइए आ अधलो काज होइए। नीकक फल नीक होइए आ अधलाक फल अधला होइए। कहलो गेल अछि जे रोपे गुण फल होइत अछि। ऐठाम तँ नीको केनिहार छैथ आ अधलो केनिहार छथिए। नीक केनिहारकेँ नीक कहबेक अछि मुदा 'अधला केनिहारकेँ की कहब? जँ 'अधला' कहबै तँ अनेरे रक्का-टोकी हएत। रक्का-टोकीक की आड़ि-मेड़ अछि जे केते हएत। संयोग भेल, तैबीच सुजीत काका कबीर दासक विचारमे पहुँच बजला-

"कबीर बाबा कहने छैथ, बिना साबुनक धुआइयेसँ, लगमे विरोधीकेँ रहने मनक धुआइ होइए।"

ओना, सभ दिन सुजीत काका लग डेढ़-दू घन्टा बैस, अपनो जे नइ बुझै छी से पुछि लइ छिऐन आ आन-आनक संग सुजीत कक्काक विचार सेहो सुनै छी।

सुजीत कक्काक विचार सुनि मनमे भेल जे पुछिऐन, मनक धुआइ भेने क्रिया-कलापक सेहो धुआइ भऽ सकैए। जँ मन साफे अछि मुदा क्रिया-कलाप गड़बड़, तखन एक-दोसराक सम्बन्ध-सूत्र केहेन बनत? आ जँ सम्बन्धे-सूत्र ढील-ढीलाह बनत तखन मजगूत जीवन केना बनि सकैए? मुदा लगले फेर अपने मनमे भेल जे अपने तँ पाछूकऽ एलौं हेन, जँ कहीं ऐगला[3] एनिहारक विचारक क्रममे सुजीत काका होथि, तैबीच जँ अपने डीलरक दोकान जकाँ पैछला एनिहार पहिने लिअ चाहत तँ झंझट

---

[3] **पहिलुका**

हेबे करत किने। ओह! जानिकऽ दोखी बनब नीक नहि। चुपे रहलौं। ओना, जानि-अनजानि लोक अपनो दोखी बनैक अधिकारी अछिए मुदा दोखी बनैसँ पहिनौं बहुत प्रक्रिया अछि। तहूमे प्राकृतिक प्रकोप तँ आरो बेसी अछि। देखिते छी जे यएह दुनियाँ छी जखन लोक पत्थरकेँ पत्थरपर घँसि-घँसि हथियार बना शिकार करै छल, पछाइत लाखो बर्खक बीच की सभ भेल आ अखन देखिते छी जे लाठी-फराठी कमि गेल अछि आ बम-बारूद बेसी भऽ गेल अछि। तहूमे ओहन-ओहन जइसँ गौंआँ-घरुआ आ अड़ोसी-पड़ोसीक कोन बात जे हजारो कोस हटल देश दोसर देशकेँ घरैया शिकार जकाँ शिकार करिते अछि।

अपने बीतल एकटा बात, माने अपने जे गाममे भेल, मोन पड़ि गेल। भेल ई छल जे एकगोरेकेँ, दोसराक संग गलती करैत देखि मुहेँपर कहि देने रहिऐ जे एहेन छुछुड़पना काज किए करै छह। अखन तक अपने बुझबे ने करै छेलौं जे शब्दक मिलानी मात्रसँ समाजो आ सत्तो चलैए। प्रीतमलाल माने जेकरा कहने रहिऐ, गामक छअचक्री लोक, कृष्ण जकाँ सुदर्शन चक्र नहि, मात्र ओइमे छबेटा डाँरि[4] खिंचल छै, से भेल छहचक्री। तरे-तर कि केना भेल, से जखन तीन मासक जहल कटलौं तखन बुझलौं। अपनेटा बात नइ कहै छी, अपना सन-सन केतेको गोरे केतेको गाममे एहेन जहल कटने छैथ।

आजुक परिवेश ओइ मोड़पर आबि ठाढ़ भऽ गेल अछि, जैठाम विनास-विकास दुनू अछि। मन तेना अपने घुरिया-मुड़िया गेल जे रसे-रसे दृढ़ भऽ गेल जे अबेर-सबेरक विचार केने बिना सुजीत काका ऐठामसँ नहि जाएब। पाछू-के एलौं, तँए हमर मनक प्रश्न पछुआ गेल, मुदा आवश्यक तेते अछि जे बिनु बुझने अन्न-तीमनक सुआद थोड़े बुझब, सोझे गीर लेब हएत। ओना, मन ईहो कहैत रहए जे अखन उचक्का सभ

[4] **लकीर**

लगमे अछि, जँ सोझामे बाजी आ फेर जहल कटबैक ओरियान कऽ देत, तइसँ नीक जे अपन विचार पाछू काल-के राखब। जखने विचार पछुआएत तखने कच्छड़-मच्छड़ कटैबला सभ पड़ाएत। अपन विचारक प्रश्न छी अपने मुहसँ काकाकेँ पुछबैन, अपने कानसँ हुनक विचारो सुनब, पछाइत समयानुकूल डेग उठाएब।

साँझक आठ बजि गेल। सौंझुका पूजाक घड़ीघन्ट केतेको देवस्थानमे बजि गेल। बेरुका मदभक्षी सभक मदक खुमार सेहो कमि गेलैन। जइसँ भोजन केला-पछातिक आराम करैक विचार मनमे उठि गेलैन। गामक बैसार कि कोट-कचहरीक बैसार छी जे निसचित समयपर चलत, ओ तँ गमैया धार जकाँ अछि जे छअ मास सुखल रहत आ छअ मास बहैत चलत। दुइये गोरे रहलौं, माने अपने आ सुजीत काका रहला। मनमे भेल जे अपने तँ जवान छी, तँए देहो ओते शक्ति पैदा करिते अछि, जइसँ एकाध घन्टा विलैमियोँ सकै छी, तहूमे मनक जिज्ञासा प्रबल रहबे करए। मुदा सुजीत काका तँ से नहि छैथ। श्रेष्ठ छैथ, उमरदार छैथ, जइसँ शिष्टपनसँ मानिते छिऐन, मुदा एते तँ पुछले जा सकैए जे 'काका, बड़ीकालसँ बैसल छी, पियास लगि गेल हएत।' मुदा सुजीत काका तँ अपने शिकारी छैथ, ओ मने-मन बुझि गेला जे किछु एहेन विचार मनोहरक मनमे उठि गेल अछि जेकर जवाब सुनैले मन कच्छड़ काटि रहल छइ। अपनो मन मानियेँ रहल छेलैन जे जखन जिनगीक कोनो ठेकाने ने अछि तखन तँ जे कऽ लेब तेतेकक हकदार तँ हेबे करब। सभ जनिते छी जे कियो करे आप ले माए ले ने बाप ले। संयोग नीक बनल, बुधियारि काकीकेँ जेना बुझले रहैन आकि की, दू-दूटा बिस्कुट दूटा प्लेटमे आँगनसँ दरबज्जापर पानिक संग पहुँचा गेली। जाबे दुनू बापूत बिस्कुट खा पानि पीलौं, ताबत दू कप चाहो बुधियारि काकी पहुँचा गेली।

अपना बुझि पड़ल जे चाह-बिस्कुट खेला पछाइत दुनू गोरेक मन, माने अपनो आ सुजीतो कक्काक, एक्केरंग भऽ गेल। एकरंग होइते बजलौं-

“काका, हमरे भ्रम भऽ रहल अछि आकि अहीं भरमा गेल छी, से बुझिये ने पेब रहल छी।”

ओना, सुजीत काका बुझि गेला मुदा बुझल बातकेँ मनेमे दाबि बजला- “से की मनोहर?”

बजलौं- “काका, अहाँ भलेँ बिसैर गेल होइ, मुदा अपने तँ भुक्तभोगी छी तँए जीवनमे केना बिसरब।”

सह दैत सुजीत काका बजला- “हँ, से बिसरबोक नइ चाही।”

सुजीत कक्काक विचार सुनि मन आरो दनदना गेल। दनदनाइत बजलौं-

“काका, कनिये पहिने, जेते गोरेकेँ दरबज्जापर बैसल देखलौं, तइमे आधासँ बेसी ओहन लोक छल जे धोखाबाज अछि। एहेन लोक करवन संग रहत आ करवन वौआकऽ धोखा दऽ पड़ा जाएत, तेकर ठेकान नहि।”

ओना, अपन विचारकेँ सुजीत काका कद्र केलैन मुदा अप्पन जीवन आ विचार तेतेक ऊपर उठि गेल छैन जैठाम एहेन-एहेन विचारो आ काजोकेँ तुच्छ मानल जाइए। तुच्छ मानब सोभाविको अछिए। कियो एकदिना जहल जाइए आ कियो नेलशन मंडेला जकाँ तीस बरख जहल काटैए, तैठाम दुनू गोरेक जहल काटब थोड़े एकरंग हएत।

मुस्की मारि सुजीत काका बजला-

“मनोहर, कियो चोर अछि कि डकैत अछि कि झुठे-फूस बजनिहार लबड़ा-लुच्चा अछि आकि छल-प्रपंची धोखेबाजे किए ने अछि, तेकर दुख-सुख अपने भोगत कि आन, हमर की लेत।”

ओना, शब्दक शैलीमे सुजीत कक्काक विचार नीक लागल मुदा अप्पन तीन मासक जहल मनमे मनाही करिते रहल जे ऐठाम सुजीत

काका विचारकेँ झाँपिकऽ बजला अछि। बीतल दिनक प्रमाण सभकेँ मने-मन एकत्रित करैत बजलौं-

"काका, अपनो मानै छी जे पूर्वज सभ कण्ठ फारि-फारि कहने छैथ जे जे जेहेन करत से तेहेन पौत। रोपे गुण फल होइते अछि। मुदा... ।"

अपन सभ विचारकेँ हौंरि-हाँरि सुजीत काका बजला-

"मनोहर, भने अखन दुइये बापूत छी, तँए जीवनक मूल मर्मकेँ कहि दइ छिअ।"

सुजीत कक्काक विचार सुनि मनक जिज्ञासा तेते फुनफुनाकऽ जगि गेल जे हुअए करवन सुजीत कक्काक मुँहक बात सुनी। बजलौं-

"की मर्म कहलिऐ काका?"

सुजीत काका बजला-

"मनोहर, अपन जीवनधार ओहन बना प्रवाहित करी जे स्वयं निर्मित हुअए। जखने अपन प्रवाह अपना अनुकूल चलत तखने दुनियाँक आन-बीरानक भेद मेटा जाएत। रहत मात्र अपन कर्म (काज)। से तँ अपन-अपन विभाजित रहबे करत। एक्केटा नमहर काज माने एकसँ अधिक गोटेक बीचक, रहैए जे नीको होइए आ अधलो होइए मुदा केनिहारक सिरे किछु ने कहल जाइए, सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो कहल जाइते अछि।"

❑

शब्द संख्या : 1331, तिथि : 10 अगस्त 2022

आत्मबल

आने गाम जकाँ मिथिलाक गाममे एकटा जीताएलपुर गाम सेहो अछि। जीताएलपुर गामक अपन विशेषता अछि। ओना, एहेन विशेषता कोनो एक्के गामक रहल अछि सेहो बात नहियेँ अछि। बोनाएल-सँ-बोनाएल आ झँपाएल-सँ-झँपाएल गाम किए ने हुअए, तँए ओ गाम आने गाम जकाँ गोटि-पङरा डॉक्टर, गोटि-पङरा प्रोफेसर वा गोटि-पङरा खास-खास गुणकेँ प्रदर्शित नहि केलक, से नहि। करितो अछि आ करैत आबियो तँ रहले अछि। ऐठाम एकटा बात आरो अछि ओ अछि जे खुदरा-खुदरी जखन सभ गुण सभ गाममे अछिए, तखन जँ सभ मिलाकऽ देखब तँ सोल्होअना भइये जाइए। जखन सभ गुण सभ गाममे अछिए तखन गाम सौंस भेल की नहि? जेकरा सभगुण सम्पन्न बुझै छी, मानी वा नइ मानी ई अहाँक विचार भेल जे कहबै जे सजमनिया टोल एकटा गाम अछि, जइ गाममे एकोटा परिवार एहेन नइ अछि जे अरबमे नोकरी नइ करैत हुअए। ओना, जीताएलपुर रूआवी गाम अछि, रूआव ऐ मानेमे रखने अछि जे 'सुतिकऽ उठबौ आ ऐँठकऽ चलबौ।' खाएर जे जेतए अछि ओ ओइ गामक बातो भेल आ काजो भेल, मुदा जीताएलपुरक बच्चा-बच्चा जानियोँ रहल अछि मानियोँ तँ रहले अछि जे कोनो गाममे विद्यालय तीन-चारि साए बरख पूर्वसँ अछि, रूप चाहे जे होउ, मुदा जीताएलपुरमे विद्यालय बनल देश स्वतंत्र भेला पछाइत। जखन एकटा स्वतंत्रता सैनानी अपन अन्तिम समयमे माने वृद्धपन

एलापर जीताएलपुर गाममे विद्यालय स्थापित केलैन। ओही गामक छैथ सुचित भाय।

बच्चेसँ सुचित भाय ओहन बाल विद्यालयकसँ बच्चा जकाँ रहला जे गामक विद्यालयमे अपन फुलवारी लगौलैन। माने जइ समय विद्यार्थीक माध्यमसँ विद्यालय परिसरमे फूलक खेती होइ छल। अखन तँ मलिछामक नककट्टा महादेव जकाँ, बान्ह-सड़क आ नहर भेने, कोनो गामक नाके कटि गेल अछि तँ कोनो गामक मुहेँ कटि गेल अछि। तैठाम आब चरचे की करब। पहिलुका अपेक्षा गामक रूपमे बदलाव आएल अछि। एहेन परिस्थितिमे गामक खेतकेँ, गामक उत्पादित पूँजीकेँ, उपजाऊ भूमि बनबैक स्थिति पैदाकऽ रहल अछि। सरकारक डोराडोरि देखिये रहल छी जे कोसीक नहरबला फाटकक आयु समाप्त भऽ रहल अछि आ नहरक शाखा-प्रशाखा अखनो कोसीए मे झिलहोरि खेल रहल अछि।

जहिना बाल-बोध बच्चा बाल-विद्यालय लऽ कऽ अप्पन परिवार धरिक बीच अपन जीवन धारण करैक लूरि सीखि लइए तहिना सुचित भाय सेहो सीख लेलैन। ऐठाम ई नहि बुझब जे माता-पिताक बीच एहेन दोष पैदा केना लऽ लेलक जे काजक अढ़ान बेटीपर दिअ लागल आ बेटाकेँ आरक्षित कोटाक लाभ देलक। जहिना बाल मनक जीवन अपन दुनियाँ देखि आत्मबल पैदा करैए तहिना सुचित भायकेँ सेहो भेलैन। ओना, जीवनक संग आत्मबल केतौ टुटबो करैए आ केतौ लेबान होइत अप्पन रक्षा स्वयं करैत अपन जीवनकेँ बँचाइयो लइए। ऐठाम एकटा विचार आरो अछि, ओ अछि आत्मा छी की, किए ने अहूले डॉक्टरी चिकित्सा होइए। जखन शरीरक सभ अंगक प्रत्यारोपण हुअ लगल अछि तखन आत्मोक किए ने होइए? किए ने लोक बुधिविचड़ीमे लागल रहत। बुधि-विचड़ियेसँ ने विचारमे एकरूपता औत आ ओ मिलल-जुलल विचारधाराक रूपमे सामूहिक विचार प्रवाहित हएत।

अखन तक मिथिलाक किसान-परिवारमे शहर-बाजार जा नोकरी करैक धारणाक जन्म नइ भेल छल। एकर माने ई नइ बुझब जे परिवेश ओहन नइ बनल अछि जइमे देशक किसानक बेटा इंजीनियर बनि बाहर जा कऽ गाड़ीक ड्राइवरी नइ करै छैथ आ अपनाकेँ इंजीनियर घोषित करैत चालीस हजार डॉलर महिना नइ कमाइ छैथ। एकर माने एतबे नइ बुझब जे पहिने बड़का लोक, बड़का लोकक माने डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक इत्यादि, विदेश नोकरी करए जाइ छला आ अखन औंठा छाप देनिहार गरीब-गुरबा सेहो विदेश जा कऽ नोकरी करए लागल अछि। खाएर तइ सभसँ सुचित भायकेँ कोन मतलब छैन। कौलेजक पढ़ाइ, माने स्नातक, (बी.ए.) सम्पन्न केलाक बाद जखन परिवारक जिनगी अंगीकार करैक बीच सुचित भाय पहुँचला, तइसँ पहिनहि हुनक पिता बिआह-दुरागमन करा अप्पन अन्तिम सन्तानक परिवार रोपणक स्थितिमे सुचित भायकेँ पहुँचा चुकल छेलैन। तैबीच साले-साल, आइ पचास बर्खसँ प्रत्येक कातिक मासक दिवाली दिनसँ एक पनरहिया भागवत कथा अपना दरबज्जापर करबैत आबि रहल छैथ। दरबज्जाक एते महत्व तँ अछिए जे जँ कियो दरबज्जापर आबि कोनो बात कहै छैथ तँ ओ सत्य मानले जाइए। आनक मनमे माने सुनिहारक मनमे जे भेल होनि, मुदा सुशील कक्काक अपने मन अपने धिरकारि कहलकैन जे 'अनेरे कोन मायाक जालमे घोंसियाएल जा रहल छह। अही भागवतक मंचपर सँ समाजकेँ जना दिऐन जे अप्पन परिवारक जेते भार छल ओ सम्पन्न भऽ गेल। माने माता-पितासँ बेटा-बेटी धरिक, अपन परिवारक प्रति जवाबदेहीक भार मेटा गेल। आब तँ ओ भार ओइ बेकतीक भेल जेकर परिवार निर्माण हएब अछि। परिवारमे दू तरहक काज होइए, एक सृजनात्मक आ दोसर उपयोगक। माने उत्पादनसँ उपभोग धरिक। उपयोग आ उपभोगमे अकास-पतालक दूरी बनले अछि आ बनबो तँ कएले अछि। बाल-बच्चाकेँ कोन तरहक जीवन देल जा सकैए ओ तँ

निर्भर करैए परिवारक आमदनीपर, माने उत्पादनपर। मिथिलांचलक कृषिक ओ अवस्था बनियेँ गेल अछि जेकरा ढलानोन्मुख कहल जाइए, कोनो परिवारमे जँ एहेन विचारक जन्म होइए जे बेटा-बेटीक पढ़ाइ-लिखाइ, शादी-बिआहमे करोड़ोक खर्च करी आ माता-पिता ले साधारणो जीवनक बेवस्था उपलब्ध नहि करा सकिऐन। ई केतौसँ उचित नइ अछि। सुशील काका सुचित भायकेँ दबज्जापर बैसा माइयक सोझ, माने सुशील काका अपन पत्नीक सोझमे कहला-

"बौआ, दरबज्जापर एक पनरहिया भोज-भातक संग कातिक मासमे भागवत जहिना करैत एलौं हेन तहिना तोंहू निमाहैत चलिहह। पिता छियह तँए एते कहि दइ छिअ जे जहिना अप्पन बेदाग जीवन रहल तहिना तोंहू निमाहि चलिहह।"

अपना विचारे सुशील काका की कहलखिन आ सुचित भाय की बुझलैन, ई तँ दुनू गोरेक बीचक भेलैन तँए तेसर जे बुझैथ। मुदा पिताक विचार सुनि सुचित भाय बजला किछु नहि, बजबो किए करितैथ, परिवारक बीचक बेकतीक एक क्रम छी, जे सभक संग अछि। जीवनक हर क्षेत्र समयक संग संचरित होइत चलबे करैए। ओना, सुशील काका अपन विचार व्यक्त करैत ऐ आशमे रहबे करैथ जे बेटाक अप्पन मुहसँ सुनि नेने आत्माकेँ तुष्टि भेटत। तुष्टियो तँ तखने ने भेटैए जखन जीवनक पद्धति घोषित करैत कियो अपन जीवन स्थापित करैए। आत्माक तुष्टिक कारण ई जे विचारस्वरुप आत्मा एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीमे संचरित होइत अप्पन स्वरूप निर्धारित करैत चलैए। बेटाक मुहसँ सुनैक दोसरो कारण छेलैन, ओ ई छेलैन जे लोकक मनमे हजारो रंगक बातो अछि आ विचारक संग काजो अछिए, मुदा से तँ बजला पछातिये ने कएलपर नजैर दौड़त। जँ किछु करबे ने करब, तखन तँ ओहिना ने रहि जाएब जेना दुनियाँमे गाछ-बिरीछ, पोखैर-झाँखैड़, गाए-महींस अछि।

सभ तँ जनिते छी जे कर्मे धर्म आ धर्मे कर्म छी, तैठाम जँ कियो

अपन धर्मेमे बट्टा लगा बटमारि कऽ लैथ वा घाटा लग घटवारिये करैथ। ई तँ अपन-अपन मनक बीचक धार भेल। ओना, सुचित भाय, पिताक विचारसँ एक्को पाइ अलग नहि छला, किए तँ कौलेजक अध्ययनक क्रममे मिथिलाक परिवारक गढ़नक विशाल रूप पढ़ि चुकल छला, जइमे लूल्ह-नाँगर, अकलेल-बकलेल सभक मानवीय सम्बन्ध निहित अछि। जहिना धर्म ओ थिक जे धार्मिक जीवन प्रदान करए, तहिना कर्म ओ थिक जे धर्म बनि सदैत प्रवाहित होइत चलए। बजैक क्रममे सभ बजिते छी जे दुनियाँ फुसिआहक भऽ गेल अछि, मुदा अपने की छी से तँ अपने ने देखब।

किछु समय गुमा-गुमीक पछाइत सुचित भाय बजला-

"पिताजी, अखन धरिक धाराक अनुकूल जे धारणा, धारणा दुनू रूपमे– काजोक रूपमे आ विचारोक रूपमे, बनल आबि रहल अछि, तइ अनुकूल अपने कहलौं, जे पिताक शब्दसँ एको अक्षर कम-बेसी बुझिमे अबैत तखन ने किछु बजितौं, से तँ नहि अछि। अहाँ मुहसँ कहि भार दी वा नहि दी, मुदा परिवारक ऐगला भागक भागीदार हमहीं ने छी।"

जीवनक अन्तिम दौड़मे सुचित भाय पहुँच गेल छैथ। अपन जीवनसँ पूर्ण सन्तुष्ट छैथ। मनमे भेल जे सुचित भाय सन लोक जे पाकल आम जकाँ छैथ, माने भरपूर गुण सम्पन्न, ई नइ जे सड़ल-सड़ाएल आम जकाँ झुलि रहल छी, कखन खसब तेकर ठीक नहि। गामक रत्न जँ मानल जाए तँ ओ सुचित भाय छैथ। जेहेन जहिया समय रहलैन तेहेन तहिया अपन जीवन धारण करैत समयक संग चलैत आबि रहला अछि। एकाएक मन एते उत्तेजित भऽ गेल जे सुचित भाय ऐठाम विदा भऽ गेलौं।

दरबज्जेपर सुचित भायकेँ देखलयैन जे जेना अपन परिवारक नक्शा देखि रहला होथि तहिना बुझि पड़ला। कनी फरिक्केसँ कहलयैन-

"भाय, गोड़ लगै छी।"

धड़फड़ाएल लोक जकाँ पहिनहि केना कहि दतिऐन जे भाय किछु

पुछए आएल छी।

जहिना बजलौं तहिना सुचित भाय, बिऔहती कनियाँ-बर जकाँ हमर चेहरा निहारए लगला। सुचित भाइक नजैरिक दौड़ देखि अपनो सियनगर बर जकाँ रूप बना हुनका आगूमे ठाढ़े रहलौं।

❑

शब्द संख्या : 1267, तिथि : 13 अगस्त 2022

विश्वासहीन

किसान परिवारमे जन्मो भेल आ अप्पन जीवनो किसानी छीहे। जेठक अन्तिम समय, मड़ुआ रोपिकऽ बारह बजेमे घरपर आबि नहेलौं, धोलौं, खेलौं आ ओछाइनपर जा पड़ि रहलौं। जेना थाकल रही तेना नीन जल्दी अबैत, से नइ भेल। खानक खनिज खुननिहार जहिना पाथर तोड़ला पछातियो आँखिक नीनकेँ रोकैले नशा-पान करैए तहिना किसानो परिवारमे अछिए। जइ परिवारमे माल-जालक पोस नइ अछि, ओइ परिवार ले बेरुका उखड़ाहा माने दुपहरक पछातिक समय, छुट्टीक पहर होइते अछि जे अपनो अछिए।

ओछाइनपर पड़ल-पड़ल नीन दिस ताकी जे केतए नुका गेल अछि जे बारह बजे तक टहटहौआ रौदमे मड़ुआ रोपिकऽ एलौं हेन आ नीन पड़ाएल अछि। लगले मनमे उठल जे मड़ुए ने रोपिकऽ एलौं हेन। जइ मड़ुआक गिनती अन्नमे अछिए नहि। मुदा दू सालसँ सुनबे करै छी जे मड़ुआक गिनती मोटका अन्नमे भऽ गेल। विचारे विचारमे मन घुमि गेल। घुमि ई गेल जे धानमे तँ मोटका-महीका, नमका-छोटका सभ रंगक होइए मुदा कहबैत तँ अछि पतरके माने महीक्के अन्न। एक अन्न रहितो मोट-मेही वा नमहर-वौना भेल। मुदा मड़ुआ केना मोटका अन्न भऽ गेल से बुझिमे ऐबे ने कएल। धान दिस नजैर दौड़ाबी तँ मोट-मेही बुझि पड़ए, मुदा मड़ुआ दिस देखी तँ देखि पड़ए जे जँ मड़ुआ मोटका अन्न भेल तँ मोटाएल किए ने अछि। मड़ुआक विपरीत महीका महीका अन्न कोन भेल? मुदा

अपने मन कहलक, घोड़ाक दाना बदामो एकरा मानैले तैयार थोड़े हएत, जे हम मड़ुआकेँ मेही अन्न बनबैले तैयार छी।

मन तँ कछमछाइते रहए मुदा देहक थाकैन देहकेँ जँतने छल तँए पड़ल रही। कछमछाइत-कछमछाइत तीन बजेक समय पार भेलौं। ओना, धरमागती पुछी तँ स्कूल-कौलेज अपने नइ देखने छी। तँए कहब जे चौपट्टेनाथ छी सेहो बात नहियेँ अछि। खेती करैक लूरि अछिए, खाइ-पीबैक वौस[5] उपजाइये लइ छी, ई सभ करै छी भिनसुरका पहरमे, माने दुपहरसँ पहिने, तँए दुपहरक पछातिक समय खलिया जाइए, ओकरा पुरबैले बेररुपहर कियो गांजा-भांग, ताश-सतरंज वा जुआपर बैसै छैथ मुदा अपने से नइ करै छी। अपने यएह करै छी जे पँचकोसीमे केतौ जँ नाच-तमाशा होइए तँ तइ पाछू भरि-भरि राति गमा दइ छी। तहिना, महिनाक महिना दिन भागवत कथासँ रामलीला, रासलीला देखै-सुनैमे सेहो लगैबते छी। परोपट्टामे जेतए-केतौ कबीर पंथीक सत्संग-भजन होइए तँ तहूमे अरबैध कऽ जाइते छी। यएह ने अपना सभक किसान परिवारक जीवन अछि। ओना, पन्नालालक नौटंकी आ उमाकान्तक नाटकसँ लऽ कऽ भिखारी दासक नाच देखैमे सेहो मन लगिते अछि।

गाममे सोमेश्वर काका छैथ। अपन रूटिंग बना नेने छी जे जँ केतौ कोनो तरहक नाच-तमाशा सत्संग-भजनमे जँ नइ जा भेल तँ सोमेश्वर काका ऐठाम जा कऽ बेरुका समय बितबै छी।

हँ, आइ दुपहरमे मड़ुआक चास लगाकऽ आएले रही, जइसँ मनमे बेसी खुशी रहए तँए नीन पड़ाएल रहए आकि देह अपन थाकैनकेँ देहेमे पचा नीन रोकने छल, से बुझिमे ऐबे ने करए। किछु छी तँ दोसराक सिखौल ने अप्पन बुधि छी। जखन अपना सिखै-सिखबैक लूरि भऽ जाएत तखन ने से होइत। मुदा से तँ होइत स्कूल-कौलेज गेने, से तँ भेल

---

[5] **वस्तु**

नहि। एकलव्य जहिना अक्षर बोधक अभाव रहितो धनुरधर वोध सीख लेलक, तहिना अपने छी। धानक बीआ कहिया खेतमे पाड़ल जाइए, से तँ नइ बुझै छी मुदा बीआ पाड़ैक लूरि नइ अछि, मन से किए मानत। ई सभ लूरि अछिए। सोमेश्वर कक्काक शरणस्थली पेब जएह जीवन अछि, तहीमे मस्तीसँ रहिये रहल छी।

ओछाइनपर पड़ल उठैक विचार कइये रहल छेलौं कि पत्नी लगमे आबि डपैट कऽ बजली-

“केतेकाल सँ चाह राखल अछि आ अहाँकेँ ओछाइन छोड़ले ने जाइए, जेना लगैए देहमे सटि गेल अछि।”

भकुआएल तँ नइ रही मुदा ठकुआएल जरूर रही, तँए मुहकेँ बन्ने राखब नीक बुझलौं। ओना, ओछाइनपर सँ उठैक मन नइ हुअए, किए तँ बुझले अछि ने जे जीवनमे सभकियो सुख चाहैए। सुखसँ रहबे ने जीवन भेल। सुखो तँ सुखे छी, केतए सुखा जाएत आ केतए पनैप[6] जाएत तेकर ठेकान नहि अछि। आलसकेँ जैठाम जीवनक दुश्मन बुझै छी, तैठाम मन अलिसा सुख नइ पबैए, सेहो बात नहियेँ अछि। ई दीगर जे दिव्य सुखक अप्पन उच्च महत्व अछिए।

ओछाइनपर सँ उठि चापाकलपर नइ गेलौं, किए तँ पत्नी गिलासमे चाह आ लोटामे पानि लइये कऽ आएल छेली। मुँह-हाथ धोइ, लोटाक बाँकी पानि पीब चाह पीबए लगलौं। जहिना मुहमे चाह गेल तहिना मनमे चाह उठल जे आन दिनसँ भिन्न पत्नीक रूप किए छैन? किए डपैट कऽ बजली जे ‘चाह राखल अछि आ अहाँक देह ओछाइनमे सटि गेल अछि?’ रंग-बिरंगक विचार मनमे उठए लगल। मडुआक चास लगा आएल रही तँए मनमे खुशी रहबे करए। होइतो अहिना छै जे मन खुशी रहल तँ खुशी-खुशी काज केलौं आ खुशियालियो परसलौं। मनमे स्वत: बुझि

---

[6] **पोनैग**

पड़ल जे पत्नीक डपटमे आनन्द अछि। सभ पत्नी कमासुत पति चाहै छैथ। ई दिगर जे हिप्पीबला बर आ कोठाबला घर चाहैवाली सेहो बहुत छैथ। चाहबो किए ने करती? विवाह पद्धति साधारण एकरारनामा नइ ने छी, जिनगीक एकरारनामा छी किने। की पति-पत्नीक बीचक प्रेमकेँ बाँटल जा सकैए। ओना, सखो-सन्तान आ पत्नियोँकेँ लाड़-झाड़ करैक अधिकार नइ छैन, सेहो बात नहियेँ अछि। अपनोपर तँ सेवाक भार अछिए। तखन जँ ओ डपैट कऽ बाजबे केली तँ ओहो अपनाकेँ आन बुझि थोड़े बजली।

अखन तक पत्नी आगूमे ओहिना ठाढ़े छेली, जेना किछु अढ़ाइये कऽ जेती। भाय अढ़ाइयोमे अढ़ाइ तँ होइते अछि किने। चाह पीबैत-पीबैत मन खनहन भइये गेल छल। अगुआ कऽ बजलौं- “अनेरे केतेकाल रोकने रहब। सोमेश्वर काका ऐठाम जाइमे अबेर भऽ जाएत। झब-दे पान लगेने आऊ।”

जहिना बजलौं तहिना पत्नी पान आनए गेली। जाबे अपने तैयार होइ-होइ तइ बिच्चेमे पत्नी पान नेने आबि बजली- “केतौ अनतए नइ ने जाएब।”

पान खेला पछाइत मनक फूलक पाँखुर फलकिये गेल छल। बजलौं- “कहुना छी तँ पुरुख छी किने। गाममे रही कि बाहर जाइ, मुदा घर तँ अहींक ने छी। घरनीए घर किने।”

पत्नीक मनक गहवरमे जे सिनेह नुकाएल छेलैन ओ प्रस्फुटित हुअ चाहलकैन मुदा तेकरा ओ मनेमे दाबिकऽ रखने छेली। ओ सिनेह छेलैन पारिवारिक जीवनक उपार्जनक। अन्न कोनो किए ने हुअए मुदा अन्न तँ जीवनक सभसँ पैघ प्राणदाता छीहे। जखने जीवनदाताक उपार्जनकर्ता मनुक्ख स्वयं बनि जाइए तखने जीवन चक्रक गतिसँ चलए लगैए। धड़फड़ाएले बजलौं- “आब नइ रूकब। खेती-पथारीक बहुत बात-विचार सोमेश्वर काकासँ करब अछि।”

पत्नी बजली किछु नहि, मुदा हुनक नजैरिक अंजादसँ बुझि पड़ल जे जेबाक आदेश दऽ रहली अछि। उठिकऽ ओतएसँ विदा भेलौं।

जहिना सोमेश्वर काकासँ भेँट करए घरसँ विदा भेलौं तहिना एक्के सुरकुनियामे ओइठाम माने सोमेश्वर काका-ऐठाम पहुँच गेलौं। कनी हटलेसँ कक्काक नजैर दिस तकलौं तँ बुझि पड़ल जे मनमे कोनो विचार घुरिया रहल छैन, जे केकरो कहैले ताकि रहला अछि। कनी हटलेसँ बजलौं- "काका, गोड़ लगै छी।"

अन्तर्यामी जकाँ सोमेश्वर काका बुझि गेला जे रघुनाथ भरिसक कोनो नब चास लगा आएल अछि तँए मनमे बासक विश्वास उपकल छै। ओना, अपनो मनमे सोमेश्वर काकाकेँ रहबे करैन जे कमसँ कम एको गोरेकेँ अप्पन जीवनक हिसाब दइये दिऐन। जखन जिनगीक कोनो ठेकान नइ अछि तखन जँ मनक विचार मनेमे रहि जाए, सेहो नीक नहि। बुझल बात अछिए जे रावण सनकेँ सेहो सेहन्ता लगले रहि गेलैन जे जीवनक काज अधुरा रहि गेल जे मने संग जा रहल अछि। जखन रावण सनकेँ मन नइ भरल तखन अपने कोन खेतक मुरै छी।

जहिना साल भरिक बच्चा, जे उठिकऽ ठाढ़ होइक अवस्थामे रहैए, ठेहुनक बलेँ अंगना-घर घुमि-फिरि टहैल-बुलि लइए, तेहेन बच्चाकेँ जहिना माए खेबाकाल अप्पन आँगुरसँ धरतीपर इशारा करैत बैसैले कहैए तहिना सोमेश्वर काका आगुएक धरतीपर माने चौकीपर लगमे बैसैले कहलैन। दुनू हाथ जोड़नहि रही जे सोमेश्वर काका आसिरवाद देता तखन ने छातीपर सँ दुनू हाथ हटाएब। मुदा से भेल नहि, तैबीच सुचिता काकी चाह नेने दरबज्जापर पहुँच गेली।

पत्नीकेँ आगूमे चाह नेने ठाढ़ देखि सोमेश्वर काका कहलखिन-

"जहिना अहाँकेँ काजक चाह अछि तहिना अपनो काजेक चाह अछि, तँए अहूँ अपन चाह एतइ नेने आऊ। संगे-संग दुनू गोरे चाहो पीब

आ गपो-सप्प करब।”

सुचिता काकी नाकर-नुकर नइ केली। पतिक सोझमे आन स्त्रीगण जकाँ चाह पीबैसँ नहि धकमकाइ छैथ। ओना, अपना मनमे ई होइत रहए जे सभसँ पहिने काकाकेँ अप्पन बात कहिऐन, मुदा लगले ईहो हुअए जे जखन सोमेश्वर कक्काक आगूमे बैसल छी तखन हुनका मनमन्त केनहि बिना केना किछु बाजब। तँए मुँह बन्ने राखब नीक बुझी। ओना, मनमे ईहो होइत रहए जे अनेरे की पुछबैन। केता दिन मड़ुआ खेतीक विषयमे कहनहि छैथ। ईहो तँ वएह कहने छैथ जे मड़ुआ बीआ उपजाबैमे पनरह दिन पानिक पटौनी साँझ-भोर लगैए। पटौनी ले खेतमे वा सुखाएल-पोखैर-झाँखैरमे कूप खुनै छला, जइमे पनरह-बीस घैल पानि प्रतिदिन होइ छेलैन। ओहन खेती, तहूमे बिनु खेतबला लेल जे उपजाक अधा-अधीपर बटाइ करै छला। उपजा की तँ मड़ुआ, जे अन्नक श्रेणीमे अछिए नहि। अपना सभ ओही पूर्वजक ने सन्तान छी। जे गबै छला जे ‘मड़ुआमे जब ढैंसर भेल, सभ परिवार परमेसर गेल।’

बिच्चेमे सोमेश्वर कक्काक मन बजैले चटपटा रहल छेलैन। हुनकर चटपटी देखि नइ रहल गेल। बजलौं- “काका, पहिने अपने मुँहक परसादी बाँटि लिअ। पछातिक नम्बर हमर रहत।”

जहिना छनाकेँ माने मक्खनकेँ नब वस्त्रमे लपेट पानिकेँ निचोड़ि-गाड़ि मल-मल रूप सजैत, तहिना सोमेश्वर काका बजला- “रघु, अपन बेकतीगत जीवन हुअए कि पारिवारिक आकि सामाजिके, कखनो हीन विचार वा विश्वासकेँ लग नहि आबए दिऐ।”

❑

शब्द संख्या : 1405, तिथि : 16 अगस्त 2022

बुलन्दी

जहिना दिन-राति संग मिलि बारहो घन्टा संग रहि चौबीसो घन्टाक बारहो मौसमक बीच बसन्त गीत गबैत अछि तहिना अस्सी बर्खक रूपचन काका रूपौली गाममे, जे मध्य मिथिलाक बीचक गाम छी दिन-रातिक समय बितबै छैथ। बाढ़ि-रौदी, सुखार-दुखार आइये नहि, सभ दिनसँ अजन्मा सन आने गाम जकाँ रूपौलीमे सेहो रहबे कएल अछि। भुमकम, ठनका ई तँ कहियोकाल होइए, तँए बिसरबो नीक नहियेँ हएत मुदा अनिवार्य रूपमे नहियोँ मानल जा सकैए। 1934 इस्वीक जनवरी मासक तिलासकराँइतसँ एक दिन पूर्व, ओइ समयमे तँ भुमकमक नाप-नूप नहि छल, मुदा नोकसानक पैमाना तँ कएले जा सकैए। नेपालक काठमाण्डू, जे पहाड़क ऊपर बसल शहर छी, तेकरो छाती हिलेबे नइ तोड़बो केलक। तैसंग नेपालक तराईसँ लऽ कऽ बिहारक मुंगेर जिला तकक धरतीकेँ सेहो तेना हिलेलक जे घर-दुआर, गाछ-बिरीछ, जीव-जन्तु सभक अवघात भेल। ओहिना दोसर बेर भुमकम भेल 1988 इस्वीमे। ताधैर भुमकमक नाप-जोख आबि गेल छल। मुदा जहिना चौंतीस इस्वीक भुमकम तहिना अट्ठासी इस्वीक भुमकम जँ मानि लइ छी तँ औसतन पचास बर्खपर ओहन भुमकम हएब मानि लिअ। से मानि लिअ बितलाहा, माने भेलहामे, ऐगलाक कोनो गारंटी बेपारीक खलिया डिब्बा जकाँ नहियेँ देल जा सकैए। ई तँ भेल एक नम्बर भुमकक, तइसँ निच्चाँ नअ नम्बरक संख्या अछि। एक नम्बरसँ दोसर नम्बरक आक्रमण

तीस हजार गुनाक अछि। खाएर, ओना ई भेल अपना ऐठामक भुमकमक घटना। एहेन-एहेन आफद-आसमानीकेँ मैथिल आ मैथिलानी मोजर कहिया देलैन जे अखनो देता कि देती।

अपना गतिये जहिना प्रकृति चलैए तहिना रूपौली गामो चलैए आ रूपौली गामक रूपचन काका सेहो चलिते छैथ। बाढ़िक इलाका छीहे। कहब जे धारे-धार बाढ़ि अबैए आ चलि जाइए से नहि, मिथिलांचलकेँ पहियाकऽ उत्तरसँ शुरू करैए आ दच्छिनमे गंगामे जा ठेका दइए। वएह गंगा ने जीवनक वैतरणी सेहो पार करै छैथ। बुझले बात अछि जे सतासीक बाढ़िमे गंगासँ उत्तर झंझारपुर तकक पानिक एक लेभेल भऽ गेल रहइ। माने एकरंग जलो-दीप छल। ई तँ भेल बाढ़िक गति, मुदा तैसंग झाँट-बिहाड़ि सेहो अछिए। मौसमक हिसाबसँ भरि गरमी माने मार्चसँ नवम्बर तक दू रूपमे झाँट-बिहाड़ि अबैए। सुखारक समयमे सेहो आ बरसातक समयमे सेहो अबिते अछि। अप्पन रूपक ठेकान एकरो ने अछि, माने केते विराट रूपमे औत आकि साधारण रूपमे।

तँए कहब जे मैथिल ऐ सभसँ डेरा जेता से बात नहि अछि। मिथिला-भूमि अखनो वएह भूमि अछि जे परिवार नियोजन सन सरकारक योजनाकेँ कोनो मोजरे ने दइए, आ अप्पन जनसंख्याक बढ़वारिकेँ बे-लगाम घोड़ा जकाँ छोड़ि देने अछि। एकर माने ई नइ बुझब जे मिथिलांचल मनुक्खेक उपजा टाक भूमि छी। मिथिलाक भूमि जीवनक विचारक संग जीवन-निर्माणक भूमि सेहो छीहे। बुझल बात अछिए जे जेते मन बढ़त तेते ओझरी जिनगीमे सेहो बढ़बे करत।

खाएर जे अछि, अपना ऐठाम झाँट-बिहाड़ि मात्र समुद्रेटा सँ नहि, धरतीसँ सेहो पैदा लइए। चैत-बैशाखक सूर्जक तापसँ तपित भऽ धरती बिर्ड़ो-बिहाड़िक सृजन सेहो करैए। जेकर फलाफल मिथिलांचलकेँ ई भेटैत रहल जे गामक-गाम चैत-बैशाख आ जेठक आगिमे स्वाहा भऽ जाइ छल आ लोक गाछ-बिरीछक संग-रौद-तापमे मासो-मास जीवन-

यापन करै छला। तहिना वरसातक समयमे सेहो झाँट-बिहाड़िक प्रकोप होइए, तइले सभकेँ बुझले अछि जे हथियाक झाँट केहेन होइत आबि रहल अछि, गाम-गामक घर-दुआर खसि पड़ै छल आ लोक झाँट-बिहाड़िमे खुलल असमानक बीच मासो-मास दिन गुदस करै छला, अखनो करै छैथ। यएह छी मिथिलाक साधना भूमि जे दुनियाँमे केतौ ने अछि। ने मिथिलांचल जकाँ उपजाऊ भूमि अछि आ ने मौसम। अन्नसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारी, फल-फलहरीक जे बढ़वारि मिथिलांचलमे अछि ओ आनठाम नइ अछि। अपना ऐठाम जहिना अन्नक खेती बारहो मास होइए, तहिना तीमन-तरकारी, फल-फलहरीक सेहो अछि। बरहमसिया जहिना फल अछि तहिना फूल सेहो अछिए।

प्रकृति जहिना रंग-रंगक जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ चर-अचर निरमबैए तहिना मनुक्ख बुधिसँ लऽ कऽ बेवहार सेहो निरमैबते अछि। अही प्रक्रियाक बीच रूपौली गामक रूपचन काका छैथ। कौलेज छोड़ला पछाइत रूपचन कक्काक मन विचारसँ एते भरि गेलैन जे गामक बीच एकलव्य जकाँ अपन साधना भूमि निर्धारित केलैन। ओना, कौलेज तक रूपचन कक्काक जीवनमे कोनो नबपन नइ आएल छेलैन मुदा कौलेज-जीवनक पछाइत अपना जीवनकेँ तीन दिशामे विभाजित केलैन। पहिल अपन बेकतीगत जीवन केना पारिवारिक बनत आ पारिवारिक जीवन केना सामाजिक जीवन बनि पथ-प्रदर्शन करत।

मध्यम श्रेणीक किसान परिवारमे रूपचन कक्काक जन्म भेल छैन। शुरूमे पिताक बेवहार माने रूपचन कक्काक पिताक, ओते नीक नहि छेलैन, जेतेकक जरूरत परिवार-समाजमे अछि। मुदा बेटाकेँ माने रूपचन काकाकेँ, जखन कौलेजमे नाम लिखा देलखिन तखन विचारक संग बेवहारोमे बदलाव अनलैन। बदलाव अनैक परिस्थिति ई बनलैन जे बेटाकेँ घरसँ बाहर पढ़ैले पठाएब, एक समाजसँ दोसर समाजमे जाएत, केना मेल-मिलानसँ रहत इत्यादि। ओना, तैबीच जे संघर्ष रूपचन

काकाकेँ भेलैन ओ नीक जकाँ एकपीढ़ीए-लोक बुझलकैन। जेना, मध्यवर्गीय किसान परिवारमे कौलेजक शिक्षा केतेक भारी छल, ओ पछिले पीढ़ीक लोक ने देख-बुझिकऽ वा भोगनिहारे ने नीक जकाँ जानि रहला अछि।

रूपचन काका अप्पन जीवनक शुरूआत किसानी कार्यसँ कए किसानक रूपमे जीवन स्थापित केलैन। दुनियाँ दिस ताकब छोड़ि अपना दिस नजैर निखारलैन। ओना, कौलेजक जीवनमे रूपचन काका एते सुनिकऽ सीख नेने छला जे भूत-सँ-भविष्य धरि केना मन दौड़ैए। मुदा अनुकूल स्थान नहि भेटने विचारकेँ विचारेक पौतीमे सैंतिकऽ रखने रहला।

जहिना कोनो घटना स्थलपर देखल घटना, महिनो-सालो बाद धक-दे मोन पड़ि जाइए तहिना रूपचन काकाकेँ अपन जीवनक दिशा धक-दे मोन पड़लैन। किसानियोँक तँ विराट रूप अछिए। तइमे अपने बसि ब्रजवासी जकाँ केना जीब, यएह मूल प्रश्न छी।

हथिया नक्षत्र चलि रहल अछि। उत्तरवारि टोल कोबी बिआ आनए गेल रही। टोपर बान्हि मेघ लटकल छल, मुदा गामेक काज तँए किए परहेज करितौं। मेघे छी, बरैसियो सकैए आ नहियोँ बरैस सकैए। मुदा से भेल नहि, रूपचन कक्काक घर लग जखन गेलौं कि बरसाक बून तेज भेल। दौड़कऽ रूपचन कक्काक दरबज्जापर पहुँचलौं।

रूपचन काका दरबज्जापर बैसल एकटा बाल्टीन आगूमे रखने रहैथ। जइ बाल्टीनमे दरबज्जाक चुबाठ-पानि टप-टप छतसँ खसैत रहइ। दरबज्जापर पहुँचते रूपचन काका बजला-

“तूँ सभ ते नबका लोक भेलह। देहपर गमछा रखिते ने छह।”

कहि, रूपचन काका एकटा गमछा देह पोछेले, माने पानि जे पड़ल रहए तेकरा पोछैले, देलैन।

देह पोछि, गमछा राखि रूपचन काकाकेँ हियासए लगलौं। दू ढंगसँ हिसास करए लगलौं। पहिल जे रूपचन कक्काक प्रति अपन विचार केहेन अछि आ दोसर, गीता वा आध्यात्म सोच जकाँ आध्यात्म आ जीवनक सम्बन्ध रूपचन कक्काक केहेन छैन। तइ बीचमे रूपचन काका बजला-

"चाह पीबह?"

ओना, अपना मनमे भेल जे कहि दिऐन 'नइ पीब', मुदा अपने मन रोकैत विचार देलक जे जँ कहीं रूपचन काका अपनो चाह नइ पीने होथि आ हमरा देखि अपनो चाहक आग्रह भेल होइन। तँए, समाजेक लोक जकाँ अपनो विचार भेल जे सभसँ भला चुपे रहब नीक। चुप तँ भऽ गेलौं मुदा मन दू-बटियामे फँसि गेल। एक दिस देखी जे रूपचन काका अपन जुआनीक तावमे बाजि रहला अछि, जुआनीक ताव भेल नित्य सृजनमान शक्ति जागब। आ दोसर दिस देखै छी जे अखन तक अपना रहैले दरबज्जो ने भेलैन अछि.! देखिते छी जे बाल्टीन आगूमे रखने छैथ, जइमे छप्परक पानि चुबि रहल छैन। कबीर बाबाक दू पाटनक बीच जकाँ अपनो मन फँसि गेल। तइ बिच्चेमे रूपचन काका बजला- "ऐ बेर हथिया नक्षत्र बीतला चारि दिनक पछाइत दूर्गापूजा शुरू हएत।"

अपने यएह बुझै छी जे हथिया आ आसीनक दूर्गापूजा संगे-संग चलैए। तइ बीचमे रूपचन काका की बाजि देलैन। अबाक् भेल बैसल रहलौं। रूपचन कक्काक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। हथिया नक्षत्रक चारि दिनक पछाइत दूर्गापूजा शुरू हएत, तेकर खगता अखन कोन अछि। अखन तँ खगता अछि जे बरसाक पानि जे दरबज्जाक बीचमे चुबि रहल अछि तेकर निराकरणक। मन नइ मानलक। बजलौं-

"काका, आब तँ अन्तिम समयमे पहुँच गेलौं। अखनो तक दरबज्जाक यएह गति अछि।"

हमर बात सुनि रूपचन काका मिसियो भरि मर्माहत नहि भेला। जखन मर्माहत नइ भेला तखन घबड़ाइक जरूरते की। जेना जीवन-पद्धतिक अनुकूल अपनाकेँ पेब रहल छला। गाम-समाजक रीते अछि जे एक-दोसर लग कानियोँ-कानि आ हँसियो-हँसि बजबे-भुकबे करैए। ऐठाम ई नइ बुझब जे महिलाटा केँ कहै छिऐन आ पुरुखकेँ नहि कहै छिऐन। मौगमेहरा पुरुखोक संख्या कि कम अछि। तिनका जरूर कहै छिऐन। रूपचन काका बजला-

"बौआ, की कहबह। जिनगीक मूले जेना लोककेँ छुटल अछि, जइसँ जीवन सेहो दुरुह भइये गेल अछि। तखन तँ..?"

मने-मन विचारए लगलौं जे जिनगीक मूल की भेल? बजलौं-

"से की काका?"

बुलन्दीसँ रूपचन काका बजला- "बौआ, जीवनक मूल आवश्यकतामे भोजन अछि। तोंही कहह जे केतेक लोककेँ उचित भोजन भेटैए। हम ई नइ कहै छिअ जे केतेकेँ उचितोसँ बेसी भेटैए। तैठाम जँ घरक छत नहियेँ बनल अछि तँ की हेतइ। जएह अछि तेहीसँ ने जिनगीक निमरजना करब।"

रूपचन कक्काक विचार तीर जकाँ हृदयकेँ बेध देलक। अनायास मुहसँ निकैल गेल- "हँ, से तँ अछिए।"

हँसैत रूपचन काका बजला- "बौआ, जहिना अपने बुलन्दीसँ जिनगी पार केलौं तहिना तोंहूँ बुलन्दीसँ जिनगी पार करह, यएह हमर शुभकामना छह।"

❑

शब्द संख्या : 1329, तिथि : 19 अगस्त 2022

अप्पन साती

रमबतिया गामक चौक। भिनसुरुका आठ बजि गेल छल। नीलकण्ठ काका अपन समयानुसार चौकपर पहुँच गेल छला। ओना, चौकक चाहक दोकान तीन बजे भोरेसँ शुरू भऽ जाइए मुदा सोना-चानी, कपड़ा-लत्ताक दोकान आठ बजे खुजैए। स्कूल भलें दस बजे किए ने खुजए मुदा सभक सहयोगे भोरेसँ चौक तँ चलिये रहल अछि।

आब कहब जे जखन चौकक चाहक दोकान तीन बजे भोरेमे खुजि जाइए तखन नीलकण्ठ काका आठ बजेमे किए जाइ छैथ?

नीलकण्ठ कक्काक अपन सोच छैन तँए अप्पन सोचानुसार चालि छैन, जइकेँ पकैड़ नीलकण्ठ काका चलि रहल छैथ। सोचानुसार चालि ई छैन जे सौंझुका ताड़ी पीबनिहारकेँ तीन बजे भोरमे चाहक तृष्णा जगै छै, तँए पहिने ओ पहुँचैए। सोझे चाहेटा पीबैले लोक थोड़े चौकपर अबैए। चाहक दोकानपर बिनु बजौल पाँचगोरेसँ गपो-सप तँ करिते अछि। तहूले ने लोक चौकपर अबैए। अधरतिया समय रहिते छै तँए दिनुका काज अखन हेबे ने करत, तखन तँ भेल जे निसचिन्तीक समय छीहे। तृष्णा तृप्तिक लेल चाह पीबिते अछि। मन शान्त भेलो पछाइत जँ लोक निसचिन्तसँ अपनो जीवन गाथा नइ गाओत तखन गाओत कखन। गामेक चौक छी, जहिना-जहिना दोकानक कड़ी बढ़ैए, तहिना-तहिना गहिंकीक आबा-जाही सेहो बढ़िते अछि। जइसँ विचारोक कड़ी चलिते अछि। सौंसे गामक समाचार, ऐठाम समाचारक माने घटना विशेषसँ अछि, सामान्य जीवनसँ नहि अछि, एकठाम बैस लोककेँ भेटिये जाइए।

आठ बजे होइत-होइत गामक चित्र-विचित्र सभ समाचार चौकपर पहुँचिये जाइए। तँए नीलकण्ठ काका अप्पन चाह पीबैक समय, आठ बजे बनौने छैथ। ओना, चौकपर बैइसैक अड्डो चाहे टोकानटा कें मानल जा सकैए। बाँकी दोकान एकभग्गू अछि तँए ओइठाम एकभग्गूक जमाव रहैए। एकटा बात आरो पुछि सकै छी, ओ ई जे चाहक चलैन एहेन भऽ गेल अछि जे कोढ़ियो-काहिलो जखन ओछाइनेपर मोरनिंग-टीक सेवन करैए आ नीलकण्ठ काका सन पुरान उमेरक लोक आठ बजेमे चाह पीबए चौकपर किए जाइ छैथ? नहि, बात दोसर अछि। ओ अछि गामक समाचारक समीकरण सुनए जाइ छैथ, चाह तँ एकटा बहाना छिऐन। ओ नीक जकाँ जानि रहला अछि जे रूपैआ-दू-रूपैआक गिलास वा कपक वस्तु छी चाह, तहूमे एकरूपता नइ अछि। अनेको सीढ़ीमे चाह बनितो अछि आ बिकरियो भऽ रहल अछि। जखने चाहक दोकानपर जाएब कि दोकानदार पुछि देता, 'कोन चाह पीब?'

खाएर जे जेतए अछि से तेतए अछि तइसँ नीलकण्ठ काकाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब एतबे रखने छैथ जे चाहे रूपैआ घटिया भेल हुअए आकि चीजे-वौस घटिया भऽ जाए, मुदा अपन जे बन्हौआ जीवन अछि, बस तहीमे ने चलैक अछि। बुझिते छी जे परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे गुणगरे वस्तु किए ने हुअए मुदा जँ ओकर दाम कम छै तँ ओकर पूछ बाजारमे कमि जाइ छै आ अगुणशीलो आकि अगुणकारियो वस्तु जँ महग छै तँ ओकर पूछ बढ़ि जाइ छइ। यएह तँ प्रचार माध्यम छी, जे तीतकेँ मीठ बनबैए आ मीठकेँ तीत। मीडियो युगक जे लक्षण अछि, सेहो तँ देखेबे करत किने।

गामक चौकपर नीलकण्ठ काका चाह पीबिते रहैथ कि दू गोरेक बीच चाहे दोकानपर घोंघाउज शुरू भेल। एकगोरे अपन विचार दइत जे चाहे दोकान ने गामक चौक बनौलक, तँ दोसर गोरे विचार दइत जे चाहो दोकानकेँ चौकपर कोनो मोजरे अछि...। तेकरे घोंघाउज हुअ लगल।

लतिआहे[7] जकाँ विचारो आ गप्पो-सप्प अछिए। माने ई जे जहिना लत्ती अपने पैरपर तँ नहि मुदा धरतीए धेने आकि कोनो आलमे, आलम भेल सहयोगी, भेटने दिन-राति तँ बढ़बे करैए, तहिना दुनू गोरेक बीच माने मखानलाल आ सिंगहारलालक बीच गप-सप्प बढ़ि गेल। मखानलाल बाजल-

"कोनो गाम-घरमे जाबे चाहक दोकान नहि खुजत ताबे चौक-चौराहा नइ बनत। तँए चौक-चौराहाक निरमानकर्ता चाहक दोकान भेल।"

सिंगहारलालकेँ तामस उठि गेलइ। ओना, तामस उचिते उठलै जे जाबे धरि गाम-गाममे बेपारीक लेन-देन नइ शुरू हएत ताबे चौक-चौराहाक मोले की। ऐठाम ई नइ बुझब जे गाम-गामक वौससँ लऽ कऽ गहना-जेबर धरिक लूट बाहरी लोक कऽ रहल अछि। ..सिंगहारलाल बाजल-

"पानिमे की मखानेटा होइए जे सभ तर-ऊपर होइए।"

ओना, गप-सप्प ओहन लोकक बीच भऽ रहल छल जे पानियेँमे सँ पाइकेँ छानि अनैए आ पानियेँक रसमे माने ताड़ी-दारूमे, तीतैत-भीजैत गमबैए। अपना विचारे मखानोलाल बाजल आ सिंगहारोलाल बाजल।

कातमे बैसल नीलकण्ठ काका दुनू गोरेक विचार सुनि मने-मन मगन भऽ रहल छला। मगन होइक कारण अपना मनेमे विचार उठि गेलैन जे मिथिलांचलक डोह-डाबरसँ लऽ कऽ चौर-चाँचर, पोखैर-झाँखैर, मरल-धार, मरल धार ओ भेल जे जेकर धारा बन्न भऽ गेल आ पोखैर जकाँ बीच-बीचमे बनि गेल अछि। तैसंग गाम-गाममे सड़क बनने सेहो पानिक जमाव बढ़ि गेल अछि। प्रश्न मखानक अछि। मखानक खेतीक योग केते जलकर अछि। अखन तक जे मखान उपजबैक तकनीक रहल अछि ओ

---

[7] **लत्तीनुमा**

केहेन रहल अछि, आ नब तकनीकक अनुकूल जे खेतीकेँ सीमित जाइतिक बीच, पहिलुका ढंगसँ, कएल जाएत तखन लाभक अंश केते रहत.? अखन बेसी नहि। माने अखन आन्ध्र प्रदेशक झिंगा आ इलिस माछ नीक कि अपना ऐठामक रोहु-भाकुर नीक, से बादमे। अखन अनेरे किए समय दुरि करब जे सपेता (मालदह) जकाँ रोहु माछो हजार बरख पहिने जेहेन होइ छल तेहने अखनो होइए। सभ चीजमे नब तकनीक आएल, माने सभ चीजक विकसित रूप सोझमे आएल आ अपना सभ ताबे स्वर मिलानी करैत गबैत रही जे 'सभ सखी सासुर गेल हमरा लेल चैत पड़ि गेल।'

चाहक दोकानपर तँ दर्जनो रंगक समाचार दर्जनो लोकक रहिते अछि। मखानोलाल आ सिंगहारोलालकेँ गुलटेन ललकारिकऽ कहलक-

"चाहक दोकानकेँ ठट्ठा बुझै छहक। अपन-अपन मुँह बन्न राखह। दोसरो-तेसरो गप-सप्प हएत कि तोरे दुनू गोरेक घोंघाउज लोक सुनैत रहत।"

गुलटेनक विचार सुनि दुनूगोरे चुप भऽ गेल। चुप्पो केना ने होइत। समाज तँ समाज छी। अपनो विचार लोक बँटैए आ लोकोक विचार समटैए। बेकतीसँ लऽ कऽ परिवार, समाज धरि अछिए। आजुक जे स्थिति अछि, तइ अनुकूल सत्यकेँ पकैड़ जखन डेग उठत तखन ओ सही धरतीपर पड़त।

मखानलाल आ सिंगहारलालक बीचक गलगूल नीक जकाँ शान्तो ने भेल छल कि चाहक दोकानक आगुएमे मनसुखलाल जोर-जोरसँ बेटाकेँ कहैत- "इस्कूल जेमे कि नहि?"

बेटा, दुलारचन बजैत- "इस्कूल नइ जेबह, मोबाइल कीनि दाए, गामेपर असगरे पढ़ब।"

नीलकण्ठ काका गुलटेनकेँ कहलखिन- "गुलटेन, कने बहराकऽ

नीक जकाँ बुझक तँ, कथीक गलगूल होइए।”

गुलटेनक मनमे उठल, अनेरे अनकर कहा-कहीक मोटरी अपना सिरपर किए लेब। नीक यएह हएत जे मनसुखलाल दुनू-बापूतकेँ नीलकण्ठ कक्काक सोझामे पहुँचा देब। गुलटेन सएह केलक। मनसुखलाल दुनू-बापूतकेँ नीलकण्ठ कक्काक आगूमे पहुँचा, अपने कातमे ठाढ़ भऽ गेल।

नीलकण्ठ काका मने-मन विचारिये रहल छला जे पहिने मनसुखलालकेँ पुछिऐ आकि दुलारचनकेँ, तइ बिच्चेमे मनसुखलाल अपने फुरने बाजल-

“काका! की कहब, बीत भरिक छौड़ा भोरे-भोर ठकि लेलक।”

मनसुखलालक विचार सुनि नीलकण्ठ काका मने-मन विचारिये रहल छला जे मनसुखलालकेँ पुछिऐ जे की ठकि लेलकह? मुदा बिच्चेमे मनसुखलाल दोहराकऽ बाजल-

“काका, चाह-बिस्कुट खुआ, छौड़ाकेँ जखन इस्कूल जाइले कहलिऐ तखन कहलक- ‘कौंपी नहि अछि।’ संगे आनि चौकपर कौंपी जखन कीनि देलिऐ, आब कहैए जे मोबाइल कीनि दाए घरेपर पढ़ब।”

विषयक गम्भीरता देखि नीलकण्ठ कक्काक मनमे उठलैन जे ने चुप रहब नीक हएत आ ने बाजब। बाप-बेटाक बीचक प्रश्न अछि। तहूमे एक अबोध, दोसर सबोध। सबोधक तँ उचित बनिते अछि जे अबोधकेँ सबोधि रास्ता धड़ाएब। विचारमे मोड़ दैत नीलकण्ठ काका बजला-

“मनसुख, बालबोध बेटा छह, कहुना बौस-बासिकऽ इस्कूल धड़ावह।”

नीलकण्ठ कक्काक विचार सुनि मनसुखलाल अपन बेटाकेँ अगुएने घर दिस विदा भेल। गुलटेन बाजल- “काका, की कहब! जेहो ने होइ-कऽ अछि सेहो सभ होइए।”

हँ-हूँ बिना बजनहि नीलकण्ठ काका मने-मन विचारए लगला। विद्यालय बच्चा जाए वा नहि जाए? एकाएक नीलकण्ठ कक्काक मन उनैटकऽ ओइ धरतीपर पहुँच गेलैन, जैठाम सरकारी विद्यालयकेँ पंगु बना, शिक्षाकेँ बेपारीकरणक दिशा दिस मोड़ल गेल। जइसँ समाज-तंत्र कमजोर पड़ल। महाविद्यालयसँ विश्वविद्यालय धरि अराजक स्थिति बनि गेल। तीन-तीन-चारि-चारि सालक परीक्षा रूकि गेल। सर्टिफिकेटक बिकरी-बट्टा शुरू भेल।

मनक विचार नीलकण्ठ काकाकेँ तेते धधैक गेलैन जे जोर-जोरसँ बाजए लगला- "कियो अप्पन साती समाजमे बाजह वा मुँह चुप राखह, मुदा हमरो तँ एते सामाजिक सरोकार अछिए जे अप्पन विचार समाजक बीच राखी।"

नीलकण्ठ कक्काक गर्जन सुनि मनमे भेल जे ओइठाम माने नीलकण्ठ काका लग, पहुँचब जरूरी अछि। अपने घरेपर रही। चौकक बगलेमे अपन घर अछि। मुदा अपने मन पाछुओ तकए तँ हुअए जे परसू साइरिक बिआहमे जाएब जरूरी अछि। तहूमे बेचारी बिआहक पराते अमेरिका चलि जाएत। नीलकण्ठे काका छिआह, जँ कहीं गपे-सप्पमे मारि फँसा लेलैन तखन कोट-कचहरी देखब आकि साइरिक बिआह देखए जाएब.? मन आगू-पाछू करिते रहए कि नीलकण्ठ काका अपने चुप भऽ गेला। जइसँ गरजैत मेघक गर्जन जकाँ, जे वायुमण्डलमे अनेरो ढनढनाइत रहैए वा शान्ते रहैए, तहिना सभ शान्त भेल।

❑

शब्द संख्या : 1287, तिथि : 22 अगस्त 2022

खिच्चड़ि

साइठ बर्खसँ जहिना रामसेवक मोतीलालकेँ जनैत-चिन्हैत तहिना मोतीलाल सेहो रामसेवककेँ जनैत-चिन्हैत। कहब जे दुनूक चर्च किए केलौं? नहियोँ करब ठीके होइत, किए तँ दुनूक बीच दोस्ती वा कोनो आने सम्बन्ध रहल होइन। ठीक। मुदा तँए एहेन सम्बन्ध नहि अछि जे एक अपनत्व रूपेँ देखैत होथि आ दोसर अ-अपनत्व रूपेँ देखैत होइथ। खाएर तइसँ रामसेवके आकि मोतीलालेकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अपन साइठ बर्खसँ अबैत सम्बन्धक। स्वतंत्रतासँ पहिनौं आ पछातियो, समाजक जागरणक लेल गाम-गाममे सभा-सोसायटी होइ छल, जइमे भाग लेलासँ सम्बन्धमे बढ़ोत्तरी दुनूक बीच सेहो होइत रहलैन।

ओना, दुनू गोरेक माने रामसेवकोक आ मोतियोलालोक घर ने एक गाममे आ ने अड़ोस-पड़ोसमे छैन। अड़ोस-पड़ोसक माने भेल गामक चौबगली अड़ोस-पड़ोसक गाम। जइ बीच दोकान-दौरी, हाट-बाजार, स्कूल-कौलेज सम्बन्धक आधार होइए। दुनू गोरेक घरक दूरी करीब, औझुका नापमे पचास किलोमीटर आ पहिलुका नापमे दस कोस अछि। दुनू समाजक ओहन जातिक परिवारमे जन्म नेने छैथ, जइ समाज (जाति)मे पढ़ै-लिखैक चलैन कम रहने पढ़ै-लिखैक संख्यामे कमी सेहो छेलैहे। ओना, गरीबीक चलैत बच्चो सभसँ पढ़ै-लिखैक अवस्थामे परिवारक काज लेल जाइत छल, अछियो। ओना, मुख्य रूपसँ पढ़ै-लिखैक साधन कम रहने पढ़ै-लिखैक समुचित बेवस्थो नहि छल। ओना, बेवस्था आ कुबेवस्था दुनू अछिए।

पारिवारिक स्थिति, आर्थिक दृष्टिये, दुनू परिवार एकरंगाहे मुदा दू इलाका रहने, एक कोसी-बलानक इलाका तँ दोसर कमला बलानक, दुनू समूहमे माने धाराक समूहमे, ताकतमे कमी-बेसी सेहो अछिए। जैठाम कमला बलानक क्षेत्र अधिक तगतगर अछि तैठाम कोसी-बलानक क्षेत्र कमजोर अछि। रामसेवकक घर कोसी-बलानक इलाकामे आ मोतीलालक कमला-बलानक। तँए खेती-पथारीक स्थिति मोतीलालक बेसी नीक आ रामसेवकक पछुआएल। जइसँ जमीनक कीमत, माने खेतक मूल्य, सेहो कम भइये गेल। दोसर कारण ईहो भेल जे रामसेवकक गामक किसान माने कनकपुराबला किसान मोतीलालक गामक किसानसँ माने चानपुराबला किसानसँ सभतरहेँ खेती करैमे कम लूरिगर। जइसँ चानपुराक उपजावारी नीक आ कनकपुराक दब छेलैहो आ अछियो। ओना, बाढ़िक प्रभाव सेहो दुनू गामक बीचमे कम-बेसी अछिए।

एक जातिक बीचक दुनू छैथ। जखन सर-सवारीक कमी छल तखन लोक पएरे एक-गामसँ दोसर गामक आबा-जाही करै छला। तँए दसकोसीएक बीच कथा-कुटुमैती करै छला जइसँ आएब-जाएबक सम्बन्ध बनले छल आ बनितो अछिए। राम सेवकक पारिवारिक सम्बन्ध, माने वैवाहिक सम्बन्ध मोतीलालक गाम चानपुरामे।

देश आजाद भेना थोड़बे दिन भेल छल, जन-जागरणक वातावरण बनल रहबे करइ। हाइये स्कूलसँ रामसेवक राजनीतिक मंचसँ लऽ कऽ सामाजिक मंचपर जाए-आबए लगला, जइसँ बजैक कलामे दिनानुदिन सुधार सेहो भेलैन। स्कूल-कौलेजक पढ़ै-लिखैक क्रम सेहो जारीए रहलैन। जइसँ एम.ए. तकक डिग्री रामसेवक प्राप्त केलैन।

रामसेवकसँ भिन्न जीवन मोतीलालक छेलैन। स्कूल प्रवेशसँ पहिनहि माने विद्यालयमे नाओं लिखबैसँ पूर्व, मोतीलालक पिताक मृत्यु भऽ गेल छेलैन। मुदा पढ़ै-लिखैक प्रति आकर्षण परिवारमे रहैन, तैसंग गामेमे स्कूल (लोअर प्राइमरी) सेहो छेलैन। गामक स्कूलमे गामेक बच्चा

पढ़ैए, जइसँ आन गामक बच्चाक अपेक्षा सम्बन्ध स्थापित होइमे आसान होइते अछि। मोतीलालसँ तीन बरख जेठ हीरालाल भाय छेलखिन। जे स्कूलमे पढ़ै छला। एक तँ परिवारमे भाए सन संगी आ दोसर गामेक स्कूलो, तँए स्कूल धड़बामे मोतीलालकेँ ओइ बच्चा जकाँ नइ भेलैन जे स्कूल जाइ दुआरे केतौ नुका रहैए।

हाइ-स्कूल तक अबैत-अबैत मोतीलालपर परिवारक भार पड़ए लगलैन। सोभाविको अछि। मोतीलालक माए, जे वैधव्य जीवन जीबै छेली, तैठाम मोतीलाल किछु छला मुदा बारह बर्खसँ ऊपरेक छला। अपना ऐठाम पुरुखक नाप तँ नहि अछि, मुदा स्त्रीगणक सियान हेबाक नाप तँ अछिए। अष्ट वर्षे च भवेत् गौरी..।

मोतीलालक माए माने सुचिता, ओहन परिवारक छेली जिनका दरबज्जापर अपन महफा आ चारि जोड़ बरद आ सात गाड़ करीनक जोगार छेलैन। ओना, एकटा संयोग सुचिताकेँ आरो भेलैन। ओ भेलैन ई जे सुचिताक छोट मौसी, माने माइक सात बहिनमे सभसँ छोट बहिन,क सासुर सेहो चानपुरे। चानपुराक ओहन परिवारमे सुचिताक मौसी माने द्रौपदीक सासुर छेलैन जे सामाजिक-आर्थिक रूपेँ प्रथम कोटिक छल। विवाहक पछाइत तँ नहि, तइ समयमे दुरागमनक पछाइत आबा-जाही होइ छल, तेकर किछुए दिनक पछाइत द्रौपदी विधवा भऽ गेली। नि:सन्तान, सम्पैतिक कमी नहि, हुनके देखा-देखी सुचिता सेहो दू बेटाक आश्रयमे अपन जीवन हँसी-खुशीसँ बितबए लगली।

दुनूक बीच माने रामसेवको आ मोतियोलालक बीच एकटा सुखद संयोग सेहो भेलैन। ओ भेलैन ई जे जहिना साले-साल क्लास ससरैत रामसेवक बढ़ला तहिना मोतीलाल सेहो बढ़ला। सुखद संयोग दुनूकेँ ई भेलैन जे ने कहियो घोड़ा जकाँ नम्हर टप्पा (टाप) दऽ पहिल श्रेणीक विद्यार्थी बनला आ ने कहियो कोनो क्लासमे फेल केलैन, तँए शुरूसँ अन्त धरिक पढ़ाइ-लिखाइमे दुनू संगे रहला। ओना, एक-आध क्लासक दूरी

दुनूमे हाइ-स्कूलसँ रहलैन मुदा एम.ए.क परीक्षा पछुएने सेहो एकबट्ट भऽ गेलैन।

ओना, चिन्हा-परिचय आ जान-पहचान दुनूकेँ शुरूहेसँ रहलैन, माने हाइ-स्कूलेसँ रहलैन, मुदा जीवन निर्माणमे दुनूक दू दिशा रहलैन। रामसेवक कौलेज छोड़ैत-छोड़ैत अपन कद एते ऊँच बना लेलैन, जिनका लग एकाध घन्टा बैस कऽ गप-सप्प करब, तेते समय नहि बँचै छेलैन। दोसर दिस मोतीलालक जीवन गाम-समाजक बीच रहलैन तँए जीवन-चेतनाक वास्तविक बोध भेने आत्मबलमे सकारात्मकता आबिये गेल छेलैन।

साइठ बर्खक जीवनक बीच, चिह्न-पहचिह्न रहला पछातियो, कहियो एहेन अवसर दुनूकेँ नहि भेटलैन जे घन्टा-दू-घन्टा एकठाम बैस विचार-विनिमय करितैथ।

दुनूक दृष्टिकोणमे स्पष्ट अन्तर आबिये गेल छैन जे जैठाम रामसेवकक नजैर सत्तोन्मुखी बनि गेल छैन तैठाम मोतीलालक नजैर जनोन्मुखी बनि गेल छैन।

आइ पचहत्तैर बर्खक अवस्थामे रामसेवको आ मोतियोलाल पहुँच गेल छैथ।

समाजक बीच राजनीतिक रूप सेहो बदैलिये रहल अछि। देखिते छी जे जीवितक चर्च कम आ मृत्युक चर्च बेसी भइये रहल अछि। खाएर तइसँ मोतीलालकेँ कोन मतलब। अपना जीवनकेँ मोतीलाल अपना मुट्ठीमे बान्हि रखने छैथ, जेकरा सोभाविक जीवन कहि सकै छिऐ। जेकर सिहन्ता अपनो मनमे लगल अछि। सामाजिक परिवेशक विपरीत मनमे विचार उठल जे परसू जे मोतीलाल भायसँ गप-सप्प भेल, तँ कहलैन- 'बौआ, समय केहनो दुरकाल, भागवत-पुराणक धुन्धकारी जकाँ भेल मुदा पचहत्तैर बरख पूर्वक ओ आइयो ओहिना मन-मस्तिष्कमे बैसल अछि जे

चौदह अगस्तक अधरतियामे पटना रेडियो स्टेशनसँ बिस्मिल्ला ख़ाँ शहनाईक टाँहि देलैन आ लालकिलापर स्वतंत्रताक तिरंगा झण्डा फहराएब शुरू भेल।'

ओना, ओछाइनेपर रही तखने मोन पड़ि गेल जे आइ मोतीलाल भाइक जन्म-दिन छिऐन, किए ने जन्म-यज्ञक मंगल गीत, 'आएल शुभ केर लगनमा, शुभे हे शुभे', लगमे जा कऽ बधैया गीत जकाँ गाबि मुँहक मांग मांगि आबी।'

बिछानेपर, अपन दिन भरिक रूटिंग तैयार करए लगलौं। तइमे पहिल काज मोतीलाल भायकेँ शुभ सन्देश देब भेल। केतबो धड़फड़ेलौं मुदा सुतिकऽ उठैक जे नअबजिया समय अपन अछि, से भइये गेल। ओना, मनमे ईहो उठि गेल छल जे शुभ सन्देश शुभ दिनक शुभ बेलामे देब बेसी नीक होइत अछि, मुदा तइमे कनी पछुआ गेबे केलौं। जइसँ प्रभात बेलाक शुभ किरण छुबैमे देरी भइये गेल, मुदा पहुँचलौं।

दरबज्जापर बैसल मोतीलाल भाय जेना किछु मने-मन सोचिकऽ मुस्किया रहला छल, तहिना बुझि पड़ल। कनी हटलेसँ बजलौं-

"भाय साहैब, नब वर्षक शुभकामनाक बधाइ अछि.!"

जेना ओंघाएलकेँ टोकलापर भक्क खुजैए तहिना मोतीलाल भाय आँखि खोलि देखिते बजला-

"बौआ, तोरे शुभकामने हम थोड़े शुभ-शुभ जीब, जीब तोहर सुकर्मे। मुदा तोंहूँ ठीके कहलह, किए तँ समाजमे दुनू धारा ओहिना प्रवाहित होइए जहिना बंगालक गंगाक धारमे होइए। सोलह घन्टा उत्तरसँ दच्छिन दिस, माने पहाड़सँ समुद्र दिस बहैए आ आठ घन्टा दच्छिनसँ उत्तर दिस, माने समुद्रसँ पहाड़ दिस बहैए। तहिना कर्म आ भावक बीच सेहो अछिए। करवनो कर्मक धार होइत भाव प्रवाहित होइए तँ करवनो भवधाराक संग कर्म सेहो प्रवाहित होइते अछि।"

मोतीलाल भाइक विचार सुनि विचारए लगलौं कि बिच्चेमे मोतीलाल भाय कहलैन-

"बौआ, चारिम दिन रामसेवकक समाद भेटल जे भेँट करए आबि रहल छैथ। से तोहर की विचार?"

जहिना मोतीलाल भाय अपन भार दिअ चाहलैन तहिना अपनो घुमौआ भार, घुमौआ भार भेल गाम-गामक भार जे गामे-गाम तीन-गाम-चारि गाम घुमि बाइस-तेबाइस होइत असल जगहपर पहुँचैए, दैत बजलौं-

"भाय साहैब! अहाँ तँ अपने विचारवान छी, जे नीक होइ से कहि दिअ। अपनेक कि कोनो आदेश हम काटब।"

कनीकाल गुम्म भऽ मोतीलाल भाय मने-मन विचारए लगला जे केते दुखद विषय अछि जे समाजक पढ़ल-लिखल लोक माने रामसेवक जखन एते पुरान, एते बेवहारिक सम्बन्धकेँ जोड़िकऽ नहि रखि सकल तखन..? जेना मनक उद्वेग मोतीलाल भाइक विचारमे ठोकर मारलकैन, तहिना बुझि पड़ल, बजला-

"बौआ! जिनगीक सम्बन्धक रस, दुनू गोरेक बीच सुखि गेल। आब तोंही कहह जे की नीक हएत?"

ओना, मोतीलाल भाइक भितुरका की भाव छेलैन से तँ ओ अपने बुझैत हेता मुदा अपना बुझि पड़ल जे मने-मन मर्माहत जरूर छैथ। उधकी दैत उधकबैत पुछलयैन- "से की भाय साहैब?"

जहिना अपने उधकियौलिऐन तहिना उधैक कऽ मोतीलाल भाय बजला-

"बौआ, खिच्चड़ि आ खीर दुनू होइए गिलगरे। भात जकाँ टकुआ-तान नइ होइए, मुदा दुनूकेँ एक कहबहक?"

बजलौं- "हमहीं कि आनो कियो ने एहेन बात कहता।"

ओना, मोतीलाल भाइक विचारक सहे-सह अपनो ओम्हरे झुकाइत रही मुदा तइ बिच्चेमे मोतीएलाल भाय बजला-

“खीर आ खिच्चड़िमे की अन्तर अछि, बुझै छहक?”

अखन तक अपने यएह बुझै छेलौं जे नून देने खिच्चड़ि भेल आ चिन्नी देने खीर। बजलौं-

“नूने-चिन्नीक तँ खेल अछि, खिच्चड़ि बनाबी कि खीर।”

हमर बात जेना मोतीलाल भाइक हृदयकेँ छुबि देलकैन तहिना हृदयसँ मुस्कियाइत बजला-

“बौआ, खीर आ खिच्चड़िक अपन-अपन जीवन-चरित्र अछि।”

दुनूक अपन-अपन जीवन सुनि मन धकमकाएल। धकमकाइक कारण भेल, जैठाम अपने नून-चिन्नीक खेल बुझै छेलौं तैठाम दुनूक जीवनक चर्च मोतीलाल भाय केलैन अछि.! पुछलयैन-

“से केना भाय साहैब?”

जहिना कोनो कथाकार वा कवि अपन एक शीर्षकक शब्दमे कथा वा कविता सुना दइ छैथ तहिना मोतीलाल भाय बजला-

“यएह जीवन दृष्टि छी जे जीवन देखबैए।”

सच पुछी तँ मोतीलाल भाइक विचार नीक जकाँ नइ बुझलौं, तँए कहब जे सुनबो नइ केलौं सेहो झूठ नइ बाजब। मुदा मोतीलाल भाइक भवधारमे किछु बाजब, कठिन अछिए। पुछलयैन-

“से केना भाय साहैब?”

हमर विचार जेना मोतीलाल भाइक हृदयकेँ चुहुटिकऽ पकैड़ लेलकैन तहिना हीय खोलि बजला-

“बौआ, खिच्चड़ि ओ भेल जइमे दालि-चाउरक सम्बन्धक जीवन छी।”

जेना सोल्होअना मोतीलाल भाइक विचार मनमे गड़ि गेल तहिना बजलौं- “छीहे।”

मोतीलाल भाय बजला-

“मुदा, खिच्चड़िमे जहिना दालिक ठेकान नइ अछि, माने राहैड़सँ खेसारी धरि, तहिना चाउरक ठेकान सेहो नइ अछि। मोटका चाउरसँ महिक्का धरि जहिना, तहिना अरबासँ उसना धरि।”

ओना, जेतेक जल्दीमे मोतीलाल भाय बजला तेतेक जल्दीमे अपन मन नहि बुझि सकल। एकर माने ईहो नइ जे किछु ने बुझलौं। बजलौं-

“हँ, से तँ ठीके।”

हमर ‘ठीक’ जेना मोतीलाल भायकेँ पीठ ठोकि देलकैन तहिना ठोकाएल मने बजला-

“बौआ, रामसेवक आ अपन जीवनमे यएह अन्तर अछि। जहिना खीर मात्र एकटा अन्न अपन संगीक संग माने दूध-चीनी इत्यादि विन्यासक संग चलैए, यएह चलब ओकर जीवन छी।”

मोतीलाल भाय जइ हिसाबसँ बजला तइ हिसाबसँ अपने नइ बुझि पेलौं। तँए बजैमे कनी धड़फड़ाएब भेबे कएल जे एना बजा गेल-

“लोको खीर-खिच्चड़ि होइए, भाय साहैब। तरखन तँ ओहो ने खिच्चड़िये भेल जे बिनु हारि-जीतक जिनगी जीबैए।”

मोतीलाल भाय बजला किछु ने मुदा गम्भीर जरूर भेला।

❑

शब्द संख्या : 1624, तिथि : 26 अगस्त 2022

भंगतराह कवि

भंगतराह कविक माने भेल शास्त्रीजी। भाय, साहित्य जगत छी माने साहित्यकारक समाज छी, ऐ बीच शास्त्री, उपशास्त्री, आचार्य, उपाचार्य इत्यादिक भरमार अछियो आ रहक्को चाहबे करी। अपना गाममे माने किसानपुर गाममे सेहो गोटि-पंगरा साहित्यकार साहित्यसँ जुड़ल छथिए। भाय, ऐठाम एहेन धोखा नइ हुअए जे एहनो-एहनो गाम सभ अछि जइमे छेहा माने सोल्होअना साहित्यकारे छैथ आकि सोल्होअना प्रोफेसरे वा डॉक्टरे छैथ। गोटि-पंगरा साहित्यकार, वैज्ञानिक, प्रोफेसर, डॉक्टर गामे-गाम आइये नहि, सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि। किसानपुर गाममे माने अपना गाममे रविकान्त भाय सेहो साहित्यसँ जुड़ल छैथ। रविकान्त भाइक संग चारि-पाँच आरो साहित्यकार ओहिना काँखमे झोड़ा टंगने रहै छैथ जहिना भाड़ा-किराया पाबि सीताराम सीताराम करैबला मंडली सभ अछि। एकर माने ई नइ बुझब जे हम हुनकर खिदहौंस करै छिऐन। हुनकर एकनिष्ठता छैन। जखन समाजमे ओहन वस्तुक मांग बढ़ल तखने ने एहेन-एहेन मंडलीक माल उठिकऽ ठाढ़ भेल। आजुक जे भोज-भात अछि, ओ जँ प्राचीन पद्धतिक समाजसँ चलैत, तँ गाम-गाममे भानस करैबला श्रमिक वर्ग बनि केना पबैत? जे अखनो भरि दिन चुल्हिक आगि लग अपन देह झड़कबैए। तेतबे नहि, भोज्य-विन्यासक सैंकड़ो नब रूप गढ़ैक लूरि सेहो रखने अछि। मुदा ओकर मेहनताना केते होइए? खाएर ऐठाम से नहि। बस एतबे जे

रविकान्त भाय साहित्य सेवामे लगल छैथ।

रविकान्त भाय एक उमेरिया छैथ। ओना, अपन जीवनकेँ ढंगसँ पकैड़ रविकान्त भाइक सीमा धरि जरूर पहुँच गेल छी मुदा पण्डित जवाहरलाल नेहरूजी जकाँ चाचा बनैमे देरी अछिए। नइ तँ विज्ञान पढ़निहार केतौ इतिहास लिखैथ। अपने जीवन जकाँ जँ बुझबैन, तखन हुनकर जीवन नीक जकाँ नहि ने बुझि सकब, मुदा जखन हुनकर जीवन-साधनाक बाट पकैड़ देखब, तखन हुनकर वास्तविक रूपक स्वरूप जरूर देखि लेब।

साहित्य मंचसँ जुड़ल जहिना शास्त्रीजी छैथ तहिना रविकान्त भाय सेहो छैथ। ओना, दुनू भैयारीमे जहिना भाय-भाइक भैयारीक सम्बोधनसँ होइए, तहिना दुनू गोरेक बीच सेहो होइ छैन। अपन आ रविकान्त भाइक एक तँ एकठाम घर रहने दिनमे तीन बेर भेँटो होइते छैथ। आ दोसर, अपनो जिज्ञासा रहैए जे गामसँ बाहर तँ वएह बेसीकाल निकलै छैथ, अपने तँ भरि दिन परिवारेमे ओझराएल रहै छी। तँए, साँझूपहर-के बड़बैर भेँटो करिते छिऐन। भाय, पोखरिक महारपर जे नट सभ बसल अछि ओ सभ जहिना साँझूपहरमे अपन परिवारकेँ माने पत्नीकेँ, ताड़ी पीला पछाइत लठियेबो करैए आ भरि राति सेवो नइ करबैए सेहो केना नइ कहल जाए। केतबो मारि-गारि किए ने सुनए मुदा अंगरेज जकाँ तलाक नइ ने देत।

शास्त्रीजी आ रविकान्त भायमे चेहराक रंग विचित्र रहितो एकचित्र बनल छैन्हे। माने ई जे जीवनमे, आयुक हिसाबसँ, रविकान्त भाय ऊपर छैथ। माने बीस बरख ऊपर छैथ आ शास्त्रीजी निच्चाँ छैथ। मुदा साहित्यिक जीवनसँ देखल जाए तँ शास्त्रीजी ऊपर छैथ। माने जैठाम रविकान्त भाइक साहित्यिक जीवन बीस बर्खक छैन, तैठाम शास्त्रीजीक जीवन पैंतीस-चालीस बर्खक छैन। साहित्यसँ माने सम्पूर्ण साहित्यसँ जेतेक रूचि शास्त्रीजीकेँ जे रहल होनु, मुदा कवितासँ रूचि शुरूहेसँ

रहलैन, तँए पैंतीस-चालीस बर्खक कवि शास्त्रीजी भेबे केलाह। तैसंग करवनो-काल मंचक अनुकूल आरो-आरो साहित्यिक विधामे सेहो वक्तव्य दइते छथिन। शास्त्रीजीक अपन मनक बात छिऐन जे अपन विचार अनका खूब सुनबए चाहै छैथ आकि अनको बात सुनए चाहै छैथ। भाय एहेन विचार शास्त्रीएजी टामे छैन सेहो बात नहियेँ अछि। अपनोमे अछिए। माने ई जे सदिकाल मनमे रहैए जे अपन बात आन सुनबेटा नहि मानबो करए, मुदा अनकर बात सुनैले, मानैक तँ कोनो गप्पे नहि, अपना छुट्टीए ने अछि।

पैंतीस-चालिस बर्खसँ शास्त्रीजी साहित्यिक विधामे किछु-ने-किछु लिखैत आबि रहल छैथ, मुदा सोभावसँ भंगतराह रहने कोनो लिखित रचनाक ठेकान नहि छैन। कहब जे भंगतराह किनका कहबैन? भांग पीबि कियो शिव-दरबारमे माने महादेवक दरबारमे शिव-भक्ति वा महादेव भक्ति करै छैथ आ कियो चौक-चौराहापर भाँगक दोकानसँ भाँग कीनिकऽ पीबि रस्ते-पेरे अर्र-दर्र करै छैथ।

ओना, शास्त्रीजी केँ सोल्होअना भंगतराह नहि कहबैन। परिवारक जे अस्त-व्यस्तता छैन, ओ शास्त्रीजी केँ एकाग्र हुअ'ए ने दइ छैन, जइसँ केलहो श्रम हेरा-ढेरा जाइ छैन। एक तँ श्रम अपने-आपमे अनमोल रत्न छीहे मुदा ओकरा परेखब आ प्राप्त करब तँ आरो, माने जखन कुशल परेखनिहार आ प्राप्तकर्ता रहता तखने ने भेट सकै छैन।

शुरूमे माने हाइ स्कूलमे जखन साइंस, आर्ट, वाणिज्य इत्यादि विषयक पढ़ाइ फुटैए, तइ समयमे शास्त्रीजी साइंसक विद्यार्थी छला, जे कौलेजमे आबि बी.एस-सी.क क्रममे मोड़ लेलकैन आ साइंस पढ़ब छोड़ि संस्कृत विषय पढ़ब शुरू केलाह। विश्वविद्यालयसँ 'शास्त्री'क उपाधि पौलैन। ओना, लगनशील एहेन जे वैदिक साहित्यकेँ धांगि देलैन। मुदा कोन रूपमे धँगलैन, से वएह बुझै छैथ।

तीन भाँइक भैयारीक बीच माझिल छैथ शास्त्रीजी। पाँच बीघा जमीन परिवारमे। शास्त्रीजी घुमन्तू भइये गेला। इलाकाक हिसाबसँ शास्त्रीजीक विवाह गड़बड़ भेलैन। इलाकाक हिसाबक माने भेल जे भौगौलिक बनाबटक कारणेँ कोनो इलाकामे श्रमशील माने शरीरसँ श्रम करैबला मनुक्खक निर्माण होइए आ कोनो इलाकामे श्रमक बदलल स्वरूप रहने वौद्धिक मनुक्खक निर्माण होइते अछि। विवाह गड़बड़ ई भेलैन जे पढ़ल-लिखल पत्नी रहने परिवारक स्तर ऊपर उठलैन, मुदा आर्थिक संकटसँ खसैत रहलैन। किसान परिवार शास्त्रीजीक छैन्हे। आ तैपर शास्त्रीजी घुमन्तू भइये गेल छैथ। कविता पाठ, भागवत-पुराणक प्रवचन, गीता प्रवचन इत्यादिमे अपन सोल्होअना समय लगैबते छैथ।

जेठो भाय आ छोटो भाय, माने तीन भाँइक बीच शास्त्रीजी माझिल छैथ, गामक खेत हथिया लेलकैन। जाबे तक छोट परिवार शास्त्रीजीक रहलैन ताबे तँ कोनो समस्या नइ बुझि पड़लैन, मुदा जखन अप्पन दुनू बेटा छँटगर भेलैन, परिवारमे खेत-पथारक विवाद शुरू भेलैन, तखन अपन आमदनी कमलैन आ खर्च बढ़लैन।

अखन तकक जे जीवन शास्त्रीजीक रहलैन ओ परिवारक बेवहारक अनुकूल नइ रहलैन। परिवार बुझि शास्त्रीजी अपन पत्नियोँ आ बच्चो सभकेँ भाएपर ओंगठौने रहला मुदा अप्पन कमाइक कोनो हिसाबे ने रहलैन। सभ बुझिते छी जे लोअर प्राइमरीक बच्चाक पढ़ाइमे की खर्च अछि। तैठाम साहित्यकार सन भुखाएलक की खर्च हएत। ओना, साहित्य जगतक बीच शास्त्रीजीक एहेन वफादारी छैन्हे जे जैठामसँ हुनका हकार पड़ै छैन, तैठाम ओ जरूर पहुँचै छैथ। साइठ बर्खसँ ऊपरक उमेर भेलो पछाइत शास्त्रीजी पएरे वा साइकिलक सवारीसँ जीवन चला रहला अछि।

परिवारक विवादक एहेन स्वरूप बनि गेल छैन जे कोर्ट-कचहरीक काज दिनो-दिन बढ़िते जा रहल छैन जइसँ दिन-रातिक बीच एक्को पल

चैन भेटब कठिन भऽ गेल छैन। गारजनक हैसियतसँ शास्त्रीजी जवाबदेह छथिए। अपन जे जीवन छेलैन, माने केस-मुकदमासँ हटल, तइमे काफी बदलाव आबि गेलैन। एक दिस आमदनीक कमी हुअ लगलैन, दोसर दिस यत्र-तत्र खर्चा बढ़ि गेल छैन। खाएर किछु छैन मुदा मनुक्ख बनि अखन तक तँ शास्त्रीजी ठाढ़ छथिए। नइ सभ कार्यक्रममे, माने साहित्यिक कार्यक्रममे, भाग लऽ पबै छैथ, तँए नहियेँ लइ छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

स्वभावसँ शास्त्रीजी साहित्यकारक ठाठ-बाठक लोक छथिए। अर्थशास्त्रसँ कहियो भेँट नहि भेलैन जे बुझि पेबितैथ, भावलोकक अर्थनीति की अछि आ भुवनलोकक अर्थनीति की अछि। अखनो शास्त्रीजीक अप्पन मन गवाही दइते छैन जे दानी बनि दान देब महादान छी, तँए मानबकेँ मानि लेबा चाही।

साहित्यिक कार्यक्रमक जे परिदृश्य बदैल रहल अछि तइ अनुकूल शास्त्रीजीक विचारक परिमार्जन नहि भऽ सकलैन। अपना संयोजकत्वमे शास्त्रीजी साहित्यिक कार्यक्रम करैक निश्चय केलैन। तिथि निर्धारित कऽ लेलैन। साहित्य संसारमे बिरले कियो बाँचल हेता जिनकासँ शास्त्रीजीक सम्बन्ध नहि छैन। वहुआयामी वृत्तिक शास्त्रीजी छथिए, तँए सम्बन्ध स्थापित होइमे देरी लगिते ने छैन। परिवारोसँ फ्री छथिए। आजुक परिदृश्यमे महिलाक हाथ-मुट्ठीमे की सभ छैन। बुझल बात अछिए जे महिलाक अधिकार दिआबैले सभ अपसियाँत छी, मुदा कोन घर एहेन छुटल अछि जइ घरमे महिला शासक नहि छैथ।

निर्धारित समयपर रविकान्त भाय अपन संगीक संग शास्त्रीजीक ऐठाम पहुँचला। जहिना सतयुगमे ऋषि-मुनि गाछक निच्चाँमे माने छाहैरमे अपन कला-संस्कृतिक प्रदर्शन करै छला तहिना शास्त्रीजीक दरबज्जाक आगूमे तीनटा आमक गाछ छैन्हे।

रविकान्त भाय, गामक एकटा ढेरबा बच्चाकेँ पुछलखिन-

“बौआ, आँगन जा कने शास्त्रीजीक भाँज लगाबह ते।”

जेना ओइ बच्चाकेँ बुझले रहै तहिना टपैक बाजल-

“दछिनबारि टोलमे छैथ।”

“केते दूरपर टोल अछि?”

“सटले-सटल टोल सभ अछि।”

अपन पाँचो-सात संगीकेँ संग केने शास्त्रीजीक भाँज लगबैत दच्छिनबारि टोल पहुँचते रविकान्त भाय देखलैन जे शास्त्रीजी धुरझाड़ कविता वाचि रहला अछि आ दस-बारहटा श्रोता हुँहकारी दऽ रहल छैन। मने-मगन शास्त्रीजी, हाथक इशारासँ रविकान्त भाय सभकेँ बइसैले कहलखिन आ अपन कविताक अन्तिम चौपाइमे हाथ लगौलैन।

सामंजस करैत रविकान्त भाय, शास्त्रीजीक मनोनुकूल अपनाकेँ निरमित करैत शास्त्रीजीक कविताक विराम होइत देखि मुड़ी उठा शास्त्रीजी पर देलैन तँ शास्त्रीजीकेँ भक्क खुजलैन। भक्क खुजिते मनमे उठलैन, बेवहारानुकूल अपना बुते तँ अतिथि लोकनिकेँ समयपर ठंढो-गरम आकि चाहे-पान नहि करा सकलयैन..! गामक तरक तह पकैड़ शास्त्रीजी बाहरी सभ साहित्यकारकेँ संगोर केने गाम दिस विदा भेला, मनमे यएह शुभेक्षु इच्छा रहैन जे समाजो दुनियाँक समाजसँ परिचित हेता आ बाहरियो समाज कर्मीक समाजसँ परिचित हेता। चारिये डेग जखन आगू बढ़ला, कि एकटा सुभ्यस्तगर परिवारक गारजन सोझमे पड़लैन। हुनका देखिते शास्त्रीजी बजला-

“हौ जगरनाथ, आइ अपना गामक सौभाग्य जगल। इलाकाक नामी-गरामी साहित्यकार सभक पदार्पण भऽ रहल छैन से केना पार लगेबह।”

शास्त्रीजीक विचारक मर्मकेँ जेना जगरनाथ बुझि गेला तहिना

बजला-

“हम अहाँ कि कोनो बाँटल छी, ईहो दरबाजा तँ ओही गामक छी ने, जइ गाममे साहित्यकार सभकेँ बजौलिऐन हेन। सभ खर्च हम करब। तखन तँ कनी-बिलम्म हेबे करत।”

❑

शब्द संख्या : 1357, तिथि : 01 सितम्बर 2022

कनियेँ-मनियेँ पूँजी

बीतल दू सालक दशा जहिना सभ गाम-गामकेँ भेल तहिना मनमोहनकेँ सेहो भेल। मनमोहनो तँ अही मिथिलाक एक अंश रूपक धरती अछि किने।

जे मनमोहन दस साल पहिने, अन्न-तीमन-तरकारी, आम-केरा इत्यादि फल-फलहरी गामक पूर्ति करैत मनमोहनबला बाहरियो आमदनी करै छला ओइ मनमोहन गामक दशा देखै-जोकर नहि अछि। ऐठाम दुनू प्रश्न अछि। एक दिस गाममे बान्ह-सड़क-बिजलीक सुविधा भेल अछि तँ दोसर दिस गामक खेतीमे बिलैनी सेहो लागल अछि। बाढ़िक बचाउ ले एक दिस कोसी-कमला छहर-बान्हक गारंटी भेल तँ दोसर दिस गाममे सड़क-बान्ह भेने पानिक जमाव नहि भऽ रहल अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, सेहो भेबे कएल अछि। जिलाक एहेन स्थिति बनि गेल अछि जे सरकारी कार्यालय तकक कागज-पत्तर पानिमे नष्ट होइए। खाएर जे अछि, हरि बोल, हरि बोल हो रामा।

जहिना मनमोहन गाम-समाजक गति भेलैन तहिना अपनो गति नइ भेल से केना नइ कहब। गामक सभ जनिते छैथ जे मात्र बीघा भरि जमीन अछि। जइ बले किछु दिन पूर्व तक परिवार ठाढ़ छल। गाममे बान्ह-सड़क तँ भेल मुदा उपजाउ भूमि उपजै-जोकर नहि बनि सकल। अपना ओते शक्ति नहि जे भरपाइ कऽ सकब। असाध काज गाम-गाममे पसरिये गेल अछि। सिर्फ माटिक ऊपरेक माने उपजेक टा नहि, माटिकेँ

समतूल बनाएब सेहो भइये गेल। आजुक मशीनी युगमे एहेन स्थिति बनल रहए, ओ दुर्भाग्य नहि तँ सौभाग्य केना कहल जाएत। जखन मनुक्ख बनि मनुक्ख जन्म लइ छैथ तखन जँ पाँच गोरेक परिवार सम्हारि गाम-समाज ले किछु ने करैथ, ईहो तँ दुर्भाग्ये कहल जाएत। मुदा मने-मन बुझनहि की हुअए। आने गाम जकाँ मनमोहनो चारू दिससँ घेरा गेल। बच्चाक विद्यालय बन्न भऽ गेल, अस्पताल बन्न भऽ गेल। काज-उदम बन्न भऽ गेल। एहेन एक गाममे नहि गाम-गाममे भेल।

नब-धब अपने बंगलोरमे नोकरी पकड़नहि छेलौं। माने ट्रान्सपोर्टक काज, काजे खतम भऽ गेलइ। गाम आबि एकटा दोकान शुरू केलौं। कहब जे दोकानमे कमाइ केहेन होइए? तेकर जवाब तँ यएह ने देब जे ठाढ़ केना छी। तीन सालक जे समय रहल ओ बहुत किछु सिखेबो करबे केलक। ऐठाम सिखाएबक माने बदला लेब नहि, लूरिसँ अछि। बिजली एने बिजली-कारोबारक किछु लूरि सीख लेलौं। मोबाइल से किछु सीख लेलौं, गाड़ी-सवारी बढ़ने थोड़-थाड़ ओकर मरम्मत करब सीख लेलौं। एहेन विचार अपने कौलेजे जीवनसँ जानि गेल छेलौं जे पूजी श्रम छी नहि कि धन। ओना, एहेन परिवेश तीन-चारि सालक बीच बनल अछि नहि कि तइसँ पहिने छल।

अपनो मानिते छी जे अखन तकक जे गाम रहल अछि ओ बहुत कठिन दौड़क बीच रहल अछि। ऐठाम मुड़कुट्टीमे एतबे कहब जे हजारो बर्खसँ अपना सभक पूर्वजकेँ गुलामीक जिनगी गुजरलैन। गुलामीक जिनगी केहेन होइ छै, तेकरा पचबैक अभ्यास भइये गेल अछि।

गाम आबि, असगरेमे काजक पथार लगा देलौं। जहिना चैत-बैशाखक रौदमे गुरु गृहिणी अपन घरक अन्नकेँ रौदमे पसारि सुखबै छैथ। किसानी जिनगी छी, नोकरिहाराक नहि, तँए मन यएह ने कहलक जे गाम तँ गामे छी, तैठाम जँ असगरो ओते समस्याक निमरजनाक भार उठा लेब, बाल-बोधक धुड़खेल नइ ने छी। तखन तँ ईहो हेबे करत जे गामक

ऐगला मुहरा बनि आगूए-आगूए चलए लगत।

अखन तक गाम किसानक गाम कहबैत आएल अछि। जइसँ किसान शब्द एते तँ सम्मानित भइये गेल अछि जे जगत, जनक जननीसँ लऽ कऽ आजुक परिवेशक जे ऊँच कोटिक श्रेणी छैथ ओहो अपनाकेँ किसान परिवारसँ जुड़ल सम्मान अपन अभ्यन्तरमे करिते छैथ।

आने गाम जकाँ मनमोहनोक उपजाक माने उत्पादनक पचास प्रतिशतसँ ऊपर जमीन मरि गेल अछि। ऐठाम भूगोलक धोखामे नहि पड़ब जे मरूभूमिक माने भेल उपजसँ मारल भूमि। अपना ऐठाम माने मिथिलांचलमे कूल भूमिक तिहाइसँ बेसी भूमि जल-जमावसँ ग्रसित अछि, तैसंग वन-विभागक डिक्शनरीए उनटल अछि। जे धरती बरहमसिया फल, बरहमसिया फूल, बरहमसिया तीमन-तरकारी आ बरहमसिया अन्न तकक धरती मिथिलाक धरतीकेँ बना नेने अछि, जैठाम चन्दन (बेल) सन फल अछि, तैठाम अकठ-बकठ बोन-झाड़ लगा धरतीकेँ अजबारि देब, ईहो केतौसँ उचित नहि अछि।

किसानी जीवन दुनू दिस अछि। माटिसँ उपज करैबला सेहो आ पानिसँ उपज करैबला सेहो, अपना सभकेँ पूर्वांचलक माने बंगलाक किसानसँ किसानी जीवन सिखए पड़त। अपना सभसँ बेसी बरखो बंगालमे होइए आ अपने सभ जकाँ माटियो अछि। जहिना गंगाकातमे चक-चक बालु बक्सरसँ भागलपुर तक देखै छिऐ तहिना बंगालक मुर्शिदाबाद तक अछि। मुदा जे ‘जानो मानो पान’ मिथिलाक नामी-गरामी छल तैठाम अखन बंगला पान बंगालसँ मँगा कऽ खाइ छी, एकरा की कहबै? मिथिला छी, लोक पान खेबे करत, अतिथि-अभ्यागतकेँ खुएबे करतैन। गामक बीचमे, माने मनमोहन गामक बीचमे जे चारू दिससँ रस्ता आबि मिलल अछि, ओना अखुनका भाषामे चौक-चौराहा सेहो भेल, मुदा अखन तक मनमोहनबला ओकरा चौबट्टीए कहै छैथ। अपन तँ ओइठाम जमीन नहि, मुदा दोकानक नामपर समाज (गौंआँ) सहमति

देलैन जे गामक ई मुराम जगह छी, ऐठाम दोकान खोलू। गाममे दोकान भेने गौंएँकेँ ने लाभ होइए। अपनो मनमे बिसवास बनले छल जे एहेन कानून तँ अछिए जे जेकर घर तेकर जमीन। जँ अपना तेकर सबूत नइ अछि तँ परचा रूपमे देले जाइए। संयोग एकटा ईहो छल जे मनमोहनमे एहेन संस्कार अखनो जीवित अछि जे घर बनबैले बाँस, खढ़ इत्यादिक सहयोग समाजमे होइत रहल अछियो। बेकतीगत रूपमे तँ कम देखि पड़ैत मुदा सामाजिक रूपमे जीवित अछि। ओना, परिवेश ठीक विपरीत बनि गेल अछि, मुदा किछु भेल, अपना तँ घर (दोकानक घर) बनबैमे ने कोनो जमीनक समस्या भेल आ ने घर बनबैक। हमर सुर-सार, माने दोकान करैक सुर-सार देखि पान-सात गोरे आरो हाँइ-हाँइ कऽ अपन दोकान करैक घर ठाढ़ केलक।

बहुत तँ नहि, माने हजार बोल्ट बाउलक इजोत जकाँ तँ नहि, मुदा दिआरी पावनिक राड़ी-खढ़क उकारी जकाँ इजोतसँ बेसी धुँओक बीच, जहिना दिपावली पाबैन मनौल जाइए तहिना गामक किसानी जीवनमे कारोबारी जीवन सेहो छीहे। ओना, घुमन्तू रूपमे माने पथियामे समान लऽ माथपर उठा अंगने-अंगने जरूरियात वस्तु बेचैक चलैन समाजमे चलिये रहल छल।

चौकपर पच्छिम रूखिये दोकान बना, अपन कारोबार शुरू केलौं। जइ दिन दोकान शुरू केलौं, तेकर पछुलका साँझ, दिनबन्धु भाय दोकानपर पहुँचला। छअ-पाँचमे पड़ि गेलौं, काल्हि लक्ष्मीक पूजा केलाक पछाइत ने दोकान ऐँठाएब आकि तइसँ पहिनहि लोककेँ चाह पीआ पान खुआ ऐँठा लेब।

एकटा बात दिनबन्धु भाइक सम्बन्धमे सुनले छल जे जखन अहाँकेँ कोनो काज करैत देखता, तखन ओ ने चाहक आग्रह माने छैथ आ ने गप्प-सप्प करबकेँ पसिन करै छैथ। तइमे काजधारित जँ कोनो प्रश्न पुछबैन तँ मुहेँटा सँ नहि कहता, हाथसँ कैरियो कऽ देखा देता। तँए मनमे

बिसवास जमले छल जे सोझामे माने दिनबन्धु भाइक सोझामे लुरू-खुरू जँ करए लगब तखन ओ अपने पहिनहि कहि देता जे चाह-ताहक जोगार नहि करियहह। अपन धर्मो बँचि जाएत आ धनो बँचि जाएत। सएह केलौं। हाथमे माटि-ताति लगले दिनबन्धु भायकेँ कहलयैन-

"भाय साहैब, गोड़ लगै छी। अहीं सभक सेवा ले दोकान शुरू केलौं अछि।"

ओना, बजला पछाइत अपने बुझि पड़ल जे बेसी बजा गेल। आब ओ अपन बात बजता कि हमरा असीरवाद देता। मुदा तइमे रच्छ रहल जे तइ बिच्चेमे दिनबन्धु भाय बजला-

"बौआ, गेलह नेपाल कपार गेल संगे। मुदा तोहीं सभ ने अपन जन्मभूमिकेँ मातृभूमि बनबैक शक्ति छहक। तोरे सबहक ने गाम-समाज सभ किछु छिअ।"

दिनबन्धु भाइक विचार सुनि मन तरो हुअ लगल आ ऊपरो हुअ लगल। तर-ऊपर शब्दक अर्थ समाजमे खुशीसँ लेल जाइए। नब वस्त्र वा नब खेलौना पेला पछाइत जे बच्चाक एक्शन (हाव-हाव) होइए, ओ तर-ऊपरक होइए।

जहिना गाममे, तहिना लूरि-ढंगमे अपने सोल्होअना चौपट्टे तँ नहि छी। मुदा जइ गतिसँ गाम उनैट-पुनैट रहल अछि तइमे अपन जान बँचत कि जाएत से विचारणीय अछिए। दिनबन्धु भाइक विचारक प्रवाहमे अपने प्रवाहित होइत भँसि गेलौं कि बजा गेल-

"हँ से तँ छिऐहिये भाय साहैब।"

एकाएक दिनबन्धु भाइक मनक विचारमे दोसर प्रश्न उठि गेलैन, ओ बजला-

"पूजी केते लगेलह अछि?"

अखन तक अपन मन असथिर नइ भेल अछि जे लूरि-ढंग पूजी छी

कि रूपैआ-पैसा। गप-सप्पक क्रममे लूरियोकेँ पूजी बुझै छी आ रूपैओ-पाइकेँ, मुदा ओ केकरा ले, जे करत तेकरे ले ने। ओना, केकरो लग फूसि नइ बजै छी, मुदा बाल-बोधकेँ वौसैकाल नइ बजै छी, सेहो केना नइ कहब। मुदा कारोबार तँ कारोबार छी, मिसियो भरि फूसि अनुचित छीहे। बजलौं-

“भाय साहैब, पाइ-कौड़ीक पूजी कम अछि, मुदा साइकिलो आ मोटर साइकिलक भंगठी, मोबाइल-कम्प्यूटरक खोल-खाल, नब-धब बिजलीक आगमन अवस्थाक लूरि सेहो अछि, तैसंग समाजसँ तरकारी उपजौनिहारसँ उधारीक आश्वासन सेहो भेटल अछि।”

दिनबन्धु भाय बजला-

“समाजक जे रूप-रेखा अछि तइमे भरपूर पूजी छह। तैसंग किछु आरो क्रियमाण विचारक पूजी सेहो छहे।”

पुछलयैन-

“से की भाय साहैब?”

मुस्की दैत दिनबन्धु भाय बजला-

“पहिल छी, एकाग्र भऽ काज करब आ दोसर छी, आमदनीक हिसाबसँ परिवारक संग अप्पन निर्माण करब। ओना, जहिना शुरूक समाजमे कियो अपन औजार निर्मित कऽ जीवन बढ़ौलैन आ कियो शरीरे बले बढ़ला, तहिना तँ आइयो अछिए।”

❑

शब्द संख्या : 1315, तिथि : शिक्षक दिवस 2022

पुरुखढौह

समाजमे कोन हवा उठत आ केम्हर मुहेँ उठत, एकरा थाहब कनी भरिगर अछिए। खाएर ई तँ भेल गाम-गामक, टोल-टोलक, जाति-जातिक आ धर्म-धर्मक संग सम्प्रदाय-सम्प्रदायक रूप, मुदा अपना तइसँ मतलब कोन अछि। मतलब अछि अप्पन गाम, अप्पन समाज आ अपना सन दुनियाँक लोकक।

जहिना गाम-गाममे केतौ-केतौ, ओझा-गुनीक धर्म स्थल अछि तँ केतौ-केतौ अस्पताल, पढ़ैक विद्यालय नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। तइसँ दुनूक रंगक माने दू-दिशिया हवा सदिकाल उठैक सम्भावना रहिते अछि। एक दिस, देखिते-सुनिते छी, अस्पतालमे औजारसँ बीमारीकेँ भगौल जाइए आ दोसर दिस ओझा-गुनीक गहवरमे मुँहदान नइ भेटैए, सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। मुहेँसँ डॉक्टर बनैक, इंजीनियर बनैक परसादीक बिलहा-बाँट सेहो होइते अछि।

विकासपुरमे सेहो अपना ढंगक हवा उठल। हवा उठल जे गाममे पुस्तकालय बनइ। पुस्तकालयक माने एतबे नहि जे घर बना आलमारीमे पोथी साजि ताला लगा साले-साल जन्मोत्सव मनबैत रहलौं। समाजक बीच पुस्तकालय ओहन सार्वजनिक जगह छीहे जैठाम दस गोरे एकठाम बैस जीवन-मरणक विचार सेहो करिते छैथ।

आठ बजे भिनसुरका पहर, सुशील भायकेँ मुस्कुराइत अपना घर दिससँ अबैत देखलयैन। दुनू गोरेक बीच कहा-बद्धीक सम्बन्ध अछि।

कहब जे की कहा-बद्धीक सम्बन्ध अछि? दुनू गोरेक बीच जे अछि से अहूँ देखिते छी जे ओ पढ़ल-लिखल गुणशील छैथ आ अपने बच्चेसँ जे महींसवारि शुरू केलौं, सएह अखनो करै छी। एहेन भ्रम नइ हुअए जे जहिना बारह रूपैआक साल भैंसवारक दरमाहा छल, तहिना अछिए। हम से नइ छी, बच्चेसँ जहिना दूध-दही खाइक चसकियो लगल आ पोसैक वृत्तिसँ मन खुशियो अछिए जइसँ पोसैक काज तहिना अखनो अछि। आठटा महींस रखने छी। एक क्वीन्टल दूध होइए, अपन परिवारक खर्च जुमा पाँच किलो कम एक क्वीन्टल दूध प्रतिदिन बेचै छी। गोबरक तेते उपयोग बढ़ि गेल अछि जे दिन-दिनक बिक्री हुअ लगल अछि।

दुनू गोरेक बीच कहा-बद्धीक सम्बन्ध ई अछि जे जहिया दुनू गोरे सम्बन्ध बनबए लगलौं तहिया पहिल कहाबद्धी भेल जे जिनगीक सम्बन्ध बना रहल छी, पँचबर्खा सम्बन्ध नहि, जेना अदली-बदली होइबला नोकरिहाराक होइए। तेना नइ करै छी। तहूमे गौंआँ छी, बाप-दादाक बनौल-बसौल गाम छीहे। जहिना ओ सभ पुलिस-दरोगाकेँ गाम नहि आबए देलखिन। जइ शर्त्तपर दुनू गोरेक सम्बन्ध भेल, तइमे एकटा शर्त्त ईहो छल जे संग पुरैमे जँ जहल जाए पड़त, तँ एक-दोसरक संग सेहो जाएब आ संग-संग निकलबो करब। से कहब जे अखन तक गप्पे-सप्पक क्रम अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। पढ़ल-लिखल सुशील भाय जहिना छैथ तहिना समाजसँ जुड़ल समाज निर्माता सेहो छथिए।

सुशील भायकेँ, कनी फरिक्केसँ कहलयैन-

“भाय, मन बड़ मुस्किआइए, केतौ किछु पेलौं अछि की?”

जहिना बजलौं तहिना सुशील भाय झँपले-तोपल उत्तर देलैन-

“जँए पेलौं हेन तँए ने मुस्किआइ छी।”

सुशील भाइक जवाब पेब अकबका गेलौं जे हम की कहलयैन आ

ओ की बुझिकऽ कहलैन। जखन दू गोरे एकठाम छी, तखन मुहोँ चुप राखब उचित नहियेँ हएत। तँए पैछला बातकेँ दबैत बजलौं-

“भाय, किमहर-किमहर सवारी चललै-ए?”

सुशील भाय बजला-

“भिनसुरका तोरक काजसँ तँ निवृत्त भइये गेल हेबह किने?”

बजलौं-

“काज सँ पहिलुका पीलहा चाह पचि गेल, काजक पछातिक माने काज केलाक पछातिक चाह पछुआएल अछि।”

सुशील भाय पुछलैन-

“केते देरी लगतह।”

कहलयैन-

“दरबज्जापर पहिने चलू ने। आब कि गोबरक चिपरी आकि गोरहा-गोइठाबला जरनाक चुल्हि अछि, आब तँ ओ गोबर गैसक घटक भऽ गेल अछि। गैसक चुल्हिपर चाह बनैमे देरी लागत।”

दरबज्जापर बैसते सुशील भाय बजला-

“भने तोंहू काजसँ निचेने भऽ गेलह, दुनू भाँइ रहब तँ गप्पो-सप्प करैमे नीक लागत।”

टोकारा दैत बजलौं-

“भाय कहियो अहाँक आदेशकेँ कटलौं हेन।”

‘काटब’ सुनि सुशील भाइक मन जेना बिजलौका जकाँ चौंकलैन। चौंकलैन ई जे विचार केना समाजमे कटाइए आ केना जोड़ाइए...। मनक भीतरेसँ सुशील भायकेँ अपने मनमे विचार उठलैन जे अपना मुहेँ जे जवाब जीवन्तलालकेँ देब तइमे झूठ-सच दुनू एक्के रंग रहत। तँए सतो भऽ सकैए आ झूठो तँ भइये सकैए। मुदा जँ हृदयकान्त कक्काक मुहेँ वएह

विचार औत आ अपने हूँहकारी दैत मानि लेब तँ जीवन्तलालकेँ सेहो मानैमे हिचक नइ हएत। संयोगो नीक रहल, तइ बिच्चेमे चाह आबि गेल।

केहनो विचार वा काज किए ने रहह, चाह किछु ने किछु समयकेँ बाधित कइये दइए। तैबीच मन सेहो केता बेर उनैट-पुनैट जाइते अछि। जखने मनमे उनट-पुनट भेल तखने विचारो उनैट-पुनैट जाइते अछि।

चाह देखि सुशील भाय बजला-

"जीवन्त, चाहे देखि जेना मन भरि गेल। आब लोक चाह पीबैए आकि खानापूरी करैए। किसानक घरक, माने जे माल-जाल पोसै छैथ तिनकर जेहेन चाह होइए तेहेन दोकान-दौरी आ नोकरिहारा घरक हएत।"

चाह पीब दुनू गोरे हृदयकान्त काका ऐठाम विदा भेलौं। हृदयकान्त काका दरबज्जेपर रहैथ। मुहसँ प्रणामो केलिऐन आ आँखिसँ मनो टोबलयैन। टोबिते-टोबिते टोबा गेल जे हृदयकान्त काका केकरोसँ गप-सप्प करए चाहि रहला अछि। युग तँ तेहेन भऽ गेल अछि जे आँखिक गड़बड़ी दुआरे लोक चश्मा लगबैए आ ओइ चश्माक तरसँ आँखि निड़ारि-निड़ारि तेना मोबालिक दृश्य देखैए जे आँखिक जे प्राण-सूत[8] अछि सेहो खिंचा जाइए। तँए किए ने आँखिकेँ बँचा कानसँ काज लेब।

सुशील भाय बजला-

"काका, पुस्तकालय स्थापनाक विचार समाजमे उठि गेल अछि।"

बिच्चेमे हृदयकान्त काका बजला-

"बौआ, नीक विचार समाजमे जागि रहल अछि। समाजोक जे रूखि बनल देखि रहल छी से अनुकूलोसँ अनुकूल अछि। अहिना होइ छै, कोनो गाममे कोनो पूजा करैले जागरण होइए तँ कोनो-कोनो गाममे अस्पताल बनबैक, तहिना कोनो-कोनो गाममे विद्यालय बनबैले तँ कोनो-

[8] **नश**

कोनो गाममे पुस्तकालय, कला-संस्कृति केन्द्र बनबैले होइए।"

हृदयकान्त काका बाजिये रहल छला कि बिच्चेमे सुशील भाय बजला-

"हँ, से तँ होइते अछि।"

ओना, अपने हृदयकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ नइ बुझिमे आएल, मुदा तैयो सुशील भाइक समर्थन देखि बजलौं-

"होइते किए अछि, आगूओ हएत।"

बजला पछाइत मिसियो भरि खोंच-खरोंच मनमे नइ उठल। मन मानियेँ रहल अछि जे पाँच मिलि करी काज, हार हारने कोनो ने लाज। तहूमे सुशील भाय जखन जिनगीक गतिक रेमन्त जकाँ घोड़सवार छैथ, तखन चिन्ता कथीक। बड़ हएत तँ पुलिस पकैड़ कऽ जहल लऽ जाएत, सएह ने हएत। सेहो तँ देखले अछि।

दुनू गोरेक समर्थन देखि आकि अपन मनक विचारकेँ जगैत हृदयकान्त कक्काक मन खिल उठलैन। बजला-

"बौआ सुशील, आइये नहि सभ दिनसँ एहेन होइत आबि रहल अछि जे केहनो उचित कल्याण काज समाजमे किए ने हुअए मुदा मुँह दुसैबला लोक मुँह दुसबे करैए। तेकर कोनो चिन्ता नहि करह।"

बीचमे बैसल रही, सभ बाजैथ आ अपने चुप रहब तखन तँ गरूड़ आ साँपक खिस्सा भऽ जाएत। 'भुजंग प्रयात, भुंजग प्रयात..।' बजलौं-

"काका, जहिना महाभारतक समयमे भीम रहैथ, जिनकर बुद्धि हमरे सन लोक जकाँ गोबर उठबैत-उठबैत गोबराह भऽ गेल रहैन, से जखन अर्जुन सन भाय आ अभिमन्यु सन भातीज पेब समाजक रणभूमिक फाटक तोड़ैले तैयार भऽ गेला तखन अपने सन पित्ती आ सुशील सन भाए पेब हमहूँ अपन जीवन दान करैले तैयार छी।"

हमर विचारक गदगदीसँ आकि अपन मनमे उठैत गदगदीक

शक्तिसँ, से हृदयकान्त काका जानैथ। बजला-

“बौआ जीवन्त, भरि रौतुका माने एकरतुका पाठसँ तँ कालिदास महापण्डित भऽ गेला, आ जँ अपना गाममे सभदिना पुस्तकालय बनि जाएत तइमे विद्यार्थी बनैले तैयार छह।”

हृदयकान्त कक्काक विचारक प्रवाहमे आकि अपन मनक उद्वेगक उजाहिमे, मुहसँ बजा गेल-

“भरि दिन ने परिवारक चिन्तामे चिन्तित रहै छी, मुदा राति तँ अपन करैले अछि। अही आरामक समयकेँ जँ अपनामे लगा लेब तँ भनसिया कालिदासकेँ के कहए जे मसल्ला पिसनिहार मांगैनियो खबाससँ टपि सकै छी।”

हमर विचार सुनि हृदयकान्त कक्काक दृष्टिमे चिन्तन-रेख जगलैन। बजला-

“आजुक परिवेशमे वृद्धजनकेँ समय बिताएब कठिन भऽ रहल छैन, तैठाम गामक बीच जँ ओहन स्थान स्थापित भऽ जाइए, जैठाम सामाजिक सौहार्दपूर्ण रूप चलैत रहत तँ मनुक्ख तँ सहजे मनुक्खे छिया। सदैत समूह (समाज) मे रहए चाहिते छैथ।”

हृदयकान्त कक्काक विचार अन्तो ने भेल छेलैन कि बिच्चेमे सुशील भाय बजला-

“काका, जहिना वृद्धजनक स्थिति बनि रहल छैन तहिना नब पीढ़ी पढ़ल-बिन-पढ़ल, सेहो भटैक रहल अछि।”

हृदयकान्त काका बजला-

“यएह छी जीवनक सीमान। ढेरो तरहक, गुलामीक जिनगी, भारतीय जीवनकेँ तेना जकैड़ कऽ पकैड़ नेने अछि, जे आगू-पाछूक माने भूत-भविष्यक, बोधे मेटा गेल अछि। पुरुखसँ बेसी पुरुखढौह समाजमे पैदा लऽ रहल अछि। ढौह माने ढहल, घटल।”

हृदयकान्त कक्काक चिन्तित मन देखि आकि अप्पन उत्सित मनक उत्साहसँ, सुशील भाय बजला-

“काका, जखन डेग उठेलौं तखन पुस्तकालय बनाइये कऽ छोड़ब।”

हृदयकान्त काका बजला- “अपनो इच्छाक पूर्ति हएत।”

❑

शब्द संख्या : 1263, तिथि : 08 सितम्बर 2022

सिमानक झगड़ा

आजुक एहेन परिवेश बनि गेल अछि जे जेमहर ताकू तेमहर सीमानेक झगड़ा उठि रहल अछि। से कहब जे अपने सभक बीच अछि आ दुनियाँक आन देशमे नहि अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। सभकेँ अछि। कबीर दास यएह ने कहने छैथ, ‘दो पाटन के बीचमे बाँकी बँचे ने कोइ।’ जखने दूटा पाटन हएत तखने दुनूक अपन-अपन ओकाइतिक सीमा हेबे करत। कहब जे शून्य सीमा विहीन अछि। मुदा कोनो शब्द ओहिना नइ ने उठिकऽ ठाढ़ होइए, ओकरो आधार (वस्तु) चाही। जँ शून्य शून्य होइत तँ शून्य शब्द केना बनैत। खाएर जे से, अखन शून्यक प्रश्न नहि, अखन अंकक प्रश्न अछि।

चाहे अपना लगसँ दुनियाँकेँ देखू आकि दुनियाँक बीचसँ अपनाकेँ देखू, बात बराबरे बुझि पड़त। ई तँ बुझल बात अछिए जे जैठाम अपने ठाढ़ छी तैठामसँ पूब दिस तकैत-तकैत पच्छिम होइत लगमे पहुँच जाएब तहिना पच्छिमसँ तकैत-तकैत पूब होइत पूबे-पूब होइत लगमे पहुँच जाएब। तहिना उत्तरो-दच्छिनक बीच सेहो अछिए...।

दलानपर असगरे बैसल देवनाथक मन घोर-मट्ठा होइत रहइ। जहिना फरिच्छ पानिमे दुनियाँक शकल साफ देखि पड़ैत, तहिना घोर-मट्ठा पानिमे घोराएल-मटियाएल देखाइये पड़ैए। एहेन घोराएल-मटियाएलमे अपनेकेँ देखि लेब आकि आनेकेँ देखि लेब, ओते असान थोड़े अछि जेते बुझै छिऐ। एकर माने ईहो नहि जे नहियेँ देखि सकै

छिऐ। तइले ओहन आँखिक इजोतक ने खगता अछि जे मटियाएलोकेँ फरिच्छ आँखिये फरिछा सकइ। ओना, कहबी छै जे 'जखन जागी तखने भोर', मुदा एहनो तँ सम्भव अछिए जे ओकरा बुझै-करैमे हजारो-लाखो बरख सेहो लगि सकैए। कहब जे एहनो अकरहर केतौ भेल अछि.? हँ भेले नइ अछि सोझोमे अछि। बुझल बात अछिए जे लाखो बरख पूर्व मनुक्ख ऐ धरतीपर आएल, सभ किछु लऽ कऽ आएल, माने मनुक्खक सभ अंग-प्रत्यंग। तैठाम की ई फूसि अछि जे ने मनुक्ख अपन देहक सभ अंग देख-बुझि सकल अछि आ ने दुखसँ निवृत्त हेबाक रोगेकेँ पकैड़ सकल अछि। कहब जे शरीरक की रोग? जेकर अनुसन्धान अखनो विद्वज्जन माने डॉक्टर सभ डॉक्टर भेला पछाइत पुन: अपनाकेँ शोधकर्ता बनि ताकि-ताकि अनै छैथ।

विचारक बोनमे देवनाथ असगरे राम-लक्ष्मण-सीता जकाँ बोने-बोन वौआइत-ढहनाइत, मुदा ने बोनक ओर भेटइ आ ने छोड़ देखइ आ ने बनवासीएकेँ केतौ देखि पबइ। देखियो पेब केना सकैत, बनि कऽ बास करब आकि बास करिकऽ बनब। ई प्रश्न तँ अछिए। सम्भवो आ सुलभो अछिए। सब देखिते छी जे वएह सीमेन्ट-बालु पुरुखोक रूप बना ठाढ़ करैए आ मौगियोक रूप बनैबते अछि। एकर माने ई नइ बुझब जे पुरुखो मौगियाह होइए आ मौगियो पुरुखाह होइए। यएह दुनियाँक रीति ने प्रीत, बेपीरित, कुरीत, सुरीत सभ बनबैए। बुझल बात अछिए जे सीमेन्ट-बालु निरजीव अछि मुदा केहेन निर्माता अछि जे सजीवोकेँ निरजीव बना दइए आ निरजीवोकेँ सजीव। जेना विचारक बोनमे विचारीक सहयोग भेटने बनक विचारक बाट भेटैए, तहिना एक-दोसराक सहयोगक खगता आ ओकर पूर्ति भेला पछातिक पूर्ति, केना आ केहेन होइए से तँ वएह बुझै छैथ, जे पेलैन अछि।

घोराएल-मटियाएल-नोनियाएल-बोनाएल आ सुखाएल विचारक वनमे देवनाथक मन एते उदिग्न भऽ गेलै जे एकाएक उठिकऽ विचारक

कबुला करैत श्यामलाल काका ऐठाम विदा भेल। रस्तामे केतए कटारि-मटारि छल आकि खढ़-पात जमल छल आकि चलैत-चलैत जे चिक्कन बाट बनि जाइए, से छल, से सभ देवनाथ किछु ने बुझलक।

श्यामलाल कक्काक समय प्रश्नोत्तरीक रहैन। प्रश्नोत्तरीक समयक माने भेल विचार-विमर्शक बीच, अहाँक प्रश्न आ श्यामलाल कक्काक उत्तर। एकर माने ई नइ भेल जे जँ अहाँक प्रश्न कोनो घटना-विशेषसँ अछि तँ ओइ घटनाक जीवन्त गवाह भेला। जीवन्त घटनाक गवाह ओ हेता जे आँखिसँ देखलैन। घटनाक प्रवाह अछि, जे केतौ-केतौ पाछूसँ अबैत ओकर विकसित रूप होइए तँ केतौ-केतौ वर्तमानक स्वरूप सेहो होइए। ओना, कल्पना स्वरूप भविष्योक अनुमान लगौनिहारक कमी सेहो नहियेँ अछि। सभ अपन-अपन अनुकूल भविष्य वक्ता सेहो अछिए। बुझल बात अछि जे अहाँ पान साए एकावन रूपैआक एकटा ताबीज कीनि डोराडोरिमे पहीरि लिअ, सरस्वती माता अहाँकेँ दहीन भऽ जेती, अखन बाम छैथ। खाएर जे अछि, जाबे तक भेड़ियाह बुधि रहत ताबे तक अहिना भेड़िया धसान होइते रहत।

श्यामलाल काका आ रघुवीर भाय दरबज्जापर बैसल ठहाका मारि हँसि रहल छला। दुनूक हँसी देखि देवनाथक मनमे सेहो दुनू रंगक विचार उठि गेलइ। पहिल उठलै जे हमरे देखि दुनू गोरे हँसि रहला अछि। दोसर उठलै जे जँ कहीं गप-सप्पक क्रममे ओइ सीमानपर पहुँच हँसल होथि, जे हँसै-जोकर होइन। ओना, हँसबो-हँसबमे भेद अछिए। एकटा होइए तृप्तिक खुशीसँ हँसब आ दोसर होइए मजैक कऽ मजाक रूपमे हँसब। आधार दुनूक अपन-अपन अछिए। तँए आधारहीन नहियेँ कहल जा सकैए।

देवनाथकेँ संयोग भेटलै। संयोग ई भेटलै जे तैबीच चाह आबि गेलइ। बुझल बात अछिए जे जैठाम देशक उत्थान-पतन सन समस्या रहैए, तहूठाम चाह देखिते समाधानकर्ता चाह देखिते अपन विचारकेँ

रोकि पहिने चाह पीबिते छैथ। मुदा जहिना चाह-पानक दोकान परहक गप-सप्पक मोजर नइ अछि तहिना चाह-पान बेरमे दुआरो-दरबज्जाक गति तेहने अछिए। चाहे पीबैक क्रममे रघुवीर भाय बजला-

"काका, अजीब गति दुनियोँक अछि.!"

श्यामलाल काका बजला-

"रघुवीर, अखुनका अप्पन समय तँ प्रश्नोत्तरीक अछि, मुदा बीचमे जाबे चाह चलैए तइ बीच किछु कहि दइ छिअ।"

रघुवीर भाइक प्रश्नमे सह लगबैत देवनाथ बाजल-

"चाहे-पान बेरक जखन प्रश्न छी तखन तँ चाहे-पानक बीच ने जवाबो भऽ जेबा चाही।"

प्रश्नक दवाब देखि श्यामलाल काका बजला-

"की अजीव अछि रघुवीर। अजीवोकेँ सजीव आ सजीवोकेँ अजीव बनौले जाइए। तइ बीचमे तोरा की अजीब बुझि पड़ै छह? जखन अजीबे छी तखन अजीब-अजीब ढंगसँ लोक बुझबे करत।"

मने-मन देवनाथो अपन विचारकेँ ठिकिया नेने छल जे जखने विचारक बेग चलत तइ बिच्चेमे अपनो विचार घोंसिया चुप-चाप अपन प्रश्नक जवाब टोहकीक माछ जकाँ टोहिया लेब।

रघुवीर भाय बजला-

"काका, चाह-पानक तँ समय उसैर गेल, तँए ऐ विचारकेँ एतइ छोड़ि अपन रूटिंगमे अबियौ। घरसँ बहार धरि एक्के झगड़ा सबतैर पसैर गेल अछि।"

रघुवीर भाय झाँपले-तोपल प्रश्न उठौने छला मुदा श्यामलाल काका कृष्णक विराट रूप जकाँ प्रश्नकेँ बुझलैन। तँए प्रश्नकेँ सुपारीक टूक जकाँ बनबैत बजला- "की झगड़ा रघुवीर?"

रघुवीरक मनमे प्रश्न जेना सरिया कऽ रखले छेलैन तहिना बजला-

“सीमानक झगड़ा, काका।”

चाहक पछातिक खेलहा पानक सिट्ठी मुहसँ फेक श्यामलाल काका बजला-

“बौआ, सीमानक झगड़ाक विराट रूप अछि। तँए एक-एक प्रश्नक उत्तर, एक दिनक बैसारमे देब सम्भव नइ अछि।”

बिच्चेमे देवनाथ बाजल-

“काका, एहनो तँ देखबे करै छी जे एकटा शब्द माने शीर्षकक शब्द, रामायण-महाभारत सन मोट-मोट ग्रन्थक सभ बात कहि सकैए तखन सीमानक विचार कोन भारी भेल।”

श्यामलाल काका बुझि गेला जे देवनाथक प्रश्न अबूझ मनक उपज छी, नहि कि सबूझ विचारक, तँए महत्व रहितो महत्वहीन अछिए। बजला-

“रघुवीर अपना जगहपर आबह।”

रघुवीर भाय बजला-

“काका, पोरो सागक लत्ती जकाँ मनक विचार बिनु सिरेक छुछुआएल घुरैए मुदा आन लत्ती तँ से नहि अछि। ओकरा गिरह-गिरहमे सिर निकलै छै, तँए विचारक प्रश्न एहेन सिरबेधू होइए, तैठाम धाँइ-दे किछु बाजि देब आ किछु छोड़ि देब, तखन बुझनिहार बुझत की। बुझब तँ भेल जे ओइ शब्दक वस्तुक स्वरूप बुझि सकइ।”

श्यामलाल काका बजला- “हँ।”

बीचमे बैसल देवनाथ अकबका गेल। अकबकाइक कारण भेलै जे रघुवीर भाय की बजला आ श्यामलाल काका की जवाब देलखिन। ई बुझल रहितै जे ‘हँ’ आ ‘नइ’ कोनो प्रश्नक सभसँ पैघ जवाब होइए तखन

ने, से तँ बुझल नइ रहइ। मनमे ईहो उठइ जे जखन तीनू गोरे समकश छी माने समकक्ष, तखन तीनूक विचारकेँ ने समतूल करब नीक हएत। फेर अपने मनमे उठलै जे जखन रघुवीर भाय आ श्यामलाल कक्काक बीचक प्रश्न-उत्तर चलि रहल अछि तखन बीचमे टोक-टाक करब, अनका जे होउ, मुदा अपन मन कहैए जे ई केतौसँ उचित नहि हएत। तँए, चुप्पे रहब सभसँ नीक। नीको केना ने, अनके गाइयक दूध मंगनीए भेटत।

रघुवीर भाय बजला-

“काका, जखन प्रश्नक विराट रूप अछि, तखन बाट-घाटक चर्चा कऽ दियौ, बाँकी सरोवर-झील, पोखैर धार-धुर टपला पछाइत कहबै।”

रघुवीर भाइक विचार सुनि श्यामलाल कक्काक मन बिहुसलैन। बिहुसैक कारण भेलैन जे कम-सँ-कम एको गोरे तँ विचारक संगी भेट रहल अछि। श्यामलाल काका बजला-

“जहिना चैतन्य स्वरूप जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ महामानव धरि अछि, जे प्रवाहित अछि, तहिना अपन मनसँ लऽ कऽ दुनियाँक मनक बीच सेहो अछि। तँए, सीमानक झगड़ा हेबे करत किने।”

❑

शब्द संख्या : 1232, तिथि : 13 सितम्बर 2022

जिनगी भार बनि गेल

नोकरीसँ निवृत्त भेला पछाइत हेमन्त कुमार गामेमे रहैक विचार मनमे रोपि लेलैन। किछु छी तँ गाम-समाज गामक समाज छी। केतबो आफद-आसमानी, बाढ़ि-रौदी किए ने भेल मुदा गामक समाज अखनो ओहने अछि जेहेन हजार बरख पूर्व छल। एकर माने ई नइ बुझब जे गाममे रोडो-सड़क ओहिना अछि आ पोखरियो-इनार ओहिना अछि जहिना हजार बरख पूर्व छल। एकर माने ई जे अखनो गामक किसान खेतीसँ जुड़ल छैथ, गाए-महींस पोसबसँ जुड़ल छैथ। ओना, किछु नब बेवसार सेहो बढ़ल अछि आ किछु पुरान बेवसार सेहो समाप्त भेबे कएल अछि। समयानुसार जीवन चलैए। जँ से नहि चलत तँ ओ नष्ट भऽ जाएत। जेना बैलगाड़ी, हाथी, घोड़ाक सवारी नष्ट भऽ गेल आ नब-नब इंजीन-चालित सवारी आबि गेल अछि।

गाममे रहैक विचार हेमन्त कुमारकेँ ई छेलैन जे सेवा निवृत्त होइसँ सात दिन पहिने धरि गामकेँ बिसरल छला। जहियासँ नोकरी शुरू केलैन तहियेटा सँ किए कहब जे तहूसँ पहिनेसँ, मोटा-मोटी जन्मेसँ बुझू, किएक तँ पिता सरकारी नोकरी करै छेलैन, परिवार संगे रखै छला, कहियो काल माने सालमे मास दिनक छुट्टी भरि, गाममे बितबै छला। वएह एक मासक छुट्टीक समयक गाम हेमन्त कुमारक मनकेँ पकैड़ नेने छेलैन। पकैड़ ई नेने छलैन जे शहर-बाजारक एहेन जीवन अछि। जे एक मकानमे अनेको राज्यक लोको रहै छैथ, जिनकर जीवन शैली सेहो भिन्न

छैन। तैसंग शहर-बाजारमे काजक व्यस्तता सेहो बेसी रहिते अछि, जइसँ दोसरसँ सम्बन्ध बनैमे कठिन भइये जाइए। गामक जीवन अखनो ओहन अछि जेकर सम्बन्ध-सूत्र अल्पांशे किए ने मुदा अखनो जीवित अछि जे जाति, पाँजि आ सम्प्रदायसँ ऊपर उठल अछि। माने ई जे जेकरा समाजमे निम्न बुझै छिऐ, तहू परिवारक वृद्धजनकेँ समाजक आनो जातिक बच्चा-जुआन 'बाबा', 'काका', 'भैया' कहै छैन आ ओही नजैरसँ आदर सेहो करैत आबि रहल छैन। ऐठाम एकरा एक सामाजिक धाराक प्रवाह कहि सकै छिऐ। मुदा एक जातिकेँ दोसर जातिक बीचक किरदानी की कहब जे जाति-जातिक भीतर कटुता सेहो एते दूरी बनौने अछि जे सदिकाल एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखैए। खाएर जे अछि, तइसँ हेमन्त कुमारकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अपन सेवा-निवृत्तिक पछातिक शेष जीवनसँ।

सूर्यास्तक समय। ने सूर्य पूर्णरूपेण डुमल छल आ ने दिनक प्रकाश जकाँ प्रकाशित छल। हेमन्त कुमारकेँ ऑफिसमे सूचना भेट गेल छेलैन जे ऐगला आठम दिन अहाँक लेल ई कार्यालय नहि रहत। सातम दिन सेवा-निवृत्तिक सूचना भेट जाएत।

जहिना सामान्यो लोक बुझैए जे सभ दिन अहिना रहब। माने मृत्यु नहि हएत, तहिना अखन तक हेमन्त कुमार सेहो बुझै छला। तँए राम नामक लूट अछि, जेते लूटि लेब तेते अपने सुख हएत। अखन तक हेमन्त कुमारकेँ गाम कहाँ मोन छेलैन, जँ से रहितैन तँ दिल्लीमे फ्लैट किए किनतैथ। पटनेमे मकान कीनबाक कोन खगता छेलैन। सरकारी क्वाटरमे सभ दिन रहला तखन मकानक कोन खगता छेलैन। गाममे अखनो बाबाक बनेलहा ईंटा-खपड़ाक घर छैन।

दिन भरिक सूर्यक किरण पेब जहिना फूल चकचकाइत रहैए आ सूर्यास्त होइते जेना मलपन पसरए लगै छै तहिना हेमन्त कुमारकेँ पाँच बजे अपन कार्यालयसँ निकलला पछाइत, भेलैन। मुदा, हाइ स्तरक

अफसर जहिना अपन स्तरक मेनटेन करै छैथ तहिना हेमन्त कुमार सेहो केलैन। ओना, ऑफिससँ निकलला पछाइत, माने अपन कार्यालयसँ निकलला पछाइत, शेष जे दूटा स्टाफ कार्यालयमे छैन, ओ दुनू बुझि गेल छला जे सातम दिन साहैब सेवा निवृत्त भऽ चलि जेता। ऐगला अफसर केहेन अबै छैथ से देखा चाही। तँए कार्यालयसँ अप्पन जे कोनो सम्बन्धित काज अछि ओ सभ करा लेब, भविष्यक लेल नीक रहत।

कार्यालयसँ अपन सेवा-निवृत्तिक सूचना-पत्र हाथमे नेने हेमन्त कुमार अपन डेरा पहुँच ड्राइंग रूपक टेबुलपर रखलैन। कपड़ा खोलि, हाथ-पएर, मुँह-कान धोइकऽ बैसकमे बैसबे केलाह कि पत्नी- रश्मि जलपानक प्लेट आगूमे रखि, पुन: किचेन दिस बढ़ि गेली। अपूछ-वस्तुक किचेन छेलैन्हे। भरि मन हेमन्त कुमार जलपान करि, चाह पीबए लगला। रश्मि सेहो चाहक कप नेने आगूमे बैस पीबए लगली। तही बीच हेमन्त कुमारकेँ सेवा-निवृत्तिक चिट्ठीपर नजैर गेलैन। ओना, अपनो अपन आयुक हिसाबसँ बुझिये रहल छला जे एते दिन नोकरी केलौं। मुदा से बिसैर गेल छला जे आइ पुन: चिट्ठी हाथमे एला पछाइत मोन पड़लैन। मोन पड़िते चाहक चिस्कीमे गतिरोध आबए लगलैन। माने जेना चाह पीबै छला, तइमे खरोंच उत्पन्न भेलैन। बजला-

“सेवा निवृत्तिक चिट्ठी भेट गेल। काल्हिसँ सेवा-मुक्त भऽ जाएब.!”

बोल-भरोस दैत रश्मि बजली-

“अहींटा सेवा-निवृत्त हएब आकि सभ होइए।”

ओना, हेमन्त कुमार अपन जीवनक चढ़ा-उतरी देखि रहल छला मुदा तेकरा छिपबैत बजला-

“हँ, से तँ सभ होइते अछि। मुदा एते तँ मनमे खुशी अछिए जे बत्तीस सालक नोकरीक जीवन बेदाग रहल।”

रश्मिक मनमे किए अबितैन जे जीवन बदलने सभ किछु बदलैए

आ दोसर जीवन पद्धति शुरू होइए।

चाह पीलाक पछाइत चिट्ठी पढ़ि हेमन्त कुमार पत्नीकेँ कहलैन-

“अखन अहाँ अपन काज देखू, मन किछु भरियाएल बुझि पड़ैए, तँए थोड़ेकाल आराम करू।”

एक तँ ओहुना पढ़ल-लिखल गुनशील होइते छैथ तहूमे ऊपर स्तरक जे महिला छैथ ओ तँ आरो बेसी होइते छैथ। जहिना हेमन्त कुमार बजला तहिना रश्मि ड्राइंग रूमसँ बहरा गेली। सोफापर ओङैठ, आँखि मुइन हेमन्त कुमार अपन जीवन गुनए लगला। जीवनक ओइ मोड़पर आइ आबि गेल छी, जैठामसँ एक जीवन बदैल दोसर जीवनक सिमानमे पएर राखत। अखन तकक अपन जीवन यएह ने रहल जे पिताजीकेँ नीक नोकरी छेलैन, भरपुर कमाइ छेलैन, परिवारक संग चारू भाँइक भरण-पोषणक आ नीक शिक्षा-दीक्षा सेहो भेटल, जइसँ नीक-नीक नोकरी चारू भाँइकेँ अछि। मुदा चारू भाँइक बीच अपन जीवन रेखा की अछि, तही बीच ने आगूक जीवन निर्धारित करब। अपन तँ यएह ने अछि जे माता-पिता मरि गेला। बीचमे अपने दुनू परानी छी। माने पति-पत्नी, तैबीच दूटा बेटी अछि। ओ दुनू डॉक्टरी शिक्षा पौनहि अछि। दुनू अप्पन-अप्पन सासुर बास करैए।

रातिक नअ बाजि गेल। तेसर साँझक सीमा सेहो टपि गेल। मुदा आँखि बन्न केने कुरसीपर ओङठल हेमन्त कुमार काल्हुक जीवन ले निश्चयात्मक विचार नहि कऽ सकल छला। निश्चयात्मक विचार कइयो केना सकितैथ। किएक तँ दू जीवनक बीच विचार फँसल छेलैन। एक जीवन ओ छेलैन जे सरकारक हाई स्तरक अछि आ दोसर सामाजिक जीवन छेलैन। बेवहार रूपमे सरकारी छेलैन आ विचार रूपमे सामाजिक छेलैन, जइ बीच अपन शेष जीवन बिताएब छैन...।

तइ बिच्चेमे रश्मि ड्राइंग रूममे आबि कहलकैन- “अहींटा सेवा निवृत्त भेलौं हेन आकि सभ होइए, तइले अनेरे किए एते मथहानि केने

छी।”

पत्नीक विचार सुनि हेमन्त कुमार बजला- “यएह नइ तय कऽ पाबि रहल छी जे आगूक जिनगी केतए आ केना बिताएब?”

अपन पिताक सेवा निवृत्तिक जीवनकेँ अख्यिाइस रश्मि बजली-

“ऐठाम अपन की अछि जे रहब। अपन तँ सभ किछु गाममे अछि, तँए नीक हएत जे गामे चली।”

पत्नीक विचार हेमन्त कुमारक हृदयमे नीक गड़ान गड़लैन मुदा अखन तक जे सुविधा[9] छेलैन, ओ गाममे नहि देखि पेब रहल छला। मुदा एते तँ मन मानियेँ रहल छेलैन जे पुस्त-दर-पुस्त लोक गामक धरतीपर बितबैत आबि रहला अछि। मनक जेना सभ विचार तर पड़ि गेलैन, आ एकाएक मुहसँ बहरा गेलैन-

“काल्हि गाम चलि जाएब।”

एक तँ सेवा-निवृत्तिक पछातिक जे लेन-देन छेलैन सेहो आ नोकरीक बीच जे बँचल छेलैन, जे बैंकमे छेलैन, सेहो सभटा मिलाकऽ जखन हेमन्त कुमार देखला तँ मन कहि देलकैन शेष जीवने केतेटा अछि जे कोनो तरहक असोकर्ज हएत। कोनो तरहक अभाव नहियेँ हएत, तहूमे पेंशन सेहो मासे-मास भेटबे करत। किए मनमे अबितैन जे जहिना जन्मक पछाइत बच्चाक देख-रेख जँ माए-बाप नहि करैथ तँ ओ बच्चा धरतीपर नहि टिक (जीब) पौत, तहिना वृद्धावस्था सेहो होइते अछि। एक दिस शरीरक अंग-प्रत्यंग शिथिल होइए दोसर दिस बर-बेमारीक आक्रमण सेहो होइते अछि, तइले दोसरक जरूरत पड़िते अछि। सघन परिवार जँ रहल तँ बेटा-पुतोहु, पोता-पोती सेवा करैए आ जँ से नहि रहल तँ नोकर-चाकरक बलेँ चलैए...।

---

[9] **सरकारी सुविधा**

जीवनक सघन वनमे हेमन्त कुमारक मन ओते चक्कर नहि लगा सकलैन जेते चक्कर लगबैक जरूरत छेलैन। हेमन्त कुमार बजला-

"काल्हिक लेल काल्हि सोचि लेब। चलू पहिने भोजन करब।"

रश्मि बजली- "औझुके सोचल-विचारल सँ ने काल्हि चलत।"

हेमन्त कुमार बजला- "काल्हि गाम चलि जाएब। गामक लोक चाहे किछु होथु मुदा पुस्तैनी समाज तँ छियाहे।"

गाम आबि, छअ मासक बीच हेमन्त कुमार अपन रहैक ओहन सभ बेवस्था, माने सुविधापूर्ण जीवन चलैले, कऽ लेलैन। जइसँ मन मानि गेलैन जे शान्तिपूर्ण ढंगसँ शेष जीवन बिता लेब।

आइ तेसर दिन, माने अखन तक हेमन्त कुमार घर-आँगन, दुआर-दरबज्जा बनबैक पाछू लगल छला तँए गाम दिस कोनो धियाने ने छेलैन, दुनू परानी दरबज्जाक ओसारपर बैसल गाम दिस देखि रहल छला। रश्मि बजली-

"अखन तकक बीतल जीवन की रहल आ अबैबला भविष्यक जीवन केहेन हएत?"

निर्वलक बल जहिना आत्माराम होइए तहिना हेमन्त कुमार आत्मबलक संग बजला-

"जिनगी तँ भार बनियेँ रहल अछि, मुदा आँखि तँ तकै छी।"

❑

शब्द संख्या : 1312, तिथि : 16 सितम्बर 2022

कथा लेखन क्रम

280. पाइक मोल- शब्द संख्या : 2412, तिथि : 22 दिसम्बर 2013

281. चोरूक्का झगड़ा- शब्द संख्या : 538, तिथि : 24 दिसम्बर 2013

282. अपसोच- शब्द संख्या : 548, तिथि : 26 दिसम्बर 2013

283. पतझाड़- शब्द संख्या : 2587, तिथि : 31 दिसम्बर 2013

284. झीसीक मजा- शब्द संख्या : 453, तिथि : 1 जनवरी 2014

285. मति-गति- शब्द संख्या : 1807, तिथि : 07 जनवरी 2014

286. रिजल्ट- शब्द संख्या : 2343, तिथि : 16 जनवरी 2014

287. अपन सन मुँह- शब्द संख्या : 5696, तिथि : 25 जनवरी 2014

288. सुमति- शब्द संख्या : 3072, तिथि : 30 जनवरी 2014

289. फेर पुछबैन- शब्द संख्या : 346, तिथि : 31 जनवरी 2014

290. माघक घूर- शब्द संख्या : 1683, तिथि : 06 फरवरी 2014

291. खर्च- शब्द संख्या : 330, तिथि : 07 फरवरी 2014

292. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या : 342, तिथि : 10 फरवरी 2014

293. पेटगनाह- शब्द संख्या : 593, तिथि : 14 फरवरी 2014

294. बड़की माता- शब्द संख्या : 1224, तिथि : 18 फरवरी 2014

295. धरती-अकास- शब्द संख्या : 184 , तिथि : 19 फरवरी 2014

296. बकठाँइ- शब्द संख्या : 883, तिथि : 24 फरवरी 2014

297. चैन-बेचैन- शब्द संख्या : 936, तिथि : 09 मार्च 2014

298. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या : 645 , तिथि : 11 मार्च 2014

299. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या : 287, तिथि : 12 मार्च 2014

300. नीक बोल- शब्द संख्या : 565, तिथि : 13 मार्च 2014

301. सुआद- शब्द संख्या : 624, तिथि : 14 मार्च 2014

302. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या : 690, तिथि : 19 मार्च 2014

303. भोँटक गहमी- शब्द संख्या : 508, तिथि : 24 मार्च 2014

304. भँसैत नाह- शब्द संख्या : 597, तिथि : 26 मार्च 2014

305. पान पराग- शब्द संख्या : 1692, तिथि : 29 मार्च 2014

306. सिरमा- शब्द संख्या : 760, तिथि : 31 मार्च 2014

307. नौमीक हकार- शब्द संख्या : 1119, तिथि : 03 अप्रैल 2014

308. फोंक मकड़- शब्द संख्या : 1744, तिथि : 10 अप्रैल 2014

309. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1252, तिथि : 14 अप्रैल 2014

310. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या : 326, तिथि : 16 अप्रैल 2014

311. खोंटकर्मा- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 19 अप्रैल 2014

312. किछु ने- शब्द संख्या : 503, तिथि : 22 अप्रैल 2014

313. झकास- शब्द संख्या : 1589, तिथि : 26 अप्रैल 2014

314. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या : 2919, तिथि : 01 मई 2014

315. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या : 611, तिथि : 04 मई 2014

316. अर्जुन रोग- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 7 मई 2014

317. गरदैन कट्टा बेटा- शब्द संख्या : 575, तिथि : 10 मई 2014

318. नैहराक धाड़- शब्द संख्या : 885, तिथि : 14 मई 2014

319. अवाक- शब्द संख्या : 1041, तिथि : 17 मई 2014

320. पोखरिक सैरात- शब्द संख्या : 923, तिथि : 20 मई 2014

321. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या : 409, तिथि : 22 मई 2014

322. धरम काँट- शब्द संख्या : 395, तिथि : 23 मई 2014

323. पल भरि- शब्द संख्या : 1116, तिथि : 24 मई 2014

324. किरदानी- शब्द संख्या : 5309, तिथि : 14 जुन 2014

325. सगहा- शब्द संख्या : 2860, तिथि : 22 जुन 2014

326. अकाल- शब्द संख्या : 1238, तिथि : 24 जुन 2014

327. उझट बात- शब्द संख्या : 1152, तिथि : 26 जुन 2014

328. कर्जखौक- शब्द संख्या : 1175, तिथि : 2 जुलाई 2014

329. उनटन- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 6 जुलाई 2014

330. रेहना चाची- शब्द संख्या : 1307, तिथि : 9 जुलाई 2014

331. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 11 जुलाई 2014

332. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या : 1229, तिथि : 14 जुलाई 2014

333. हारि- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 16 जुलाई 2014

334. सोनाक सुइत- शब्द संख्या : 1135, तिथि : 17 जुलाई 2014

335. मरूभूमि- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 20 जुलाई 2014

336. असगरे- शब्द संख्या : 1557, तिथि : 24 जुलाई 2014

337. पुरनी नानी- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 27 जुलाई 2014

338. कटा-कटी- शब्द संख्या : 1140, तिथि : 30 जुलाई 2014

339. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1206, तिथि : 3 अगस्त 2014

340. गलती अपने भेल- शब्द संख्या :3386, तिथि : 06 अगस्त 2014

341. चोरक चोरबती- शब्द संख्या : 884, तिथि : 6 अगस्त 2014

342. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 10 अगस्त 2014

343. सजल स्मृति- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 14 अगस्त 2014

344. सनेस- शब्द संख्या : 2654, तिथि : 16 अगस्त 2014

345. सए कच्छे- शब्द संख्या : 488, तिथि : 19 अगस्त 2014

346. एक मुठी घास- शब्द संख्या : 411, तिथि : 21 अगस्त 2014

347. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या : 318, तिथि : 24 अगस्त 2014

348. पुरस्कार- शब्द संख्या : 2414, तिथि : 24 अगस्त 2014

349. गावीस मोइस- शब्द संख्या : 687, तिथि : 29 अगस्त 2014

350. मनकमना- शब्द संख्या : 6110, तिथि : 19 सितम्बर 2014

351. घरवास- शब्द संख्या : 4879, तिथि : 26 सितम्बर 2014

352. समधीन- शब्द संख्या : 6098, तिथि : 04 अक्टूबर 2014

353. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या : 1616, तिथि : 7 अक्टूबर 2014

354. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या : 2226, तिथि : 10 अक्टूबर 2014

355. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 14 अक्टूबर 2014

356. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या : 2596, तिथि : 20 अक्टूबर 2014

357. जितिया पाबैन- शब्द संख्या : 3706, तिथि : 24 अक्टूबर 2014

358. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या : 3690, तिथि : 30 अक्टूबर 2014

359. भैयारी हक- शब्द संख्या : 3131, तिथि : 4 नवम्बर 2014

360. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या : 3335, तिथि : 13 नवम्बर 2014

361. खुदियाएल- शब्द संख्या : 2887, तिथि : 17 नवम्बर 2014

362. खटहा आम- शब्द संख्या : 3515, तिथि : 22 नवम्बर 2014

363. ढकरपेँच- शब्द संख्या : 3759, तिथि : 30 नवम्बर 2014

364. असहाज- शब्द संख्या : 2865, तिथि : 04 दिसम्बर 2014

365. समरथाइक भूत- शब्द संख्या : 3853, तिथि : 07 दिसम्बर 2014

366. विदाइ- शब्द संख्या : 5131, तिथि : 17 दिसम्बर 2014

367. खलओदार- शब्द संख्या : 735, तिथि : 19 दिसम्बर 2014

368. मनुखदेवा- शब्द संख्या : 1027, तिथि : 22 दिसम्बर 2014

369. उमेद- शब्द संख्या : 3643, तिथि : 31 दिसम्बर 2014

370. गलगर भैंस- शब्द संख्या : 3392, तिथि : 4 जनवरी 2015

371. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या : 3328, तिथि : 9 जनवरी 2015

372. सुरता- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 15 जनवरी 2015

373. असुध मन- शब्द संख्या : 2353, तिथि : 19 जनवरी 2015

374. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या : 1410, तिथि : 21 जनवरी 2015

375. ठोररंगू- शब्द संख्या : 1531, तिथि : 23 जनवरी 2015

376. लगबे ने कएल- शब्द संख्या : 1449, तिथि : 25 जनवरी 2015

377. उकड़ू समय- शब्द संख्या : 1467, तिथि : 27 जनवरी 2015

378. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या : 1615, तिथि : 29 जनवरी 2015

379. चौरचनक दही- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 31 जनवरी 2015

380. अपन मन अपन धन- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 3 फरवरी 2015

381. टुटली मरैया- शब्द संख्या : 1951, तिथि : 7 फरवरी 2015

382. हकार- तिथि : 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या : 1911

383. दहेजुआ गाए- शब्द संख्या : 1908, तिथि : 15 फरवरी 2015

384. मेटाइत जिनगी- शब्द संख्या : 2129, तिथि : 20 फरवरी 2015

385. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!- शब्द संख्या:1996, तिथि : 23 फरवरी 2015

386. लेहाज- शब्द संख्या : 1906, तिथि : 26 फरवरी 2015

387. विचार हेरा गेल- शब्द संख्या : 1917, तिथि : 1 मार्च 2015

388. ओ दिन- शब्द संख्या : 1782, तिथि : 4 मार्च 2015

389. उरीन- शब्द संख्या : 3235, तिथि : 8 मार्च 2015

390. नहरकन्हा- शब्द संख्या : 1209, तिथि : 11 मार्च 2015

391. बटखौक- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 14 मार्च 2015

392. पसेनाक धरम- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 16 मार्च 2015

393. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या : 1103, तिथि : 18 मार्च 2015

394. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1243, तिथि : 20 मार्च 2015

395. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या : 1234, तिथि : 23 मार्च 2015

396. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या : 1207, तिथि : 26 मार्च 2015

397. नोकरिहारा- शब्द संख्या : 1146, तिथि : 26 मार्च 2015

398. घसवाहि- शब्द संख्या : 1213, तिथि : 28 मार्च 2015

399. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या : 1319, तिथि : 1 अप्रैल 2015

400. छूआ- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 6 अप्रैल 2015

401. दोसराइत- शब्द संख्या : 1270, तिथि : 9 अप्रैल 2015

402. लछनमान- शब्द संख्या : 1173, तिथि : 13 अप्रैल 2015

403. हमर कोन दोख- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 17 अप्रैल 2015

404. मौसी- शब्द संख्या : 1393, तिथि : 21 अप्रैल 2015

405. नटकिया गति- शब्द संख्या : 1313 24 अप्रैल 2015

406. खाए चाहैए- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 27 अप्रैल 2015

407. मधुमाछी- शब्द संख्या : 1892, तिथि : 07 मई 2015

408. दनगर घास- शब्द संख्या : 2775, तिथि : 13 मई 2015

409. सझिया खेती- शब्द संख्या : 3135, तिथि : 23 मई 2015

410. मुफतिया माल- शब्द संख्या : 3231, तिथि : 29 मई 2015

411. मथाहाथ- शब्द संख्या : 2923, तिथि : 02 जून 2015

412. पहपैट- शब्द संख्या : 1369, तिथि : 05 जून 2015

413. इजोरिया राति- शब्द संख्या : 1512, तिथि : 07 जून 2015

414. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 12 जून 2015

415. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या : 605, तिथि : 14 जून 2015

416. डकरा हाल- शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015

417. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015

418. गठूलाक गारि- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015

419. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015

420. गामक बान्ह- शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई 2015

421. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई 2015

422. सीरक गाछ- शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई 2015

423. हरदीक हरदा- शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई 2015

424. जाम- शब्द संख्या : 3355, तिथि : 29 जुलाई 2015

425. गण्डा- शब्द संख्या : 2304, तिथि : 5 अगस्त 2015

426. हाथी आ मूस- शब्द संख्या : 3016, तिथि : 11 अगस्त 2015

427. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या : 3625, तिथि : 17 अगस्त 2015

428. फलहार- शब्द संख्या : 2350, तिथि : 25 अगस्त 2015

429. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 31 अगस्त 2015

430. क्रियाशील- शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015

431. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015

432. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015

433. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टूबर 2015

434. गजपट खेती- शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टूबर 2015

435. समुद्री विद्या- शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टूबर 2015

436. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टूबर 2015

437. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या : 679, तिथि : 13 अक्टूबर 2015

438. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टूबर 2015

439. धोखा- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टूबर 2015

440. खसैत गाछ- शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टूबर 2015

441. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्बर 2015

442. प्रीगर शत्रु- शब्द संख्या : 1087, तिथि : 26 दिसम्बर 2015

443. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 31 दिसम्बर 2015

444. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या : 2616, तिथि : 4 जनवरी 2016

445. एक घोंट पानि- शब्द संख्या : 2516, तिथि : 10 जनवरी 2016

446. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द : 3371, तिथि : 16 जनवरी 2016

447. माइक वचन- शब्द संख्या : 2999, तिथि : 21 जनवरी 2016

448. पान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 26 जनवरी 2016

449. आजुक जिनगीक आइ परीक्षा- शब्द : 1676, तिथि : 01 फरवरी 2016

450. शुभचिन्तक- शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016

451. करिछौन लाली- शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016

452. मोहरा- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016

453. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016

454. जेना हाथी रही- शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016

455. कठफल- शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016

456. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016

457. झूठे- शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016

458. लाही- शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016

459. परतीहा खढ़- शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016

460. उजगी- शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016

461. हाथक जिनगी- शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016

462. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016

463. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016

464. अपने केलहा- शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016

465. बत्तु- शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016

466. कछमछी- शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016

467. गैत-वीध- शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016

468. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016

469. एक दिन- शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016

470. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016

471. गलफूलू- शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016

472. बिटगरहा- शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016

473. आब नइ आगि लगैए- शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016

474. कटौज- शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016

475. बाल बोध- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016

476. डभियाएल गाम- शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016

477. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016

478. मरियाएल मन- शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016

479. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016

480. कन्हा भँट्टा- शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016

481. जिगेसा- शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016

482. गुलेती दास- शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016

483. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016

484. दुरकाल- शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016

485. कलंक- शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016

486. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016

487. बगदल गाम- शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016

488. बत्तीसोअना- शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016

489. कचहरिया रोग- शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016

490. दिन घटि गेल- शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टूबर 2016

491. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टूबर 2016

492. गामक सुरता- शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टूबर 2016

493. खतियाएल घर- शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016

494. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016

495. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016

496. देव उठान- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016

497. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016

498. भोरक सपना- शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016

499. बालमण्डली- शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016

500. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016

501. माघक चाह- शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016

502. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016

503. माघक घूर- शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016

504. पाही पट्टी- शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016

505. बीरांगना- शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016

506. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017

507. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017

508. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017

509. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017

510. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017

511. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017

512. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017

513. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017

514. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017

515. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017

516. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017

517. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017

518. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017

519. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017

520. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017

521. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017

522. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017

523. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017

524. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017

525. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017

526. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017

527. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017

528. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017

529. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017

530. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017

531. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017

532. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017

533. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017

534. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाई 2017

535. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाई 2017

536. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाई 2017

537. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाई 2017

538. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाई 2017

539. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017

540. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017

541. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017

542. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017

543. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017

544. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017

545. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टूबर 2017

546. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टूबर 2017

547. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017

548. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 12 नवम्बर 2017

549. महिरम- शब्द संख्या : 1984, तिथि : 20 नवम्बर 2017

550. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या : 2726, तिथि : 29 नवम्बर 2017

551. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या : 2722, तिथि : 10 दिसम्बर 2017

552. दोहरी हाक- शब्द संख्या : 2700, तिथि : 21 दिसम्बर 2017

553. पाइक इज्जत- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 05 जनवरी 2018

554. सेहन्ता- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 11 जनवरी 2018

555. राक्षसक झड़- शब्द संख्या : 1649, तिथि : 15 जनवरी 2018

556. बेरपर- शब्द संख्या : 2585, तिथि : 19 जनवरी 2018

557. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या : 2649, तिथि : 23 जनवरी 2018

558. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018

559. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या : 3089, तिथि : 3 फरवरी 2018

560. अब-तब- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 7 फरवरी 2018

561. अगिलह- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 11 फरवरी 2018

562. कुकुरपन- शब्द संख्या : 2229, तिथि : 28 फरवरी 2018

563. हेराएल जिनगी- शब्द संख्या : 3107, तिथि : 5 मार्च 2018

564. आशापर पानि फेर गेल- शब्द संख्या : 2447, तिथि : 9 मार्च 2018

565. देखल दिन- शब्द संख्या : 2592, तिथि : 27 मार्च 2018

566. इज्जत उतैर गेल- शब्द संख्या : 1905, तिथि : 30 मार्च 2018

567. संकट- शब्द संख्या : 2595, तिथि : 4 अप्रैल 2018

568. एकतीस मार्च- शब्द संख्या : 2814, तिथि : 10 अप्रैल 2018

569. गेल माघ उनतीस दिन बाँकी- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 15 अप्रैल 2018

570. बापक चलैत- शब्द संख्या : 2606, तिथि : 20 अप्रैल 2018

571. बेटाक चलैत- शब्द संख्या : 2889, तिथि : 25 अप्रैल 2018

572. प्रवल इच्छा- शब्द संख्या : 2301, तिथि : 30 अप्रैल 2018

573. ठका गेलौं- शब्द संख्या : 2052, तिथि : 18 जून 2018

574. हारि-जीत- शब्द संख्या : 3190, तिथि : 24 जून 2018

575. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या : 1095, तिथि : 27 जून 2018

576. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या : 1608, तिथि : 01 जुलाई 2018

577. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 5 जुलाई 2018

578. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या : 1584, तिथि : 9 जुलाई 2018

579. केकरो कियो ने- शब्द संख्या : 718, तिथि : 11 जुलाई 2018

580. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या : 1420, तिथि : 13 जुलाई 2018

581. उदय-प्रलय- शब्द संख्या : 1574, तिथि : 15 जुलाई 2018

582. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या : 1458, तिथि : 19 जुलाई 2018

583. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या : 1471, तिथि : 21 जुलाई 2018

584. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या : 2576, तिथि : 31 जुलाई 2018

585. करतब- शब्द संख्या : 2132, तिथि : 04 अगस्त 2018

586. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या : 924, तिथि : 19 सितम्बर 2018

587. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या : 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

588. चटवाह : शब्द संख्या- 2134, तिथि : 4 अक्टूबर 2018

589. भगैतिया- शब्द संख्या : 2177, तिथि : 8 अक्टूबर 2018

590. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या : 2196, तिथि : 12 अक्टूबर 2018

591. यादास्त- शब्द संख्या : 1870, तिथि : 15 अक्टूबर 2018

592. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 19 अक्टूबर 2018

593. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या : 1922, तिथि : 23 अक्टूबर 2018

594. दिवालीक दीप- शब्द संख्या : 2422, तिथि : 29 अक्टूबर 2018

595. हारि केना मानब- शब्द संख्या : 2054, तिथि : 02 नवम्बर 2018

596. अप्पन गाम- शब्द संख्या : 1940, तिथि : 06 नवम्बर 2018

597. परिछन- शब्द संख्या : 2661, तिथि : 11 नवम्बर 2018

598. झूठ सपना- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 15 नवम्बर 2018

599. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या : 2530, तिथि : 19 नवम्बर 2018

600. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या : 2381, तिथि : 24 नवम्बर 2018

601. पुस्तकालय- शब्द संख्या : 2333, तिथि : 29 नवम्बर 2018

602. विचारभेद- शब्द संख्या : 2553, तिथि : 04 दिसम्बर 2018

603. एकरवा बानर- शब्द संख्या : 2793, तिथि : 09 दिसम्बर 2018

604. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या : 2759, तिथि : 14 दिसम्बर 2018

605. रंगमे भंग- शब्द संख्या : 2237, तिथि : 20 दिसम्बर 2018

606. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या : 2590, तिथि : 17 जनवरी 2019

607. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

608. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या : 3473, तिथि : 03 फरवरी 2019

609. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या : 2225, तिथि : 07 फरवरी 2019

610. उखमज- शब्द संख्या : 3964, तिथि : 16 फरवरी 2019

611. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या : 2286, तिथि : 19 फरवरी 2019

612. अगुताइ भेल- शब्द संख्या : 1054, तिथि : 22 फरवरी 2019

613. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या : 965, तिथि : 24 फरवरी 2019

614. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या : 995, तिथि : 25 फरवरी 2019

615. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या : 1051, तिथि : 28 फरवरी 2019

616. चितवनक शिकार- शब्द संख्या : 1071, तिथि : 02 मार्च 2019

617. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या : 1086, तिथि : 04 मार्च 2019

618. धुआ साड़ी- शब्द संख्या : 1132, तिथि : 06 मार्च 2019

619. राजरोग- शब्द संख्या : 1274, तिथि : 10 मार्च 2019

620. संकल्प- शब्द संख्या : 1520, तिथि : 12 मार्च 2019

621. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 1349, तिथि : 15 मार्च 2019

622. काजक मोल- शब्द संख्या : 1090, तिथि : 16 मार्च 2019

623. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या : 1010, तिथि : 19 मार्च 2019

624. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या : 1091, तिथि : 22 मार्च 2019

625. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या : 987, तिथि : 25 मार्च 2019

626. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या : 966, तिथि : 27 मार्च 2019

627. लजगर लोक- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 29 मार्च 2019

628. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या : 1218, तिथि : 02 अप्रैल 2019

629. पगलपन- शब्द संख्या : 1113, तिथि : 04 अप्रैल 2019

630. छलाननक सराध- शब्द संख्या : 996, तिथि : 06 अप्रैल 2019

631. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या : 1402, तिथि : 08 अप्रैल 2019

632. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या : 1463, तिथि : 16 अप्रैल 2019

633. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या : 1530, तिथि : 20 अप्रैल 2019

634. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 22 अप्रैल 2019

635. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या : 1198, तिथि : 25 अप्रैल 2019

636. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

637. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या : 998, तिथि : 29 अप्रैल 2019

638. सिकिया नेता- शब्द संख्या : 1023, तिथि : मजदूर दिवस, 2019

639. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या : 1475, तिथि : 04 मई 2019

640. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 06 मई 2019

641. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या : 1194, तिथि : 09 मई 2019

642. पुरुखक भर- शब्द संख्या : 1109, तिथि : 12 मई 2019

643. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1411, तिथि : 15 मई 2019

644. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या : 1071, तिथि : 17 मई 2019

645. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या : 1004, तिथि : 19 मई 2019

646. कुभेला- शब्द संख्या : 992, तिथि : 21 मई 2019

647. देखौंस- शब्द संख्या : 945, तिथि : 23 मई 2019

648. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या : 1326, तिथि : 25 मई 2019

649. काजक मेहपन- शब्द संख्या : 947, तिथि : 27 मई 2019

650. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या : 941, तिथि : 29 मई 2019

651. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या : 1553, तिथि : 01 जून 2019

652. काजक धुनि- शब्द संख्या : 1065, तिथि : 03 जून 2019

653. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या : 1618, तिथि : 06 जून 2019

654. अगराही- शब्द संख्या : 944, तिथि : 08 जून 2019

655. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि : 11 जून 2019

656. भौक- शब्द संख्या : 1403, तिथि : 14 जून 2019

657. मनतरक पावर- शब्द संख्या : 1598, तिथि : 17 जून 2019

658. हाल-चाल- शब्द संख्या : 1519, तिथि : 20 जून 2019

659. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या : 1525, तिथि : 23 जून 2019

660. के मानत?- शब्द संख्या : 1721, तिथि : 29 जून 2019

661. दियादीक फेड़- शब्द संख्या : 1412, तिथि : 03 जुलाई 2019

662. वाह रे आदत- शब्द संख्या : 1455, तिथि : 06 जुलाई 2019

663. कटबी सुइद- शब्द संख्या : 1435, तिथि : 09 जुलाई 2019

664. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या : 1948, तिथि : 13 जुलाई 2019

665. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या : 1539, तिथि : 16 जुलाई 2019

666. कलेश- शब्द संख्या : 1509, तिथि : 20 जुलाई 2019

667. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या : 2338, तिथि : 24 जुलाई 2019

668. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या : 2046, तिथि : 28 जुलाई 2019

669. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या : 1856, तिथि : 31 जुलाई 2019

670. भेँट-घाँट- शब्द संख्या : 1884, तिथि : 03 अगस्त 2019

671. कोसा- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 07 अगस्त 2019

672. दहेजक गाए- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 15 अगस्त 2019

673. चलती- शब्द संख्या : 1770, तिथि : 18 अगस्त 2019

674. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या : 1901, तिथि : 21 अगस्त 2019

675. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या : 2198, तिथि : 24 अगस्त 2019

676. अपन करखन्ना- शब्द संख्या : 1704, तिथि : 28 अगस्त 2019

677. लड़कपन- शब्द संख्या : 2150, तिथि : 03 अक्टूबर 2019

678. कुद्दष्टि- शब्द संख्या : 2435, तिथि : 08 अक्टूबर 2019

679. हकार- शब्द संख्या : 2012, तिथि : 16 अक्टूबर 2019

680. दलिखिच्चड़िमे घी- शब्द संख्या : 2286, तिथि : 25 अक्टूबर 2019

681. दोहरी दहार- शब्द संख्या : 2154, तिथि : 02 नवम्बर 2019

682. पसेनाक मोल- शब्द संख्या : 1748, तिथि : 06 नवम्बर 2019

683. बुढ़ापा- शब्द संख्या : 2122, तिथि : 10 नवम्बर 2019

684. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या : 2092, तिथि : 14 नवम्बर 2019

685. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या : 2416, तिथि : 18 नवम्बर 2019

686. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 22 नवम्बर 2019

687. काजक रोप- शब्द संख्या : 2679, तिथि : 21 दिसम्बर 2019

688. खटसमाद- शब्द संख्या : 2909, तिथि : 27 दिसम्बर 2019

689. जीबठपन- शब्द संख्या : 2577, तिथि : 02 जनवरी 2020

690. गोटी लाल- शब्द संख्या : 2364, तिथि : 06 जनवरी 2020

691. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या : 2361, तिथि : 11 जनवरी 2020

692. दहेज- शब्द संख्या : 2431, तिथि : 15 जनवरी 2020

693. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या : 2630, तिथि : 21 जनवरी 2020

694. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 2660, तिथि : 31 जनवरी 2020

695. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या : 2410, तिथि : 05 फरवरी 2020

696. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या : 2789, तिथि : 10 फरवरी 2020

697. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 16 फरवरी 2020

698. चुटका सुतरल- शब्द संख्या : 2445, तिथि : 21 फरवरी 2020

699. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या : 2255, तिथि : 25 फरवरी 2020

700. अग्नि परीछा- शब्द संख्या : 3097, तिथि : 01 मार्च 2020

701. आसीरवचन- शब्द संख्या : 2564, तिथि : 06 मार्च 2020

702. दहिबरी- शब्द संख्या : 2560, तिथि : 12 मार्च 2020

703. सघन बन- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 17 मार्च 2020

704. हुसैत लोक- शब्द संख्या : 2602, तिथि : 23 मार्च 2020

705. हुसि गेलौं- शब्द संख्या : 2574, तिथि : 28 मार्च 2020

706. झूठक झालि- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 01 अप्रैल 2020

707. दुष्टपन- शब्द संख्या : 2317, तिथि : 06 अप्रैल 2020

708. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 15 अप्रैल 2020

709. परिपक्क निरलज- शब्द संख्या : 2232, तिथि : 20 अप्रैल 2020

710. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या : 2278, तिथि : 24 अप्रैल 2020

711. लजाउ काज- शब्द संख्या : 2394, तिथि : 02 मई 2020

712. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 01 अगस्त 2020

713. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या : 2757, तिथि : 06 अगस्त 2020

714. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या : 2711, तिथि : 11 अगस्त 2020

715. अपना जनैत- शब्द संख्या : 2881, तिथि : 16 अगस्त 2020

716. सुद्दढ़ जिनगी- शब्द संख्या : 3460, तिथि : 23 अगस्त 2020

717. मुराम जगह- शब्द संख्या : 3575, तिथि : 31 अगस्त 2020

718. गामक सूरत बदैल गेल- शब्द संख्या : 3340, तिथि : 07 सितम्बर 2020

719. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या : 2808, तिथि : 13 सितम्बर 2020

720. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या : 2659, तिथि : 19 सितम्बर 2020

721. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या : 3132, तिथि : 26 सितम्बर 2020

722. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या : 3339, तिथि : 03 अक्टूबर 2020

723. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या : 3199, तिथि : 09 अक्टूबर 2020

724. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या : 2346, तिथि : 15 अक्टूबर 2020

725. जबुरिया कागज- शब्द संख्या : 3366, तिथि : 22 अक्टूबर 2020

726. बेटाक बिआह- शब्द संख्या : 3734, तिथि : 30 अक्टूबर 2020

727. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या : 3325, तिथि : 06 नवम्बर 2020

728. पोसलाक फल- शब्द संख्या : 3039, तिथि : 12 नवम्बर 2020

729. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या : 2933, तिथि : 18 नवम्बर 2020

730. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या : 3038, तिथि : 24 नवम्बर 2020

731. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द संख्या : 3025, तिथि : 30 नवम्बर 2020

732. नवका लोक- शब्द संख्या : 3215, तिथि : 06 दिसम्बर 2020

733. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या : 3366, तिथि : 12 दिसम्बर 2020

734. घरक खर्च- शब्द संख्या : 3731, तिथि : 19 दिसम्बर 2020

735. समाजक भागे- शब्द संख्या : 3338, तिथि : 25 दिसम्बर 2020

736. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या : 4091, तिथि : 02 जनवरी 2021

737. परिवारक विघटन- शब्द संख्या : 2143, तिथि : 07 जनवरी 2021

738. हारल विचार- शब्द संख्या : 3657, तिथि : 14 जनवरी 2021

739. परिवारे गजपटा गेल- शब्द संख्या : 1881, तिथि : 09 जुलाई 2021

740. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या : 1798, तिथि : 14 जुलाई 2021

741. की सत्त की फुइस? - शब्द संख्या : 1793, तिथि : 17 जुलाई 2021

742. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या : 1671, तिथि : 21 जुलाई 2021

743. देखल गाम- शब्द संख्या : 1737, तिथि : 25 जुलाई 2021

744. अपना ले- शब्द संख्या : 1903, तिथि : 03 अगस्त 2021

745. तीन धक्का- शब्द संख्या : 1759, तिथि : 06 अगस्त 2021

746. अजीब खेल- शब्द संख्या : 2362, तिथि : 20 अगस्त 2021

747. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या : 2798, तिथि : 25 अगस्त 2021

748. केकरो भरोस- शब्द संख्या : 2237, तिथि : 31 अगस्त 2021

749. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या : 1820, तिथि : 04 सितम्बर 2021

750. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या : 2587, तिथि : 14 नवम्बर 2021

751. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या : 2369, तिथि : 05 दिसम्बर 2021

752. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या : 2191, तिथि : 10 दिसम्बर 2021

753. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या : 2893, तिथि : 16 दिसम्बर 2021

754. घरैया मूस- शब्द संख्या : 2791, तिथि : 22 दिसम्बर 2021

755. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या : 2182, तिथि : 29 दिसम्बर 2021

756. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

757. संचरण- शब्द संख्या : 2477, तिथि : 08 जनवरी 2022

758. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या : 2278, तिथि : 14 जनवरी 2022

759. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या : 2299, तिथि : 21 फरवरी 2022

760. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या : 2859, तिथि : 02 मार्च 2022

761. श्रमहीन- शब्द संख्या : 3105, तिथि : 08 मार्च 2022

762. समुद्रलंघन- शब्द संख्या : 3274, तिथि : 21 मार्च 2022

763. परिवारक भार- शब्द संख्या : 2402, तिथि : 28 मार्च 2022

764. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या : 2347, तिथि : 02 अप्रैल 2022

765. चेहराक निखार- शब्द संख्या : 2496, तिथि : 06 अप्रैल 2022

766. भरि मन काज- शब्द संख्या : 2281, तिथि : 12 अप्रैल 2022

767. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या : 2302, तिथि : 21 अप्रैल 2022

768. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या : 2536, तिथि : 26 अप्रैल 2022

769. घरक बात- शब्द संख्या : 2686, तिथि : 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

770. अप्पन दलान- शब्द संख्या : 2480, तिथि : 06 मई 2022

771. कंजूसपन- शब्द संख्या : 2589, तिथि : 11 मई 2022

772. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या : 1478, तिथि : 15 मई 2022

773. अकारण- शब्द संख्या : 1918, तिथि : 18 मई 2022

774. अछोप- शब्द संख्या : 1590, तिथि : 21 मई 2022

775. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या : 1560, तिथि : 24 मई 2022

776. उनटन- शब्द संख्या : 1581, तिथि : 24 मई 2022

777. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या : 1511, तिथि : 30 मई 2022

778. बहवाँइर- शब्द संख्या : 1538, तिथि : 04 जून 2022

779. पाक मास्टर- शब्द संख्या : 1387, तिथि : 07 जून 2022

780. साइंस टीचर- शब्द संख्या : 1301, तिथि : 10 जून 2022

781. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या : 1367, तिथि : 13 जून 2022

782. निसगर पान- शब्द संख्या : 1346, तिथि : 15 जून 2022

783. विरोध- शब्द संख्या : 1452, तिथि : 19 जून 2022

784. जीवन दान- शब्द संख्या : 1405, तिथि : 26 जून 2022

785. बाग-बगिया- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 30 जून 2022

786. विश्वास पात्र- शब्द संख्या : 1374, तिथि : 02 जुलाई 2022

787. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या : 1335, तिथि : 05 जुलाई 2022

788. लत- शब्द संख्या : 1375, तिथि : 08 जुलाई 2022

789. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या : 1220, तिथि : 11 जुलाई 2022

790. कर्ज- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 13 जुलाई 2022

791. बहादुरी- शब्द संख्या : 1268, तिथि : 16 जुलाई 2022

792. हमरो खगता छै- शब्द संख्या : 1178, तिथि : 20 जुलाई 2022

793. सपना- शब्द संख्या : 1241, तिथि : 23 जुलाई 2022

794. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

795. उवाणि- शब्द संख्या : 1264, तिथि : 29 जुलाई 2022

796. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या : 1268, तिथि : 01 अगस्त 2022

797. अपन रचित रचना- शब्द संख्या : 1481, तिथि : 07 अगस्त 2022

798. थाहल संगी- शब्द संख्या : 1331, तिथि : 10 अगस्त 2022

799. आत्मबल- शब्द संख्या : 1267, तिथि : 13 अगस्त 2022

801. विश्वासहीन- शब्द संख्या : 1405, तिथि : 16 अगस्त 2022

802. बुलन्दी- शब्द संख्या : 1329, तिथि : 19 अगस्त 2022

803. अप्पन साती- शब्द संख्या : 1287, तिथि : 22 अगस्त 2022

805. खिच्चड़ि- शब्द संख्या : 1624, तिथि : 26 अगस्त 2022

806. भंगतराह कवि- शब्द संख्या : 1357, तिथि : 01 सितम्बर 2022

807. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या : 1315, तिथि : शिक्षक दिवस 2022

809. पुरुखढौह- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 08 सितम्बर 2022

810. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या : 1232, तिथि : 13 सितम्बर 2022

811. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या : 1312, तिथि : 16 सितम्बर 2022

❑❑❑



जगदीश प्रसाद मण्डल

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक जन्म : मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे, 5 जुलाई 1947 इस्वीमे भेलैन। शिक्षा : एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र), जीविकोपार्जन : कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती), रुचि : 2001 तक समाज सेवा, रूढ़ि एवम् सामन्ती व्यवहारक खिलाफ लड़ाइ, केस-मोकदमा, जहल यात्रा। 2001 इस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-क्षेत्रमे आगमन। नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि–साहित्यक मौलिक विधामे साएसँ ऊपर पोथीक लेखन-प्रकाशन। सम्मान/पुरस्कार 'विदेह सम्मान- 2011', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', 'वैदेह सम्मान- 2012', 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2014', 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', 'कौमुदी सम्मान- 2017', 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान-2018', 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021' तथा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार-2022'सँ सम्मानित।

रचना-संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुण्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतमाए, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. बीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखैर, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. भकमोड़, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाथ, 60. लजबिजी, 61. उकड़ समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डभियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर, 73. बीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बेटीक पैरुख, 76. क्रान्तियोग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. दोहरी हाक, 80. सुभिमानी जिनगी, 81. देखल दिन, 82. गपक पियाहुल लोक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलतोड़ भूमि, 86. चितवनक शिकार, 87. चौरस खेतक चौरस उपज, 88. समयसँ पहिने चेत किसान, 89. भौक, 90. गामक आशा टुटि गेल, 91. पसेनाक मोल, 92. कृषियोग, 93. हारल चेहरा जीतल रूप, 94. रहै जोकर परिवार, 95. कर्ताक रंग कर्मक संग, 96. गामक सूरत बदैल गेल, 97. अन्तिम परीक्षा, 98. घरक खर्च, 99. नीक ठकान ठकेलौं, 100. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 101. संचरण, 102. भरि मन काज, 103. आएल आशा चलि गेल, 104. जीवन दान तथा 105. अप्पन साती- लघु कथा संग्रह प्रकाशित।

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 250/-

ISBN: 978-93-93135-094

अप्पन साती (मैथिली कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन